



सुद्रक और प्रकाशक-  
लेखक श्री विष्णुदास,  
मालिक-"श्रीविठ्ठेश्वर" स्टीम-प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीविठ्ठेश्वर" सुद्रणदन्त्रालयाध्यक्षायीन है।



# भूमिका ।



पाठक महाशयो! जिस सर्वमान्य वेदचक्षु ज्योतिषशास्त्रके द्वारा मनुष्योंका भूत, भविष्य, वर्त्तमान शुभाशुभ फलज्ञान, जन्मपत्र द्वारा होता है, उसी जन्मपत्रके गणितके प्राचीन तथा अर्वाचीन अनेक ग्रन्थ प्रस्तुत हैं परन्तु विशेष परिश्रम व परिज्ञान विना उन ग्रन्थोंसे सर्व साधारण तथा विशेषकर बालकोंसे भलीभांति सुगमतापूर्वक गणित नहीं हो सकता, यहीं सोचकर मेरे परमपूज्यपाद पितार्जी श्री श्री ६ श्रीदैवज्ञवर्य, श्रीमहादेवजी महाराजने अनेक प्राचीन ग्रन्थोंका सारांश लेके थोड़े ही परिश्रमसे भलीभांति जन्मपत्रका गणित बनानेके योग्य हो जाय ऐसा यह “पञ्चमार्गप्रदीपिका” नामक छोटासा ग्रन्थ निर्माण कर अपने द्रव्यसे मुद्रित कराकर विना मूल्य विद्वज्जनोंकी सेवामें समर्पण किया था किंतु ईश्वरकी कृपासे थोड़े ही दिनोंमें इसका इतना आदर जनसमुदायमें हुआ कि कई यन्त्राधीन उपयोगी समझ छापनेके लिये आग्रह करने लगे परन्तु मेरे पूज्यपाद पितार्जीने श्रीमान् खेमराजजी सेठसे अधिक स्नेह होनेके कारण उन्हींको छापनेका स्वत्व दिया, जिसकी आजतक कई आवृत्तियां छप चुकी हैं सो पाठकोंको विदित ही है। इस ग्रंथकी भाषाटीका करने वास्तु मेरे कई मित्रोंका कितने ही दिनोंसे इस प्रकारका आग्रह था कि यदि ऐसे उपयोगी ग्रन्थकी पूर्ण रीतिसे भाषाटीका बनायी जाकर इसमें अन्धान्य आवश्यक विषयोंका समावेश भी किया जाय तो यह ग्रंथ बालकोंको विशेष उपयोगी होगा, एसी २ कई प्रकारकी उत्तम उत्तेजनाओंसे उत्तेजित हो आज मैं ( अल्पज्ञ ) इसीकी सरल हिन्दीभाषाटीका तथा उदाहरण तथा आवश्यक आवश्यक स्थानोंकी टिप्पणी, और भी जिन जो उपयोगी विशेष कोष्ठकोंकी इसमें आवश्यकता थी उनका भी समावेश करके आप लोगोंके दृष्टिगोचर करानेको उद्यत हुआ हूं। सो, इसमें कहीं दृष्टिदोषसे वा लेख प्रमादसे किसी प्रकारकी त्रुटि रही हो तो विद्वज्जन कृपादाष्टिसे सुधारके अशुद्धियोंमें हास्य न करते शुद्धार्थसे संतुष्ट हो मेरे परिश्रमको सफल करेंगे यही सविनय निवेदन है।

इस ग्रन्थका समग्र अधिकार मैं प्रसन्नतापूर्वक श्रीमान् मान्धवर सेठ श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजजी “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम प्रेसाध्यक्षको देता हूं कि जिन्होंने इस ग्रन्थको परम प्रसन्नतासे सुन्दर छापनेका आग्रह दिखाने मेरा उत्साह बढ़ानेकी उदारता दिखायी, इसका मैं उन्हें धन्यवाद भी देता हूं।

भवदीय--

ज्यौ० श्रीनिवास मदादेवजी शर्मा

रत्नलाम.



श्रीगणेशाय नमः ।

## अथ पत्रीमार्गप्रदीपिका ।

सोदाहरणभाषाटीकासहिता ।



अथ मंगलाचरणम्.

नत्वा श्रीशिवशारदागणपतिब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्  
पत्रीमार्गप्रदीपिकां स्फुटतरां कुर्वे महादेववित् ।  
यत्पक्षे हि घटन्ति शुद्धखचराः कार्यास्तु तत्पक्षकाः  
स्वव्यक्षोदययोः खरामविहतौ प्राप्ताः पलादिध्रुवाः ॥ १ ॥

नत्वा श्रीगुरुपत्कजं गजमुखं साम्बं शिवं चाच्युतं  
पत्रीमार्गप्रदीपिकासुविवृतिं कुर्वे सतां प्रीतये ।  
पाराशर्यकुलाभिजातगणकोऽहं श्रीनिवासाभिधो  
विद्वन्मण्डितरत्नपूर्वसतिकच्छ्रीपाठकोपाह्वयः ॥ १ ॥

निर्विघ्नतासे ग्रन्थ समाप्त होनेके अर्थ ग्रंथकर्ता प्रथम गुरु गणेशादिदेवोंको नमस्काररूप मंगलाचरण शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूर्वार्द्धसे करके ग्रन्थारम्भ करते हैं—

श्रीशिवजीको, सरस्वतीजीको, गणपतिजीको, ब्रह्माजी और सूर्यको आदि देवोंको नमस्कार करके महादेव ज्योतिर्वित् अत्यंत सरल पत्रीमार्गप्रदीपिका ( जन्मपत्रीके मार्गको प्रकाशित करनेकी प्रदीपिका ) नाम ग्रन्थको करता है, आर्यब्रह्मसौरादिपक्षोंमेंसे अपने देशमें जिस पक्षके स्पष्ट ग्रह वेध करनेसे दृक्-तुल्य होते हों उसी पक्षके स्पष्ट ग्रह करना, स्वदेशोदय और लंकोदयोंके ३०

१ भाषाकार विघ्नविच्छेदार्थ मंगलाचरणरूप गुरु गणपतिको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन तथा अपना गोत्र और निवासस्थान कहता है—

श्री ( शोभायुक्त ) निजगुरु ( महादेवजी ) के चरणकमल और गजमुख ( गणपति ) पार्श्वतीक्ष्ण शङ्कर और लक्ष्मीसहित विष्णुभगवान्को नमस्कार करके पराशरकुलमें उत्पन्न हुआ (पराशरगोत्र) पाठक ऐसे उपनामसे प्रसिद्ध विद्वन्मंडलीकरके सुशोभित रत्नपुर ( रतलामशहर ) में निवास करनेवाला मैं श्रीनिवासागणक ( ज्योतिर्विद् ) सज्जनोंके प्रसन्न होनेके अर्थ पत्रीमार्गप्रदीपिका ग्रंथकी भाषाटीका करता हूँ ॥ १ ॥

२ गणेशदेवज्ञः—“लंकोदया विघटिका गजमानि गोङ्कदस्तास्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोक्तमस्थाः । हीना-  
न्विताश्चरदलैः क्रमगोक्तमस्थैर्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्वमे स्युः” ॥ १ ॥



तीसका भाग देना, लब्ध आवे वह पलादिक ध्रुव जानना ( स्वदेशोदयको ३० तीसका भाग देनेसे स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव और लंकोदयको ३० का भाग देनेसे लंकोदयका पलादि ध्रुव हो )

उदाहरण ।

रत्नपुरशहरके मेषराशिके स्वदेशोदयपल २२७ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ७ । ३४ आया यह मेषराशिका स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव हुआ

लंकोदयः		रत्नपुरके परखंदाः	रत्नपुरस्वदेशोदयः			
मे.	२७८	मी.	५१	मे.	२२७	मी.
दृ.	२९९	कुं.	४१	दृ.	२५८	कुं.
मि.	३२३	म.	१७	मि.	३०६	म.
क.	३२३	घ.	१७	क.	३४०	घ.
सि.	२९९	दृ.	४१	सि.	३४०	दृ.
क.	२७८	तु.	५१	क.	३२९	तु.

इसी प्रकार मेषराशिके लंकोदयपल २७८ के ३० तीसका भाग दिया, लब्ध ९ । १६ आये, यह मेषराशिका लंकोदयका पलादिक ध्रुव हुआ, इसीतरह स्वदेशोदय और लंकोदयकी बारह ही राशियोंके पलादिक ध्रुव जानना ॥ १ ॥

३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
७	७८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७	स्वदेशोदय पलादिध्रुव
३४	३६	१२	२०	२०	५८	५८	२०	२०	१२	३६	३४	
१६	९	१०	१०	९	९	९	९	१०	१०	९	९	लंकोदय पलादिध्रुव
	५८	४६	४६	५८	१६	१६	५८	४६	४६	५८	१६	

अथ लग्नदशमपत्रसाधनमाह -

स्थापयेत्स्वं क्रियारंभे ततः स्वध्रुवकान्वितम् ।

निरयनं भवेत्पत्रं लग्नस्य दशमस्य च ॥ २ ॥

अब लग्नपत्र दशमपत्र बनानेकी रीति कहते हैं—मेषराशिके आरंभमें ( मेषराशिके ० शून्य अंशके नीचे ) तीन शून्य लिखना, अनंतर स्वदेशोदय और लंकोदयकी मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, आदिक राशियोंके पलादिक ध्रुव क्रमसे युक्त करना सो निरयनलग्नपत्र दशमपत्र हो ( स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुव युक्त करनेसे लग्नपत्र और लंकोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुव युक्त करनेसे दशमपत्र होता है ) ॥ २ ॥

उदाहरण ।

नीचे लिखे हुए चक्रमें मेषराशिके आरंभमें तीन शून्य लिखके रत्नपुर ( रत्-



अथ निरयनदशमपत्रचक्रम् ।

सं.	पं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
१	१																																	
२	२																																	

अथ लग्नदशमसाधनमाह ।

त्र दशमेष्टसाधनमाह-

उद्यादिष्टकालेषु ह्यदलं हि प्रपातयेत् ।  
 दशमस्य भवेदिष्टं सारी खागौ सुखांगने ॥ ३ ॥

अब लग्न दशमसाधन कहते हैं-जिसमें प्रथम दशमका इष्टसाधन कहते हैं । सूर्योदयसे-घट्यादिक इष्टमेंसे दिनाह्न हीन करना ( निकालना ) शेष बचे वह दशमभावका इष्ट हो । दशमभाव और लग्नमें छः राशि युक्त करनेसे सुखभाव और सप्तमभाव होते हैं ( दशमभावमें छः राशि युक्त करनेसे चतुर्थभाव और लग्नमें छः राशि युक्त करनेसे सप्तमभाव हो ) ॥ ३ ॥

भांशजौ सायनार्कस्य खाङ्गांकौ स्वेष्टयुक्कृतौ ।

कलाद्यास्तद्भ्रुवन्नाः स्युर्विपलाद्यास्तु संयुताः ॥४॥

तदल्पकोष्ठजौ भांशौ ग्राह्यौ लिप्तादिका वियत् ।

अल्पेष्टविवरात्पार्श्वान्तरात्तांशादिसंयुतौ ॥ ५ ॥

अयनांशादिवियुताल्लग्नं मध्यं स्फुटं भवेत् ।

सायनसूर्यकी राशिअंशके समान दशमपत्र और लग्नपत्रके कोष्ठकमें अपना अपना घट्यादिक इष्ट युक्त करना ( दशमपत्रके कोष्ठकमें दशमका इष्ट लग्नपत्रके कोष्ठकमें जन्मसमयका इष्ट मिलाना ) तदनन्तर सूर्यकी कलाविकलाको सायन सूर्यकी राशिके ध्रुवसे गुणा करना, गुणन करके आये हुए अंकोंको इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठकके विपलमें युक्त करना ॥ ४ ॥ उस इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठकसे अल्प ( न्यून ) कोष्ठक जिस राशिअंशमें हो वह राशिअंश लेना, उसके नीचे कला विकला शून्य शून्य लिखना, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक और अल्पकोष्ठकका अंतर करना, शेष अंतरमें अल्पकोष्ठक और उसके आगेके ( ऐष्य ) कोष्ठकके अंतरका भाग देना, लब्ध आवे वह अंश जानना शेष बचे उनको साठ गुणा करना फिर अंतरका भाग देना, लब्ध कला आवे फिर शेषको ६० साठगुणा करके अंतरका भाग देना, लब्ध विकला आवे, ऐसे आये हुए अंशादि तीन फलोंको इष्टयुक्त कोष्ठकसे अल्पकोष्ठकके आये हुए राशि अंशादिकमें युक्त करना ॥ ५ ॥ अयनांश हीन करना सो लग्न और दशमभाव स्पष्ट हो ॥

उदाहरण ।

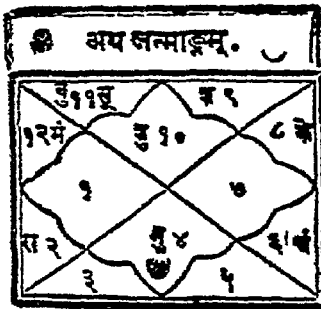
श्रीगणेशाय नमः ॥ स्वस्ति श्रीसंवत् १९२८ शके १७९३ प्रवर्तमाने अमांत-माघकृष्ण, पूर्णिमांत-फाल्गुनकृष्ण इतृतीयायां भौमवासरे घ. २५।४९

१ शकमेंसे ४४४ चारसे जुमालीस हीन करनेसे अयनांश होते हैं ; अयनांशोंको स्पष्टसूर्यमें मिला-नेसे सायन सूर्य होता है ।

( १० )

पञ्जीमार्गप्रदीपिका ।

परं ४ चतुर्थ्यां हस्तनक्षत्रे घ. २९। ९ परं चित्रानक्षत्रे गण्डयोगे, घ. ४४।५  
 बालवकरणे एवं पञ्चाङ्गशुद्धावत्र दिवसे श्रीमन्मार्तण्डमण्डलाद्धौदयादिष्टघटी ५६  
 पल ४८ विपल १८ स्पष्टार्क १०। १६।५३।३९ लग्न ९।२३ समये ज्यो०  
 श्रीनिवासशर्मणो जन्मसमयः । दिनमानम् २८।५।० अयनांशाः २२।२९।०



रतलाममें तथा रतलामके समीपके ग्रामोंमें सौर  
 पक्षके स्पष्टग्रह ग्रहवेधसे दृक्तुल्य मिलते हैं इसवास्ते  
 सौर पक्षके स्पष्टग्रह ग्रहलाघवाख्य करणग्रंथसे किये  
 ग्रंथगताब्दाः ३५१ चक्र ३१ अधिकमास ६ मास-  
 गण १३६ ऊनाह ६४ अहर्गण ४०३९.

शुभमन्त्रः शैवाः								अथ सहाः शैवाः								
इ.	व.	ह.	रा.	मं.	कु.	कु.	कु.	इ.	व.	मं.	कु.	कु.	कु.	व.	रा.	के.
३०	५	११	१०	३	९	८	१०	५	११	१०	३	९	८	१	७	
१५	३	२९	२५	१२	२३	२	१६	२९	६	१०	०	१२	२४	२५	२५	
३	५९	८	४०	३९	३१	४०	५३	१९	१४	४४	४३	२६	४८	४०	४०	
२१	४३	४०	३१	४८	९	१	४१	४६	३९	४९	५४	१८	१	२३	३१	३१
५५	४४८	६	३	२९	१७६	४	३५	१	६०	८०५	४८	१०८	२४	७४	५	३४
५८	२३	१९	०	४४	२७	४४	१	५३	१९	१७	२६	४४	२६	८	२०	११

लग्नसाधनका उदाहरण ।

स्पष्टसूर्य १०।१६।५३।३९ में अयनांश २२।२९।० युक्त किया ११ ।  
 ९।२२।३९ यह सायनसूर्य हुआ, इसकी राशि ११ अंश ९ के समानलग्नपत्रका  
 कोष्ठक ६७।२१।६ में जन्मसमयका घट्यादिक इष्ट ५६।४८।१८ युक्त किया  
 ५४।९।२४ हुए इसकी विपलके २४ अंकमें सूर्यकी कला विकला २२।३९  
 को सायनसूर्यकी ११ राशिके ध्रुव ७।३४ से गुणन करके आये हुए १७१  
 अंक युक्त किये ५४।९।१९.५ हुए विपल ६० साठसे अधिक हैं इसलिये साठका  
 भाग दिया लब्ध ३ आये ये ऊपरकी पलकें अंक ९ में युक्त किये ५४ । १२।  
 १५। यह इष्टकोष्ठक हुआ ॥ इससे अल्पकोष्ठक लग्नपत्रमें ५४।४।० दश(१०)  
 राशि १५ अंशके कोष्ठकमें मिलता है इसवास्ते १० राशि १५ अंश लिये इसके  
 नीचे कलाविकला ०।० शून्य शून्य लिखनेसे १०।१५।०।० हुए तदनंतर  
 अल्पकोष्ठक ५४।४।० और इष्टयुक्त कोष्ठक ५४।१२।१५ के अंतर किया  
 ०।८।१५ शेष बचे इसमें अल्पकोष्ठक ५४।४।० और इसके आगेका ( ऐष्य )

कोष्ठक ५४।१२।३६को अंतर ०।८।३६ का भाग दिया परंतु भाज्य ८।१५  
 भाजक ८।३६ हैं इसलिये इनको स्वर्णित करके भाग दिया भाज्य पिंड ४९५  
 भाजकपिंड ५१६ हुए भाज्यपिंड ४९५ में भाजकपिंड ५१६ का भाग दिया  
 लब्ध ० अंश आया शेष ४९५ को ६० साठगुणा किये २९७०० हुए इनमें  
 भाजक ५१६ का भाग दिया लब्ध ५७ कला आयी शेष २८८ बचे इनको ६०  
 साठ गुणे किये १७२८० हुए इनमें भाजक ५९६ का भाग दिया लब्ध ३५  
 विकला आयी ऐसे अंशादिक फल तीन ०।५७।३५ आये इनको १०।१५।०।०  
 में युक्त किये १०।१५।५७।३५ हुए इसमेंसे अयनांश २२।२९।० हीन किये  
 शेष ९।२३।२८।३५ बचे यह स्पष्टलग्न हुआ इसमेंसे दृष्टः राशि मिलानेसे ३।२३।  
 २८।३५ सप्तमभाव हुआ इक्षीप्रकार १० दशम भावका साधन किया, उसका  
 उदाहरण भी नीचे लिखा है—प्रथम दशमभावके इष्टका उदाहरण—सूर्यो-  
 दयसे घट्यादिक इष्ट ५६।४८।१८ दिनार्थ १४।२५।० दिनार्थको सूर्योदयसे  
 इष्टमेंसे हीन किया शेष ४२।२३।१८ बचे, यह दशमका इष्ट आया—तदनंतर  
 साधनसूर्य ११।९।२२।३९ की राशि ११ अंश ९ के समान दशमपत्रका  
 कोष्ठक ५६।४५।२४ में दशमका इष्ट ४२।२३।१८ युक्त किया ३९।८।४२  
 हुए इसकी विपलके अंक ४२ में सूर्यकी कला २२ विकला ३९ को सूर्यकी  
 राशि ११ के ध्रुव ९।१६ से गुणन करके आये हुए २०९ अंकको युक्त किये  
 ३९।८।२५१ विपलमें ६० का भाग दिया लब्ध ४ को पलके अंक ८ में  
 मिलाये ३९।१२।११ वह इष्टयुक्त कोष्ठक हुआ इससे अल्पकोष्ठक ३९।७।६  
 राशि ७ अंश २७ के कोष्ठकमें मिलते हैं इसलिये ७ राशि २७ अंश लिये, नीचे  
 कला० विकला० शून्य लिखी ७।२७।०।० हुए—तदनंतर अल्पकोष्ठक ३९।  
 ७।६ और इष्ट कोष्ठक ३९।१२।११ का अंतर किया ०।५।५ शेष बचे इनसे  
 अल्पकोष्ठक ३९।७।६ और इसके आगेका ( ऐष्य ) कोष्ठक ३९।१७।४ के  
 अंतर ९।५८ का भाग दिया परंतु भाज्य भाजक दोनो पलादिक अंकके हैं  
 इसलिये भाज्य भाजकको स्वर्णित करके भाज्यपिंड ३०५ में भाजक ५९८  
 का भाग दिया लब्ध ० अंश आया शेष ३०५ को ६० साठ गुणा किया  
 १८३०० हुए इनमें भाजकपिंड ५९८ का भाग दिया लब्ध ३० कला आयी

शेष ३६० वचे इनको ६० साठ गुणे किये ३१६०० हुए इनमें भाजक ५९८ का भाग दिया लब्ध ३६ विकला आयी ऐसे अंशादिक फल ०।३०।३६ आये इनको ७।२७।०।० में मिलाये ७।२७।३०।३६ हुए इसमेंसे अयनांश २२।२९।० वटाये ७।६।३।३६ शेष वचे, यह दशमभाव स्पष्ट हुआ इसकी राशिमें ६ छः राशि युक्त करनेसे ३।५।३।३६ चतुर्थभाव हुआ ॥

अथ भावसंधितचक्रसाधनमाह-

लग्नं तुर्यात्सप्तमाचुर्यभावं शोध्यं राशिः पञ्चभिस्ताडितोऽशाः ।  
अंशाद्याश्चेद्दिग्घताः स्युः कलाद्या लग्ने तुर्ये पञ्चवारं प्रदद्यात् ॥६॥  
तन्वाद्याः संधिसहिता भावाः षट्षड्युताः परे ।  
यदंत्यारंभयोः संध्योरन्तस्थस्तद्गतौ ग्रहः ॥ ७ ॥

अब भावसंधि और चालितचक्रका साधन कहते हैं—लग्नको चतुर्थ भावमेंसे चतुर्थ भावको सप्तमभावमेंसे शोधना ( हीन करना ) शेष राशिको ५ पांच गुणी करना अंश होवे और जो अंश कला विकलाको दशगुणा कर सो कलादिक हो, ऐसे अंशादिकको लग्नमें और चतुर्थभावमें ( चतुर्थभावमेंसे लग्नको हीन किया हो तो लग्नमें, सप्तमभावमेंसे चतुर्थभावहीन किया हो तो चतुर्थभावमें ) पांचवार युक्त करना ॥ ६ ॥ सो लग्नको आदि छे संधिसहित ६ छः भाव हों । इन ६ छः भावोंमें छः छः राशि युक्त करनेसे शेष छः भाव हों ॥ जिस भावकी अंत्य ( आगेकी ) और आरंभ ( पीछेकी ) संधियोंके मध्यमें ( बीचमें ) ग्रह हों वे उसी भावमें स्थित जानना । अर्थात् ग्रह जिस भावमें स्थित हो उस भावकी आरंभ ( पीछेकी ) संधिसे न्यून हो तो गतभावमें स्थित हो और अंत्य ( आगेकी ) संधिसे अधिक हो तो आगेके भावमें स्थित होगा ॥ यदि इन दोनों संधियोंके बीचमें हो ( आरंभसंधिसे अधिक और विरामसंधिसे न्यून हो ) तो उसी भावमें ग्रह स्थित जानना ॥ ७ ॥

उदाहरण ।

लग्न ९।२३।२८।३५ को चतुर्थभाव ३।५।९।३६ मेंसे हीन किया शेष ३।११।३३।१३ वचे इसकी राशिके अंक ३ को ५ गुणे करनेसे १५ हुए ये अंश हुए । अंशादिक ३१।३३।१ को दशगुणे किये ३१०।३३०।१० ये कला विकला प्रतिविकलादिक हुए परंतु ये कला-





जन्मकुंडलीमें सूर्य २ द्वितीयभावमें स्थित है, द्वितीयभावकी आरंभसंधि १०।१० से सूर्य १०।१६ अधिक है और द्वितीयभावकी विराम (आगेकी) संधि ११।१४ से न्यून है इसलिये यह सूर्य अंत्य आरंभसंधिके बीचमें हुआ, इससे द्वितीय भावमें ही स्थित रहा. मंगल ११।६ यह तृतीयभावकी आरंभसंधि ११।१४से न्यून है इससे मंगल द्वितीयभावमें स्थित जानना; ऐसे ही गुरु ३।० है यह सप्तमभावकी आरंभसंधि ३।९ से अल्प है इसकारण ६ छठे भावमें स्थित हुआ, इसीप्रकार शेष सर्व ग्रह भावोद्भव (चलित)चक्रमें जानना ।

अथ चलितचक्रम् ।			
१२	११	१०	९
१	२	३	४
५	६	७	८

अथ क्षय-चय-फल-विश्वानयनमाह-

भावतुल्ये ग्रहे रूपं संधितुल्ये तु निष्फलम् ।  
 भावसंध्यंतरेणाप्तं खेटसंध्यंतरं च यत् ॥ ८ ॥  
 भावान्न्यूनाधिके खेटे फलं वृद्धिक्षयाभिधम् ।  
 फलस्याश्रयंशको विश्वा यद्वा विशहतं फलम् ९ ॥

अथ क्षय चय फल विश्वाआनयनकी रीति कहते हैं-भावके अंश कला विकलाके समान ( बरोवर ) ग्रह हो तो पूर्णफल होता है, उस ग्रहका ( १।०।० फल जानना ) और संधिके अंश कला विकलाके तुल्य ( बरोवर ) ग्रहके हों तो निष्फल होता है ( उस ग्रहका ०।०।० फल जानना ) न्यूनाधिक हो तो भावसंधिके अंतरका भाग देना ग्रहसंधिके अंतरमें ( ग्रह जिस भावमें स्थित हो उस भावसे न्यून हो तो उस भावकी आरंभसंधिसे ग्रह भावका अंतर करना और भावसे ग्रह अधिक हो तो विराम (आगेकी) संधिके साथ ग्रहभावका अंतर करना ) जो फल लब्ध आवे वह ॥ ८ ॥ भावसे ग्रह न्यून हो तो वृद्धि ( चय ) और भावसे ग्रह अधिक हो तो क्षयसंज्ञक फल जानना, फलका तृतीयांश ( फलके तीनका भाग देना ) विश्वा जानना अथवा आये हुए फलको बीस गुणा करना सो विश्वा हो ॥ ९ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३२ यह द्वितीय भावसे न्यून है अतएव द्वितीय

१ धरणीधरः-“ न्यूनसंधिग्रहाद्भावाच्छोष्यो भावाल्पके खगे ॥ तदग्रिमाच्च संशोष्यो ग्रहो भावस्तथाधिके ॥ ” इति ॥

भावकी आरंभसंधि १० । १० । २४ । ५ से अंतर किया ०। ६। २९ । ३४ यह ग्रहसंध्यंतर हुआ, इसमें इसी आरंभसंधि १० । १० । २४ । ५ के साथ द्वितीयभाव १० । २७ १९ । ३४ का अंतर किया ० । १६ । ५५ । ३० यह भावसंध्यंतर हुआ इसका भाग दिया भाज्य ग्रहसंध्यंतर, भाजक भावसंध्यंतर दोनों अंशादिक हैं इसलिये इनको सर्वाणित किये भाज्यपिंड २३३७४ में भाजक पिंड ६०९३० का भाग दिया लब्ध ० शेष २३३७४ को ६० साठ गुणे किये १४०२४४ हुये भाग ६०९३० का दिया लब्ध २३ कला आयी शेष १०५० बचे इनको ६० गुणित किया ६३००० हुए इनमें फिर भाजक भावसंध्यंतर ६०९३३० का भाग दिया लब्ध १ विकला आयी ऐसे फल ३ तीन आये ०। २३। १ ये भावसे ग्रह न्यून हैं अतएव चरसंज्ञक सूर्यके फल हुए इसी प्रकार चंद्रादि ग्रहोंके फल जानना— अब विश्वा—आनयन कहते हैं—सूर्यके फल २३ । १ को ३ तीनका भाग दिया लब्ध ७। ४० ये विश्वा हुए अथवा फल २३। १ को २० वीसगुणा किया ४६०। २० साठ ६० का भाग दिया लब्ध ७ शेष ५० बचे ये विश्वा आये, इसी-प्रकार चंद्रादिकके विश्वा जानना.

अथ क्षयचक्रफलविश्वाचक्रम्.								
र.	सं.	मं.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.
०	०	०	०	२०	०	०	०	०
२३	५३	२८	१	४८	६०	४८	३४	फल.
५	२७	२२	११	४१	२०	२६	४५	
क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय
०	१०	९	०	१६	३	१६	१३	
४०	४७	२७	२३	१३	६	७	३५	विश्वा.
	४०	२०	४०	४०	४०	४०	०	

अथ ग्रहाणामवस्थानयनमाह व्यङ्कटेशः ।

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजे समे तद्विपरीतमाहुः ।

बालः कुमारोऽथ युवा च वृद्धो मृतो लवानामृतुभिः क्रमेण॥ १० ॥

अब ग्रहोंकी अवस्था लानेकी रीति व्यंकटेश कहते हैं—ग्रहोंकी बालादिक अवस्था क्रमसे विषम (एकी)राशिमें छःछः अंशोंके क्रमसे बाल १ कुमार २

युवा ३ वृद्ध ४ मृत ५ कही है और सम ( बेकी ) राशिमें वह बालादि अवस्था विपरीतक्रमसे ( मृत १ वृद्ध २ युवा ३ कुमार ४ बाल ५ ) कही है ॥१०॥

बालावस्थासारणीचक्रम्.					
६	१२	१८	२४	३०	अंशः
बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत	विषम राशी
मृत	वृद्ध	युवा	कुमार	बाल	समरा. राशी

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ यह विषमराशिका है और छः छः

अंशके क्रमसे तीसरे विभागमें है अतएव तीसरी युवा अवस्थामें हुआ इसी प्रकार शेष चंद्रादि ग्रहकी अवस्था जानना ॥

अथ बालावस्थाचक्रम्							
सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
युवा	बाल	वृद्ध	कुमार	मृत	युवा	मृत	बाल

अथ दृष्टिसाधनमाह धरणीधरः ।

द्रष्टा विहीनदृश्यस्य क्रमादेकादिभे दृशः ।

भागाद्ध तिथियुग्भागा भागाद्धौनशराब्धयः ॥११॥

भोग्यभागाद्विनिघ्नांशाः क्रमात्षड्भाधिके ग्रहे ।

दिग्भ्यः शुद्धे लवार्द्धं च ज्ञेया लिप्तादिका दृशः ॥ १२ ॥

अब धरणीधर दृष्टिसाधन कहते हैं—द्रष्टाग्रहको हीन करना दृश्य ग्रहमेंसे क्रमसे एकको आदि ले शेष राशियोंकी दृष्टि जानना॥ एक राशि शेष बचे तो राशि विना अंशोंको अर्द्ध (आधे) करना, यदि २ दो राशि शेष रहें तो राशि विना अंशोंमें १५ पंद्रह युक्त करना और तीन राशि शेष बचे तो अंशोंको अर्द्ध ( आधे ) करना और ४५ पैतालीसमेंसे शोधना ॥ ११ ॥ चार ४ राशि शेष बचे तो भोग्यांश (राशि विना अंशोंको ३० तीसमेंसे हीन करना ) यदि ६ पांच राशि शेष बचे तो राशि विना अंशोंको द्विगुण करना और क्रमसे छः ६ सात ७ आठ ८ नव ९ राशि शेष बचे तो शेष राश्यादिकोंको १० दश राशिमेंसे शोधना—शेष बचे उसके अंश करके अर्ध ( आधे ) करना, जो आधे वह कलादिक दृष्टि जाननी ॥ १२ ॥

१ यस्य ग्रहस्य दृष्टिरानीयते असौ द्रष्टा—जिस ग्रहकी दृष्टि जाना हो वह द्रष्टा ।

२ यं ग्रहं प्रत्यानीयते असौ दृश्यः—जिस ग्रहपर दृष्टि जाना हो वह दृश्य होता है ।

अथ भौमस्य विशेषदृष्टिमाह—

पञ्चेन्दुयुक्ताः खलु सार्द्धभागा द्विभेऽगभे षष्टिकलास्तथैव ।

भागोनषष्टिर्भवतीह दृष्टिस्त्रिभेऽद्रिभे भूमिसुतो न दृश्ये ॥ १३ ॥

अब मंगलकी विशेष दृष्टि कहते हैं—मंगलको हीन करे दृश्यमेंसे और यदि दो २ राशि शेष बचे तो राशि विना अंशोंको डेढे ( अंशादिकके २ का भाग देके जो आवे वह उन्ही अंशादिमें युक्त करना ) करना और १५ पंद्र युक्त करना कलादिक दृष्टि हो और छः राशि शेष बचे तो ६० साठ कला दृष्टि जानना तैसे ही यदि तीन राशि ७ सात राशि शेष बचे तो राशि विना अंशादिकोंको ६० साठमेंसे शोधना सो कलादिक भौमकी विशेष दृष्टि होवे उक्तराशियोंके अतिरिक्त राशि शेष बचे उसकी श्लोक ११ । १२ के अनुसार दृष्टि करना ॥ १३ ॥

अथ जीवस्य विशेषदृष्टिमाह—

जीवोनदृश्यस्य तु वेदभे स्याद्विघ्नांशकोना खलु षष्टिरेव ॥

सार्द्धांशकोना गजभे तु षष्टिस्त्रिभेऽष्टिभेशार्धयुतेषुवेदाः ॥ १४ ॥

अब गुरुकी विशेष दृष्टि कहते हैं—गुरुको हीन करे दृश्यमेंसे और यदि ४ चार राशि शेष बचे तो राशि विना अंशादिकोंको २ द्विगुण करके ६० साठमेंसे हीन करना दृष्टि होवे और ८ आठ राशि शेष बचे तो अंशोंको डेढे ( अंशोंको आधे करके उन्ही अंशोंमें मिला ) करके साठ ६० मेंसे शोधना ( हीन करना ) शेष बचे वह दृष्टि जानना इसी प्रकार यदि तीन ३ राशि या सात ७ राशि शेष बचे तो अंशोंको अर्ध ( आधे ) करके ४५ पैंतालीस युक्त करना सो कलादिक गुरुकी विशेष दृष्टि होवे ॥ १४ ॥

अथ मंदस्य विशेषदृष्टिमाह—

द्विनिघ्नभागा विधुभेन्तरे स्याद्द्विभे तु भागार्धविहीनषष्टिः ॥

द्विघ्नांशकोना नवभे तु षष्टिस्त्रिभेऽष्टिभेशार्धयुतेषुवेदाः ॥ १५ ॥

अब शनिकी विशेष दृष्टि कहते हैं—शनिको हीन करे दृश्यमेंसे यदि एक राशि शेष बचे तो राशि विना अंशादिकको द्विगुण करनेसे कलादिक

दृष्टि होती है और यदि २ दो राशि शेष बचे तो अंशोंको अर्ध (आध) करके साठमेंसे हीन करना इसी प्रकार ९ नव राशि शेष बचे तो राशिबिना अंशोंको द्विगुण करके साठमें शोधनेसे दृष्टि होती है और ८ आठ राशी शेष बचे तो राशी बिना अंशोंमें ३० तीस युक्त करना शानिकी विशेष दृष्टि होवे ॥ १५ ॥

सूत्रधांदिष्टसावनकोष्टक.						नामदिशेषदृष्टि.				गुरुदिशेषदृष्टिकोष्टक.							
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८
अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	०	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका	अंका
		द्वे			द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	देव				अंका	अंका	अंका	अंका	अंका
अंका	१६	४५	३०	२	६०	४५	३०	१५	१५	६०	६०	६०	४५	६०	४५	३०	६०
	मुक्ता	×	×	गुणा	×	×	×	×	यु.	×	कला	×	यु.	×	×	×	×
		द्वे	द्वे		द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे	द्वे
ज्ञानदिशेषदृष्टि.																	
१	२	८	९														
अंका	अंका	अंका	अंका														
	अंका		दिया														
२	६०	३०	६०														
गुणा	×	यु.	द्वे														

उदाहरण ।

सूर्य १० । १६।५३ । ३९ मेंसे द्रष्टा चंद्र ५।२९।१९।४९ हीन क्रिया ४। १७।३३।५० हुए शेष चार राशि बची हैं इसकारण इसके अंशादिक १७।३३। ५० को ३० तीसमेंसे हीन किये १२।२६ शेष बचे ये सूर्यपर चन्द्रको दृष्टिहुह इसीप्रकार दृश्य सूर्यमेंसे भौम ११ । ६ । १४।५४ को हीन क्रिया ११ । १०। ३८ । ४५ हुए शेष ग्यारा राशि हैं इसकी दृष्टि नहीं है इसकारण सूर्यपर भौम की दृष्टि ०।० सूर्य दृश्यमेंसे द्रष्टा बुध १०।१०।४४।१८को हीन क्रिया शेष ०। ६।९ । २१ बचे शून्यराशिकी दृष्टि उक्त नहीं है इसलिये सूर्यपर बुधकी दृष्टि ०।० हुई सूर्यमेंसे द्रष्टा गुरु ३ । ०।४३। १ हीन क्रिया शेष ७। १६।१०।३८ बचे सात राशि शेष हैं इसलिये गुरुकी विशेष दृष्टि श्लोकमें कहे अनुत्तर अंशोंको आध किये ८ । ५।हुए इनमें ४५ युक्त किये ५३ । ५ ये सूर्यपर गुरुकी विशेष दृष्टि हुई—

महापरिमहाणादष्टिचक्रं.							
र.	ब.	मं.	बु.	गु.	गु.	क.	
०	०	०	०	०	०	०	स.
०	३८	०	०	३२	०	०	
०	४६	०	०	२२	०	०	
१२	०	१३	१८	१४	३८	४०	ब.
२६	०	५०	३५	१८	२७	२८	
०	१	०	०	१	०	०	मं.
०	०	०	०	३५	०	५	
०	०	०	०	३२	०	४३	
०	३५	०	०	१०	०	०	बु.
०	२४	०	०	२	०	०	
५३	५३	५१	५०	०	५४	४८	गु.
५	३६	४४	१	०	८	१०	
०	०	०	०	०	०	०	स.
२	२२	११	०	३६	०	०	
१३	३३	५४	०	३३	०	०	
४४	५०	५४	३१	५७	०	०	क.
१०	५८	१७	५०	२	०	०	

दृश्य सूर्यमसे शुक्र ९। १२। २६।  
 ८ को हीन किया शेष १। ४।  
 २७। ३१ बचे शेष एक राशि है  
 इसलिये अंश ४। २७। ३२ को आधे  
 किये २। १३ ये सूर्यपर शुक्रकी  
 दृष्टि आयी फिर दृश्य सूर्यमसे द्रष्टा  
 शनि ८। २४। ४। २३ हीन किया  
 १। २२। ५। १६ शेष एक राशि बची  
 इसवास्ते शनीकी विशेष दृष्टि श्लोक  
 १५ में कहे अनुसार अंशादिक २२।  
 ५ को द्विगुण किये ४४। ३० ये  
 सूर्यपर शनीकी दृष्टि हुई इसीप्रकार  
 शेष ग्रहोंपर ग्रहोंकी दृष्टि तथा भाव

दृश्यपर ग्रह द्रष्टाकी दृष्टि जानना—इति ॥

महापरिमहाणादष्टिचक्रं.												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मावाः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	स.
०	०	०	३३	३७	१९	१३	५४	३७	२०	७	०	
०	०	०	७	५२	३४	१०	४७	५२	५६	५१	०	
३२	२	५९	४२	२८	१६	२	०	०	२	१६	४३	बं.
५६	०	४	१०	५	१	५६	०	०	५१	५१	०	
०	०	०	१४	५२	३८	१२	४२	०	३१	१७	०	मं.
०	०	०	२३	२४	५५	४६	१०	०	१३	३२	२७	
०	०	१०	३९	३४	३३	२५	५१	३४	१७	४	०	बु.
०	०	१३	१७	४७	१०	२८	४२	४७	५१	४७	०	
४८	३१	१४	०	०	०	०	३३	४५	५१	०	५३	गु.
१७	५३	४६	०	०	०	०	१८	१४	२४	५४	१२	
०	७	३३	३३	११	२९	५४	३७	२०	३	०	०	स.
०	३५	४४	४२	१६	४६	२९	३४	४०	४३	०	०	
०	५८	४३	१९	१२	५८	४५	३२	४७	०	०	०	क.
०	४४	४९	४७	४४	४५	४०	३१	३६	०	०	०	

अथ राशीनां स्वामिनः । उक्तं च व्यंकटेशेन ।

भौमाच्छविचन्द्ररविशुक्रवक्रैज्यमंदार्कसुतामरेज्याः ।

मेधादिभानामधिपाः क्रमेण तदंशकानामपि ते भवेद्युः ॥ १६ ॥

अब राशियोंके स्वामी व्यंकटेश कहते हैं—भौम ( मंगल १ ) अच्छ ( शुक्र २ ) विद ( बुध ३ ) चंद्र ( चंद्र ४ ) रवि ( सूर्य ५ ) ज्ञ ( बुध ६ ) शुक्र ( शुक्र ७ ) वक्र ( भौम ८ ) इज्य ( गुरु ९ ) मंद ( शनि १० ) अर्कसुत ( शनि ११ ) अमरेज्य गुरु १२ क्रमसे मेधादिक राशियोंके स्वामी जानना, और मेधादिक राशियोंके अंशादिकोंके ( द्रेष्काण सप्तमांश नवमांश द्वादशांश आदिके ) भी क्रमसे येही स्वामी होते हैं ॥ १६ ॥

अथ नैसर्गमैत्रीमाह विश्वनाथः ।

इन्दीज्यक्षितिजारवीन्दुतनयौ सूर्येन्दुजीवाः क्रमाद्  
भृग्वर्कौ शशिसूर्यभूमितनया जार्कौ ज्ञशुक्रौ मताः ॥

सूर्यादेः सुहृदः समाः शशिसुताः सर्वेऽपि मंदास्फुजि-

न्मंदाचार्यकुजाः शनिः कुजगुरु जीवः परे वैरिणः ॥ १७ ॥

अब स्थिरमैत्री विश्वनाथ कहते हैं—चंद्र गुरु भौम १, सूर्य बुध २, सूर्य चंद्र गुरु ३, शुक्र सूर्य ४, चंद्र सूर्य भौम ५, बुध शनि ६, बुध शुक्र ७, क्रमसे सूर्यादिक ग्रहोंके मित्र कहे हैं और बुध १, सर्व ग्रह २ ( मं० गु० शु० श० ) शनि शुक्र ३, शनि गुरु भौम ४, शनि ५, भौम गुरु ६, गुरु ७, क्रमसे सूर्यादिक ग्रहोंके मित्र कहे हैं शेष ( मित्रसमसे बाकी रहे वह ) शत्रु जानना ॥ १७ ॥

नैसर्गमैत्री,							
र.	बं.	मं.	कु.	गु.	शु.	श.	
व. गु. मं.	र. कु.	र. बं. गु.	सु. शु.	र. बं. मं.	कु. श.	शु. श.	मित्र.
कु.	मं. गु. शु. श.	श. कु.	श. गु. मं.	श.	मं. गु.	गु.	सम.
शु. श.	१०	कु.	मं.	शु. कु.	शु. बं.	र. बं. मं.	शत्रु.

अथ तात्कालिकर्षचधामैत्रीसाधनमाह—सोमदैवज्ञः ।

ग्रहतोऽर्थरतृतीयश्च तोय स्वा १०ऽऽथ व्यय १२ संस्थः सुहृदो नभश्चराः  
इतरालयमा द्विषो मुनीन्द्रैरिति तत्कालजमित्रशत्रवः स्युः ॥ १८ ॥

अब तात्कालिक पंचधा मैत्री ज्ञान सोमदैवज्ञ कहते हैं--जिस ग्रहसे २।३।४। १० । ११ । १२ वें स्थानमें जो ग्रह स्थित हो वह मित्र जानना; शेष १।।५।६।७।८।९ स्थानमें गये हुए ग्रह शत्रु जानना इसप्रकार मुनिलोगोंने तात्कालिक मित्र शत्रु कहे हैं ॥ १८ ॥

उदाहरण ।

तात्कालिकमैत्रीचक्रम् ।						
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मं.शु.	श.गु.	र.बु.	मं.शु.	चं.	र.बु.	र.शु.बु.
श.		शु.श.	श.		मं.श.	म.चं.
चं.बु.	र.मं.	चं.	र.चं.	र.मं.बु.	चं.	शु.
गु.	बु.शु.	गु.	गु.	शु.श.	गु.	शु.

सूर्यसे २ भौम ११ शनि १२ शुक स्थित हैं इस कारण ये सूर्यके मित्र हुए और १ बुध ६ गुरु ८ चंद्रमा स्थित हैं ये सूर्यके शत्रु

हुए इसीप्रकार चंद्रादि सर्व ग्रहोंके तात्कालिक मित्र शत्रु जानना इति ।

अधिमित्रसमत्वमेति मित्रं समखेटस्तु सुहृद्रिपुत्वमेति ।

रिपुरेति समाधिशत्रुभावं खलु तत्कालजमित्रशत्रुभावात् ॥१९॥

नैसर्गमैत्रीका मित्र ग्रह तात्कालिक मैत्रीमें मित्र हो तो अधिमित्र और शत्रु हो तो समत्वभावको प्राप्त होता है ( मित्रमित्र-अधिमित्र, मित्रशत्रु-सम होता है) और नैसर्गमैत्रीका समग्रह तात्कालिक मैत्रीमें मित्र हो तो मित्र, शत्रु हो तो शत्रुभावको प्राप्त होता है ( सममित्र--मित्र, समशत्रु--शत्रु होता है, एवं नैसर्गमैत्रीका शत्रुग्रह तात्कालिकमैत्रीमें मित्र हो तो सम और शत्रु हो तो अधिशत्रुभावको प्राप्त होता है (शत्रुमित्र--सम, सम शत्रु--अधिशत्रु होता है) ॥ १९ ॥

उदाहरण ।

अप पंचधा मैत्रीचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
मं.	०	र.	शु.	चं.	मं.पु.	बु.शु.	अधि.मि
०	मं.गु.	शु.मं.	मं.	०	मं.	०	मित्र
चं.गु.	र.बु.	चं.गु.	र.	र.मं.	र.	र.चं.	सम.
शु.मं.	शु.मं.	०	गु.	मं.	गु.	गु.	शत्रु
०	०	०	चं.	बु.शु.	चं.	०	अधि.शत्रु

यहाँ नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके चंद्र गुरु मित्र हैं ये चंद्र गुरु तात्कालिक मैत्रीमें सूर्यके शत्रु हैं अतः चंद्र गुरु पंचधामैत्रीमें सूर्यके सम हुए एवं नैसर्गमैत्रीमें भौम सूर्यका मित्र है तात्कालिक मैत्रीमें भी मित्र है इस

लिये भौम सूर्यके अधिमित्र हुआ, पंचधामैत्रीमें और नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके बुध सम है यह बुध तात्कालिक मैत्रीमें सूर्यके शत्रु है अतः शत्रुभावको बुध प्राप्त हुआ,



इसीप्रकार नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके शुक्र, शनि शत्रु हैं ये तात्कालिक मैत्रीमें मित्र हैं इसलिये सूर्यके शनि, शुक्र पंचथा मैत्रीमें सम हुए ऐसेही शेष ग्रहोंको अधिमि-  
त्रादि जानना इति.

अथ षड्वर्गसाधनमाह केशवः ।

भेशोऽथाकेन्दुहोरे अयुजि युजि शशिव्रधनयोः स्वात्मजांक-  
क्षेशाह्यंशा नवांशा अजमकरतुलाकर्कितोर्काशकाः स्यात् ।  
मौमार्कीज्यज्ञशुक्रा अयुजि शरश्शरा ५ घाट्ट्रि७पंचांशनाथा-  
स्त्रिंशायुग्मे विलोमाः क्रमबलिन इमे षट् शुभैः सद्युगोर्ध्वैः२०॥

अब केशवद्वैवज्ञका कहा हुआ षड्वर्गसाधन कहते हैं--राशियोंके स्वामी प्रथम श्लोक १६ में कहे हैं वे जानना। तदनंतर विषमराशिमें प्रथम विभागमें सूर्यकी, द्वितीयविभागमें चंद्रकी होरा जानना और सम राशिके प्रथम

१५	३०	अंक
सू.	चं.	विषम
चं.	सू.	सम

विभागमें चंद्रकी, दूसरे विभागमें सूर्यकी होरा जानना, प्रथम १, पंचम ७ नवम ९ राशिके स्वामी द्रेष्काणके स्वामी होते हैं (ग्रह प्रथम

विभागमें १० अंशमें) हो तो अपनी राशिका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी जानना--और ग्रह दूसरे विभागमें ( १० अंशसे अधिक २० अंशपर्यंत-) हो तो ग्रह जिस राशिका हो उस राशिसे पांचवीं राशिका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी होता है एवं ग्रह तृतीय द्रेष्काणमें ( २० अंशसे अधिक ३० अंशपर्यंत) हो तो ग्रह जिस राशिका हो उस राशिसे ९ नवमराशिका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी जानना। भेष १ मकर १० तुला ७ और कर्क ४ से नवांश जानना अर्थात् ग्रह मेषका हो तो भेषराशिसे, वृषभराशिका हो तो मकरराशिसे मिथुन राशिका हो तो तुलाराशिसे, कर्कराशिका हो तो कर्कराशिसे इसी प्रकार सिंहादि सर्व राशियोंमें जितनी संख्याके नवांशविभागमें ग्रह हों उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो

१ होराका एक विभाग १५ पंद्रह अंशका होता है।

२ एक द्रेष्काणका विभाग दश १० अंशका होता है।

३ तीस अंशके ९ नवमें हिरस्केको नवांश कहते हैं, एक नवांश विभाग ३ अंश २० कलाका होता है-

राशि आवे उसका स्वामी नवांशका स्वामी होता है द्वादशांशके स्वामी लपनी राशिसे जानना (ग्रह जिस राशि-का हो उसी राशिसे जितनी संख्याके द्वादशांश-विभागमें ग्रह हों उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आवे उसका स्वामी द्वादशांशका स्वामी होता है ) ॥ और विषमराशिमें ५।५।८।७।५ इन अंशोंके मंगल, शनी, गुरु, बुध, शुक्र, क्रमसे त्रिंशांशके स्वामी कहे हैं अर्थात् विषम राशिमें ५ अंशपर्यंत भौम त्रिंशांशका स्वामी जानना ऐसे ही इन ५ अंशोंके आगेके ५ अंशका स्वामी शनी इसके आगेके ८ अंश-

मेघ	मकर	गुल	कर्क
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

नवांशविभाग ।					द्वादशांशविभाग ।																
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५६	६०	६३	६६	७०	७३
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

का स्वामी गुरु फिर इसके आगेके ८ अंशका स्वामी बुध इसके आगेके ५ अंशका स्वामी शुक्र त्रिंशांशका स्वामी जानना, और समराशिमें उक्त त्रिंशांशके स्वामी विलोम ( उलट ) कहे हैं ( ५ शु० ७ बु० ८ गु० ५ श० ५ मं० ) ये छही वर्ग क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान् जानना ( ग्रहसे होरा बलवान् होरासे द्रेष्काण द्रेष्काणसे नवांश नवांशसे द्वादशांश, द्वादशांशसे त्रिंशांश अधिक बलवान् जानना ) चार ४ से अधिक वर्ग शुभग्रहके आवे तो शुभ समझना ॥ २० ॥

५	५	८	७	५	अंशाः	विषमराशिमें
मं.	शु.	गु.	बु.	शु.	विषमराशिमें	
शु.	बु.	गु.	शु.	मं.	समराशिमें	
५	७	८	५	५	अंशाः	

अथ सप्तवर्गसाधनमाह-

नगांशपास्त्वोजगृहे तदीशाद्युग्मे गृहे सप्तमराशिपात्तु ॥  
पूर्वोक्तवर्गैः सहितो नगांशः स्युः सप्तवर्गा मुनिभिः प्रदिष्टाः ॥ २१ ॥

अब सप्तवर्गसाधन कहते हैं-विषमराशिमें अपनी राशिके स्वामीसे सप्तमांशके स्वामी जानना और समराशिमें अपनी राशिसे सप्तम राशि ( सातवी

१ तीस अंशके १२ भागको द्वादशांश कहते हैं एक द्वादशांशविभाग अर्थात् ओढका होता है ।

राशि )के स्वामीसे सप्तमांशके स्वामी जानना ॥ ( ग्रह विषम राशिका हो तो जिस राशिका है उसी राशिसे और समराशिका हो तो जिस राशिका ग्रह हो उस राशिसे जो सातमी राशि है उससे जितनी संख्याके सप्तमांशविभागमें ग्रह स्थित हो उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आवे उसका स्वामी सप्तमांशका स्वामी समझना ) पूर्वोक्तषट्ठगोंमें ये सप्तमांश युक्त करनेसे सप्तवर्ग होते हैं ऐसा मुनि लोगोंने कहा है ॥ २१ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ यह कुंभराशिका है इसका स्वामी शनिगृहके स्वामी स्वामी हुआ—होरा, सूर्य होराके दूसरे विभागमें है और विषमराशिका है इस कारण सूर्यकी होराका स्वामी चंद्र हुआ, द्रेष्काण सूर्य दूसरे द्रेष्काणविभागमें है इसलिये सूर्यकी राशि ११ कुंभसे पांचमी राशि ३ मिथुनका स्वामी बुध आया यह द्रेष्काणका स्वामी हुआ, सप्तमांश सूर्य विषम राशिका है और सप्तमांश विभागमें ये चार ४ संख्याके विभागमें है अतः सूर्यकी राशि २१ कुंभसे चार-पर्यंत गिननेसे चौथी राशि २वृषभ आयी इसका स्वामी शुक सप्तमांशका स्वामी हुआ नवांश—सूर्य ६ छः संख्याके नवांशविभागमें है और कुंभराशिका है अतः तुलाराशीसे ६ छह संख्यातक गिननेसे १२ मीन राशि आयी इसका स्वामी गुरु है यह सूर्यके नवांशका स्वामी हुआ, द्वादशांश—सूर्य ७ सातसंख्याके द्वादशांश विभागमें है इसलिये अपनी राशि कुंभसे गिननेसे सातमी ७ राशि ५सिंह आयी इसका स्वामी सूर्य द्वादशांशका स्वामी हुआ त्रिंशांश—सूर्य विषमराशिका है और १६ अंशका है इस लिये त्रिंशांश विभागमें तीसरे ८अंशके विभागमें है इसकारण विषमराशिके तीसरे विभागका स्वामी गुरु सूर्यके त्रिंशांशका स्वामी हुआ, इसीप्रकार शेष चंद्रादि सर्वग्रहोंके सप्तवर्ग जानना, इति.

सप्तमांशविभाग.						
१	२	३	४	५	६	७
४	८	१२	१६	२०	२४	२८
३७	३४	५१	८	५	४२	०

१ एक सप्तमांश विभाग ४ अंश १७ कलाका होता है ।

अथ ग्रहाणां सप्तवर्गसंज्ञा ।								
१.	वं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रु.	
११ अ स	६ बु स	१२ गु स	११ अ रि	४ वं वमि	१० अ मि	९ बु स	१० रु	अरु
४ पं स	५ र स	४ वं स	५ र स	४ वं मि	४ वं मि	४ वं स	५ र	होरा
३ बु श	२ बु श	१२ गु स	२ बु स्व	४ वं मि	२ बु स्व	५ र स	६ बु	त्रैफाण
२ शु स	६ बु स	७ शु मि	१ मं मि	१० अ श	६ बु मि	२ बु मि	९ म	सप्तमांस
१२ गु स	६ बु स	५ र मि	१० अ मि	४ वं मि	१ मं मि	८ मं स	५ बु	नवभाण
५ र र	५ म स	२ बु मि	२ बु स्व	४ वं मि	२ बु स्व	६ बु मि	७ अ	दादशांश
९ गु स	८ मं स	६ बु स	९ गु स	२ बु मि	१२ गु मि	३ बु मि	१० र	त्रिंशोश
५	४	६	३	६	५	५	३	शुभयोग
२	३	१	४	१	२	२	४	एकयोग

विना परिश्रम शीघ्र सुगमरीतिसे सप्तवर्गज्ञान होनेके लिये आगे सप्तवर्गसा-  
रणीचक्र मेषादि राशियोंके लिखे हैं—

उनमें ग्रह जिस राशिका हो उस राशिके कोष्ठकमें जितने अंशका हो उतने  
अंशके नीचे पंक्तिमें जो सप्तवर्गके स्वामी राशिसहित लिखे हैं वे उस ग्रहके  
सप्तवर्गके स्वामी होंगे और षष्ठ्यंशका स्वामी भी उसीके नीचे पंक्तिमें लिखा है  
वह जानना ॥

उदाहरण ।

जैसे यहाँ सूर्य १०।१६।५३।३९। है इसलिये कुंभराशिके कोष्ठकमें १७  
अंशके नीचे पंक्तिमें लिखे सप्तवर्गके स्वामी और षष्ठ्यंशका स्वामी आये ।

गृ. प. हो. प. रे. प. स. प. न. प. द्वा. प. त्रिं. प. ष. प.

११श ४ वं ३ बु २ शु १२ गु ५ र ९ गु ८ मं.























































दशांशस्वारणीचक्रम् ।													
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	राशि	सं०
१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	दिमा.३	१
२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	६	२
३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	९	३
४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	१२	४
५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	१५	५
६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	१८	६
७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	२१	७
८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	२४	८
९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४	२७	९
१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५	३०	१०

चरराशिमें मेष राशिको आदि ले, स्थिरमें सिंहको आदि ले, द्विस्वभावमें धन राशिको आदि ले जितनी संख्याके विभागमें हो उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आवे उस राशिका स्वामी षोडशांशका स्वामी होता है ।

षोडशांशविभाग ( पाये. )																
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	अं.
५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	१३	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	क.
३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.

अब दशवर्ग बनानेकी रीति कहते हैं:-

सप्तवर्गमें दशांश षोडशांश षष्ट्यंश मिलानेसे दशवर्ग होते हैं ।

अथाष्टवर्गनयनमाह दुंदिराजः ।

स्वान्मंदात्कुजतो रविर्मृत्तितपोलाभार्थकेंद्रस्थितः शुक्रादस्तरिपुव्ययेषु  
च गुरोर्धर्मारिपुत्राप्तिषु ॥ चन्द्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषुशशिजात्पंचत्रिनन्द-  
व्ययारिप्राप्त्यभ्रगतस्तनोस्त्रिखसुखोपांत्यारिरिःफे शुभः ॥ २२ ॥

अब अष्टवर्ग बनानेकी रीति दुंदिराज कहते हैं:-

प्रथम सूर्याष्टवर्ग कहते हैं:-सूर्य अपने स्थानसे और भौमसे और शनिसे ८।९।

११।२।१।४।७।१० में स्थानमें शुभ फल देता है और शुक्रसे ७।६।१२, गुरुसे

१।६।५।११, चंद्रसे ११।६।३।१०, बुधसे ५।३।९।१२।६।११।१०, लग्नेसे ३।१०।४।११।६।१२ स्थानमें शुभफल देता है। इन शुभफलप्रदस्थानोंमें रेखा दे और शेष स्थानोंमें बिंदु ( शून्य ) देनेपर सूर्यका अष्टवर्ग होता है ॥ २२ ॥

अथ रवेरष्टवर्गाकाः ४८.							
र	चं	मं	बु	शु	शु	श	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	५	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथ चंद्रस्याष्टवर्गः ।

भौमाद्ग्लौर्नवधीधनोपचयगः पट्त्रयातिधीस्थोऽर्कजा-  
लग्नाच्चोपचये रवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ।  
धीरंध्रेशचतुष्टयं त्रिषु गुरोः केंद्राष्टलाभव्यये  
स्वादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्तांबुत्रिकोणे भृगोः ॥ २३ ॥

चंद्राष्टवर्ग कहते हैंः--चंद्रया भौमसे ९।५।२।३।६।१०।११,  
शनिसे ६।३।११।५, लग्नेसे ३।६।१०।११, सूर्यसे ३।६।१०।११।८।  
७, बुधसे ५।८।११।१।४।७।१०।३, गुरुसे १।४।७।१०।८।  
११।१२, चंद्रसे १।३।६।१०।११।७, भृगुसे ३।१०।११।७।४।  
९।५ में स्थानमें शुभफल देता है। इन स्थानोंमें रेखा दे और शेष स्थानोंमें  
शून्य देनेसे चंद्रका अष्टवर्ग होता है ॥ २३ ॥

अथ भौमस्याष्टवर्गमाह ।

स्वाद्भौमोऽष्टचतुष्टयायधनगो जीवात्षडार्यात्यखे  
चन्द्रादायरिषुत्रिगो भृगुसुतादष्टांत्यलाभारिगः ।  
ज्ञात्पंचायरिषुत्रिगोऽर्कतनयात्केंद्राष्टधर्मायगः  
सूर्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्रयायारिखाद्ये शुभः ॥ २४ ॥

अब भौमका अष्टवर्ग कहते हैंः--भौम अपने स्थानसे ८।१।४।

७।१०।११।२, गुरुसे ६।११।१२।१०, चंद्रसे ११।६।३, शुक्रसे ८

१२।११।६, बुधसे ५।११।६।३, शनिसे १।४।७।१०।८।९।११,  
सूर्यसे ३।६।१०।११।५, लग्नसे ३।११।६।१०।१ स्थानमें शुभफल देता है, इन शुभ  
फलप्रदस्थानमें रेखा देना और शेष स्थानमें शून्य देनेसे भौमका अष्टवर्ग होता है २४

अथ चंद्रस्याष्टवर्गांकाः ४९.							अथ भौमस्याष्टवर्गांकाः ३२								
र	च	मं	बु	गु	शु	श	ल	र	च	मं	बु	गु	शु	श	ल
३	१	२	१	१	३	३	३	३	३	१	३	६	६	१	१
६	३	३	३	४	४	५	६	५	६	२	५	१०	८	४	३
७	६	५	४	७	५	६	१०	६	११	४	६	११	११	७	६
८	७	६	५	८	७	११	११	१०	७	११	१२	१२	८	१०	
१०	१०	९	८	१०	९			११	८					९	११
११	११	१०	८	११	१०				१०					१०	
		११	१०	१२	११				११					११	

अथ बुधस्याष्टवर्गमाह ।

शुक्रादासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजाकैस्तपः-

केंद्रायाष्टधने स्वतोऽप्युपचयान्त्येकत्रिकोणे शुभः ।

कोणान्त्यारिभवे रत्रे रिपुभवाष्टान्त्ये गुरोरिन्दुतः

खायाष्टारिसुखार्थगः स्वखभवाष्टैकांबुषट्सूदयात् ॥ २६ ॥

अब बुधका अष्टवर्ग कहते हैंः-- शुक्रसे बुध १।२।३।४।५।९।  
११।८ वें स्थानमें शुभ फल देता है और मंगल शनिसे ९।१।४।७।१०।११।  
८।२, बुधसे ३।६।१०।११।१२।१।९।५, सूर्यसे ९।५।१२।६।  
११, गुरुसे ६।११।८।१२, चंद्रसे १०।११।८।६।४।२,  
लग्नसे २।१०।११।८।१।४।६ स्थानमें शुभफल देता है। इन उक्त  
स्थानोंमें रेखा देना और शेषस्थानमें बिंदु देनेसे बुधका अष्टवर्ग होता है ॥२५॥

अथ जीवस्याष्टवर्गमाह ।

स्वात्स्वायाष्टत्रिकेंद्रे स्वनवदशभवारातिधीस्थश्च शुक्रा-

ल्लगात्केन्द्रायधीषट्सवनवसु च कुजात्स्वाष्टकेंद्राय इज्यः ।

इन्दोर्द्यूनार्थकोणातिषु सहजनवाष्टायकेन्द्रार्थगोऽर्का-

ज्जात्कोणद्रयायखाद्याम्बुधिरिपुषु शनेरुयंत्यधीषट्सु शस्तः २६

अब गुरुका अष्टवर्ग कहते हैं:—गुरु अपने स्थानसे २।११।८।३।१७।७।१० वें स्थानमें, शुक्रसे २।९।१०।११।६।५, लग्नसे १।७।७।१०।११।५।६।२।९, भौमसे २।८।१।४।७।१०।११, चंद्रसे ७।२।९।५।११, सूर्यसे ३।९।८।११।१।४।७।१०।२, बुधसे ९।५।२।११।१०।१।४।६, शनिसे ३।१२।५।६ स्थानमें शुभफल देता है। इन स्थानोंमें रेखा देनेसे गुरुका अष्टवर्ग होता है ॥ २६ ॥

अथ बुधस्याष्टवर्गिकाः ५४.							अथ शुक्रस्याष्टवर्गिकाः ५६.							
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५	२	१	१	६	१	१	१	१	२	१	१	१	३	१
६	४	२	३	८	२	२	२	२	५	२	२	२	५	२
९	६	४	५	११	३	४	४	३	७	४	४	३	६	४
११	८	७	६	१२	४	७	६	४	७	५	४	९	१२	५
१२	१०	८	९		५	८	८	७	११	८	६	७	१०	६
	११	९	१०		८	९	१०	८	१०	९	८	११	७	९
		१०	११		०	१०	११	९	११	१०	१०	११	९	१०
		११	१२		११	११	११	१०	११	११	११	११	१०	११

अथ शुक्रस्याष्टवर्गमाह ।

खास्तान्त्याऽहितवर्जितेषु तनुतः शुक्रो विनास्तारिखं

चन्द्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टातिषु ।

मन्दाद्द्वयेकारिपुव्ययास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधी-

खे ज्ञात्कोणभवत्रिषट्सु भवधीन्त्यन्त्यारिधर्मे कुजात् ॥ २७ ॥

अब शुक्रका अष्टवर्ग कहते हैं:—शुक्र—लग्नसे १०।७।१२।६ स्थान

विना और स्थान ( १।२।३।४।५।८।९।११।) में शुभफल देता

है और शुक्रसे ७।६।१०। वें स्थान विना अन्य स्थानमें ( १।२।३।

४।५।८।९।११।१२।), चंद्रसे ७।१२।६। स्थान विना अन्य

स्थानमें ( १।२।३।४।५।८।९।१०।११), सूर्यसे १२।८।

११ स्थानमें, शनिसे २।१।६।१२।७ वें स्थान विना शेष स्थानमें

( ३।४।५।८।९।१०।११), गुरुसे ९।११।८।५।१०



में, बुधसे ९।५।११।३।६, वंगलसे ११।५।३।१२।६।९  
स्थानमें शुभफल देता है । इन शुभफलद स्थानोंमें रेखा देनेसे शुक्रका अष्ट-  
वर्ग होता है ॥ २७ ॥

अथ मन्दस्याष्टवर्गमाह ।

स्वान्मंदस्त्रिषडायधीषु रवितोऽष्टायद्विकेन्द्रे शुभो  
भौमात्स्वायषडन्त्यधीत्रिषु तनोः खायाम्बुषद्व्येकगः ।  
ज्ञादायारिनवांत्यखाष्टसु भृगोरन्त्यायषट्संस्थित-  
श्चन्द्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधीशत्रुगः ॥ २८ ॥

अब शनिका अष्टवर्ग कहते हैं:—शनि अपनी राशिसे ३।६।११।५  
स्थानमें, सूर्यसे ८।११।२।१।४।७।१० में, भौमसे १०।११।  
६।१२।५।३, लग्नसे १०।११।४।६।३।१, बुधसे ११।६।  
९।१२।१०।८, शक्रसे १२।११।६, चन्द्रसे ११।६।३, गुरुसे  
१२।११।५।६ स्थानमें शुभफल देता है । इन स्थानोंमें रेखा देना और  
अन्यत्र विंदु देनेसे शनिका अष्टवर्ग होता है ॥ २८ ॥

अथ शुक्रस्याष्टवर्गाकाः ५२							अथ शनिरष्टवर्गाकाः ३९						
र	च	मं	बु	शु	श	ल	र	चं	मं	बु	शु	श	ल
८	९	३०	३	५	१	१	३	३	६	५	६	३	१
११	१०	५	५	६	३	३	३	५	८	६	११	५	३
१२	३	६	३	९	३	६	३	६	९	११	१२	६	३
	४	९	९	१०	५	४	३	६	१०	१०	१३	६	३
	५	११	११	११	५	४	७	६	१०	१०	१३	६	३
	८	३३			८	५	८	६	११	११			१०
	९				९	९	९	९	१२	१२			११
	१०				११	९	११						
	११				१२	११							

शम्भुराप्रकाशादिग्रन्थोंमें लघ्वाष्टवर्ग भी विशेष कहा है ।

अथ लघ्वाष्टवर्गांकाः ४९.								
र	व	मं	कु	शु	शु	श	ल	
३	३	१	१	१	१	१	५	
४	६	२	२	२	२	२	६	
६	१०	६	४	४	६	६	१०	
१०	१२	१०	६	५	६	६	११	
११		११	८	६	५	१०		
१२			१०	७	८	११		
			११	९	९			
				१०	११			
				११				

स्थानानि यान्युक्तानि तेषु रेखा अन्यत्र बिन्दुः ॥२९॥

इति रेखाष्टकम् ।

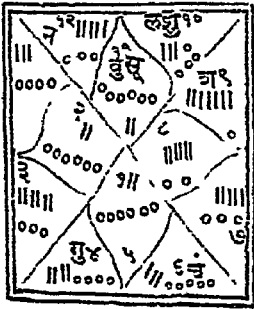
प्रथमं जिस ग्रहका अष्टवर्ग करना हो वह ग्रह जिस राशिमें स्थित हो उस राशिको आदि ले जन्मकुंडली ग्रहसहित लिखना, तदनंतर अपने अपने अष्टवर्ग जो जो स्थान शुभफलप्रद कहे हैं उन उन स्थानोंमें रेखा लिखना और अन्य स्थानोंमें बिंदु ( शून्य ) लिखना । इस प्रकार सूर्यसे लग्नपर्यंत आठ ही ग्रहोंके अष्टवर्ग बनाना, फिर बारहों राशियोंकी अष्टवर्गकी रेखाका योग पृथक् पृथक् करके अपनी अपनी रेखाका योग कुण्डलीमें लिखनेसे समुदायाष्टवर्ग होगा । तदनंतर इस समुदायाष्टवर्गमें मीनं मेष वृषभ मिथुन राशिमें जितनी जितनी रेखा हों उन सब रेखाओंका योग करना । ये योग १२० एक सौ बीससे अधिक आवे तो प्रथम वयमें सौख्यार्थ विशेष प्राप्त होगा । एवं कर्क सिंह कन्या तुला राशिकी सब रेखाका योग १२० एक सौ बीससे अधिक आवे तो तरुण अवस्थामें सुख अर्थप्राप्ति आदि विशेष होगा । इसीप्रकार वृश्चिक धन शक्र कुंभ राशियोंकी सब रेखाका योग १२० एकसौ बीससे अधिक आवे तो उत्तर वयमें सुख अर्थ प्राप्ति आदि शुभफल विशेष होगा और १२० एक सौ बीससे अल्परेखैक्य जिस अवस्थामें आवे उस अवस्थामें मध्यम फल होगा ऐसा जानना ॥ २९ ॥

१ शम्भुराप्रकाशे—“मीनाद्यं मिथुनांतकं प्रथमकं प्रोक्तं वयः प्राक्तनैः कर्काद्यं वणिजांतकं तरुणता संज्ञकं मध्यं बुधैः । कुम्भान्तं स्थविरांतकं च बहुभिर्यत्सफलैः संयुतं तत्सौख्यार्थविशेषदं बलयुते नन्दं विशेषाच्छुभम् ॥ ११ ॥

उदाहरण ।

सूर्यरेखाष्टक करना है—यहाँ सूर्य कुंभराशिका है, अतएव कुंभराशिकी आदि ले जन्म कुंडली ग्रहसहित लिखके श्लोक २२ के अनुसार शुभफलप्रद स्थानों-म रेखा, अन्यस्थानोंमें शून्य लिखी सब रेखाका योग किया तो ४८ हुआ । यह सूर्यका अष्टवर्ग हुआ । इसी प्रकार शेष ग्रहोंके अष्टवर्ग जानना ।

सूर्याष्टवर्गक्य ४८



रेखाष्टकचक्रम्											
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
३	३	६	४	३	३	५	६	७	३	२	५
६	५	४	५	३	४	४	६	३	२	४	३
४	१	७	४	२	३	३	४	६	३	१	३
५	३	७	४	३	३	६	४	६	६	५	३
५	७	३	४	२	५	७	५	३	४	६	४
६	५	३	४	४	५	३	५	४	५	५	४
३	४	३	३	३	३	३	६	५	३	४	३
३	६	३	३	४	३	३	६	५	४	४	६
३४	३३	३५	३१	३२	३७	३४	४२	३९	३९	३१	३०

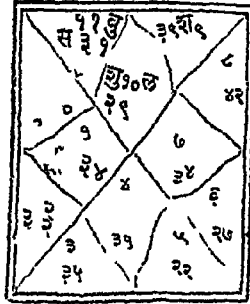
समुदायाष्टवर्ग-उदाहरण ।

जैसे मेषराशिके सूर्याष्टवर्गमें रेखा ३, चंद्राष्टवर्गमें ६, भौमाष्टवर्गमें ४, बुधाष्टवर्गमें ६, गुरुके अष्टवर्गमें ५, शुक्राष्टवर्गमें ६, शनिके अष्टवर्गमें २, लघ्नाष्टवर्गमें रेखा ३ है । इन आठ ही वर्गोंकी मेषराशिकी रेखाका योग किया तो ३४ हुए, इसी प्रकार बारहों राशियोंके अष्टवर्गकी रेखाका योग किया, इसको समुदायाष्टवर्ग जानना । इस समुदायाष्टवर्गमें मीनराशियें रेखा ३०, मेषमें ३४, वृषभमें ३२, मिथुनमें ३५ रेखा हैं, इनका योग किया १३१ आये । ये १२० से अधिक हैं, अतः प्रथमवयमें सुखार्थ वृद्ध्यादि श्रेष्ठ फल होगा । पूर्व कर्कमें ३१, सिंहमें २२, कन्यामें २७, तुलामें ३४ रेखा

हैं, इनका योग किया तो ११४ आये, ये १२० से अल्प हैं, इसलिये मध्यवयमें मध्यम फल होगा। इसी प्रकार वृश्चिक ३८, धन ३२, मकर २९ कुंभ ३५ राशियोंकी रेखाका योग किया तो १४१ आये, ये १२० से अधिक हैं, इसलिये अन्त्य वयमें सौख्यार्थप्राप्त्यादि श्रेष्ठ फल होगा, ऐसे ही सबमें जान लेना ।

इति रेखाष्टकम् ।

समुदायाष्टवर्गकुंडली.



शुभशुभफलचक्रम् ।		
आद्यावस्था	मध्यावस्था	अन्त्यावस्था
१३१	११४	१४१
श्रेष्ठ.	मध्यम	श्रेष्ठ.

अथ राश्मिसाधनमाह ।

सत्रिभं सायनार्कं सूर्यस्य व्यकेंद्रु चन्द्रस्य मध्यरूपष्टयोर्योगार्द्धं  
चलोच्चे हीनं भौमादिकानां चेष्टाकेंद्रम् ॥ तद्रसोर्ध्वमिनथा  
च्छुद्धं शेषर्क्षं सैकम् अंशाद्या द्विधा चेष्टारश्मिः ॥ ३० ॥

अत्र राश्मिसाधन कहते हैं—अयनांशयुक्त किये हुए स्पष्ट सूर्यमें तीन राशि युक्त करे तो सूर्यका चेष्टाकेंद्र होता है और स्पष्टचंद्रमेंसे स्पष्ट सूर्य हीन करनेसे चंद्रका चेष्टाकेंद्र होता है और भौमादिक ( भौम, बुध, गुरु, शुक, शनि ) मध्यम ग्रहका और स्पष्टग्रहका योग करके अर्ध (आधे) करना और अपने अपने चलोच्च ( शीघ्रोच्च ) में हीन करना ( सोधना ), सो भौमादि पंचताराग्रहोंका चेष्टा-

१ सोमदैवज्ञ—“ मध्यमार्कसहितं चलोकेन्द्रं स्याद्बुधस्य च सितस्य चलोच्चम् । मेदिनीतनयजीवशर्मानां मध्यमार्क उदितं च चलोच्चम् ॥ ” अर्थात् बुध शुक्रके मध्यम शीघ्र केंद्रमें मध्यमसूर्यको मिलानेसे बुध शुक्रका शीघ्रोच्च होता है और मंगल गुरु शनिका मध्यम अर्ध शीघ्रोच्च होता है ।

केन्द्र होता है वह चेष्टाकेन्द्र ६ राशिसे अधिक हो तो १२ बारा राशियोंमेंसे शोधना (निकाटना); शेष बचे उसकी राशिमें एक मिलाना और अंशादिकको द्विगुण करे तो चेष्टारश्मि होती है ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणामुच्चनीचराशीनाह ।

सूर्यात्स्युरुच्चाः क्रिय १ गो२ वृष १० स्त्रीदिकर्का ४ इत्य १२ जूका ७  
दशभि १० हुताशैः ३। गजाशिव-२८ मिर्वाणकुभिः १६ शरैर्भै २७  
नखै--२० लवैरस्तगतास्तु नीचाः ॥ ३१ ॥

अब ग्रहोंकी उच्चनीच राशिय कहते हैं—मेष १ राशिके १० अंश पर्यंत (सूर्य), वृषभ २ राशिके ३ अंशपर्यंत (चन्द्र), मकर १० राशिके २८ अंशपर्यंत (भौम), कन्या ६ राशिके १५ अंशपर्यंत (बुध), कर्क ४ राशिके ५ अंशपर्यंत (गुरु), मीन १२ राशिके २७ अंशपर्यंत (शुक्र), तुला ७ राशिके २० अंशपर्यंत (शनि) । सूर्यको आदिले ग्रह क्रमसे उच्चराशियोंके होते हैं और अपनी उच्चराशिसे सातमी राशिमें गये हुए नीचके होते हैं ॥ ३१ ॥

उच्चनीचराशिचक्रम्.							
र	च	मं	बु	गु	शु	श	
०	१	९	५	३	११	६	उच्चराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चअंश.
६	७	३	११	९	५	०	नीचराशि.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमनीचअंश.

अथ उच्चरश्मिसाधनमाह ।

ग्रहनीचांतरं कार्यं षड्भादूनं यथा तथा ।

द्विघोशादिः सरूपं बहुच्चरश्मिरयं स्मृतः ॥ ३२ ॥

अब उच्चरश्मि करनेकी रीति कहते हैं—जैसे छह राशिसे अल्पशेष रहते हो वैसे ही ग्रह और नीचके अंतर करना (ग्रहमेंसे नीच हीन करनेसे ६ से अल्प रहे तो ग्रहमेंसे नीच (हीन)करना और यदि नीचमेंसे ग्रहहीन करनेसे ६ राशिसे अल्प-शेष रहते हो तो नीचमेंसे ग्रहको हीन करना ) शेष बचे राश्यादिककी राशिके अंकोंमें १ मिलाना और अंशादिकको द्विगुण करनेपर उच्चरश्मि होती है ॥ ३२ ॥

अथ स्पष्टरश्मिसाधनमाह ।

चेष्टोच्चरश्मियोगार्द्धं स्फुटरश्मिः प्रकीर्त्यते ।

नखोनैक्ये दरिद्री स्याद्विशोर्ध्वं सम्पदन्वितः ॥ ३३ ॥

अब स्पष्टरश्मिसाधन कहते हैं:—चेष्टारश्मि और उच्चरश्मिका योग करके अर्ध (आधा) करना, जो आवे वह स्पष्टरश्मि कहाती है। उस स्पष्टरश्मिका ऐक्य २०बीससे अल्प आवे तो दरिद्री होता है और २०बीससे अधिक आवे तो सम्पदावान् होता है ॥ ३३ ॥

इति रश्मिसाधनम् ।

उदाहरण ।

सूर्य स्पष्ट १० । १६ । ५३ । ३९ में अघनांश २२।२९।० युक्त करनेसे ११।९।२२।३९ सायन सूर्य हुआ। इसकी राशिमें ३ तीन युक्त किये तो २। ९ । २२ । ३९ ये सूर्यका चेष्टाकेन्द्र हुआ। एवं चंद्रस्पष्ट ५ । २९ । १९ । ९ मेंसे स्पष्ट सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ हीन किया तो ७।१२।२६।१० ये चंद्रका चेष्टाकेन्द्र हुआ भौममध्यम ११।१२।३९।४८ भौमस्पष्ट ११।६।१४। ५४ का योग किया तो २२।१८।५४।४२ हुआ, इसको अर्ध किया तो ११।९।२७। २१ हुआ इसको भौमके चलोच्च (मध्यमसूर्य) १०।१५।३।२१ मेंसे हीन किया तो शेष ११।५।३६।० भौमका चेष्टाकेन्द्र हुआ। एवं बुधके मध्यमस्पष्टके योगके अर्ध १०। १२।५३ । ४९ को बुधके चलोच्च ( बुधशीघ्रकेन्द्र ११ । २३ । ३१। ९ में मध्यम सूर्य १० । १५।३।२१ को मिलाया तो १०।८।३४।३० यह बुधका शीघ्रोच्च हुआ ) १०।८।३४। ३० मेंसे हीन किया तो ११।२५।४०।४१ बुधका चेष्टाकेन्द्र हुआ, इसी प्रकार शेष ग्रहोंका चेष्टाकेन्द्र जानना। सूर्यके चेष्टाकेन्द्र २१।२२।३९ में १ राशि युक्त करके अंशादिकोंको द्विगुण किये तो ३। ३८।४५।१८ सूर्यकी चेष्टाराशि हुई। चंद्रका चेष्टाकेन्द्र ७।१२।२६।१० छः राशिसे अधिक है, अतएव १२ बारह राशिमेंसे शोधा शेष ४।१७।३३।५० हुए, इसी राशि ४ में १ मिलाया और अंशादिकोंको द्विगुण किये तो ५।३।५।७।४० चंद्रकी चेष्टारश्मि हुई। एवं भौमादिक ग्रहोंकी चेष्टारश्मि समझ लेना ॥

अथ चेष्टारश्मिचक्रम् ।							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
		११	१०	३	१०	८	मध्यम ग्रहाः
		१२	१५	२	१५	२३	
		३९	३	४०	३	४४	
		४८	२१	१	२१	४६	
		११	१०	३	९	८	स्पष्ट ग्रह.
		६	१०	०	१२	२४	
		१४	४४	४३	२६	४८	
		५४	१८	१	८	२३	
		२२	२०	६	१९	१७	मध्य स्पष्ट योग.
		१८	२५	३	२७	१८	
		५४	४७	२३	२९	३३	
		४२	३९	२	२९	९	
		११	१०	३	९	८	मध्य स्पष्ट योगार्थ.
		९	१२	१	२८	२४	
		२७	५३	४१	४४	१६	
		२१	४९	३१	४४	३४	
		१०	१०	१०	७	१०	चलोच्च.
		१५	८	१५	२१	१५	
		३	३४	३	६	३	
		२१	३०	२१	२	२१	
२	७	११	११	७	९	१	चेष्टा केन्द्र.
९	१२	५	२५	१३	२२	२०	
२२	२६	३६	४०	२१	२१	४६	
३९	१०	०	४१	५०	१८	४७	
३	५	१	१	५	३	२	चेष्टा रश्मि.
१८	३५	४८	८	३३	१५	४१	
४५	७	४८	३८	१६	१७	३३	
१८	४०	०	३८	२०	२४	३४	

उच्चरश्मिसाधन उदाहरण.

सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ सूर्य-  
की नीचराशि ६ । १० । ० । ०  
सूर्यसे नीचको हीन करनेसे ६  
छःराशिसे अल्पशेष बचता है, इसवास्ते  
सूर्यसे नीचको हीन किया ४ । ६ ।  
५३ । ३९ इसकी राशि ४ में एक  
मिलाया और अंशादिकोंको दोगुणे किये  
तो ५।१३।४७।१८ सूर्यकी उच्चरश्मि  
हुई । इसी प्रकार शेषग्रहोंकी उच्चरश्मि  
जाननी चाहिये ।

उच्चरश्मिचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ऐ.
५	२	५	२	६	४	४	
१३	७	४३	८	५१	३०	५०	
४७	२०	३०	३१	२६	५३	२३	
१८	२२	१२	२४	२	१६	१४	

स्पष्टरश्मि-उदाहरण ।

सूर्यकी चेट्टारश्मि ३। १८। ४५।

१८, सूर्यकी उच्चरश्मि ५। १३। ४७।

१८ का योग किया तो ८। ३२। ३२।

३६ हुए, इसको आधा किया तो ४। १६।

१६। १८ आये । यह सूर्यकी स्पष्टरश्मि हुई । इसीप्रकार शेष ग्रहोंकी स्पष्टरश्मि जानना । स्पष्टरश्मिका योग २० से अधिक है इस कारण संपदावान् होगा ऐसा फल समझना ॥ इति रश्मिसाधनम् ॥

अथ स्पष्टरश्मिचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ऐ.
४	३	३	१	६	३	३	२७
१६	५१	४६	३८	१२	५३	४५	३३
१९	१४	९	३५	२१	४	५८	३८
१८	१	६	१	११	५०	२४	५१

अथायुर्दायानयनमाह ।

कलीकृत्य ग्रहं तत्र द्विशतांशेऽर्कशेषकाः ।

समाः शेषात्तु मासाद्याद्वादशादिहतैः क्रमात् ॥ ३४ ॥

अथ आयुर्दाय आनयनकी रीति कहते हैं:-ग्रहकी कला करके उसमें २०० दोसौका भाग देना, जो लब्ध आवे उसमें १२ बारहका भाग देना, शेष बचे वह वर्ष जानना । तदनंतर कलाके दोसौका भाग देनेसे जो शेष बचे उनको क्रमसे १२ । ३० । ६० से गुणा करके २०० दोसौका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे मासादिक जानना अर्थात् शेषको प्रथम १२ बारहगुणा करना, २००का भाग देना जो लब्ध आवे उसे ही मास जानना और जो शेष बचे उनको ३०तीससे गुणा करना, २००का भाग देनेसे जो लब्ध आवे वही दिन होता है । फिर जो शेष बचे उनको ६० साठसे गुणा करना, २०० का भाग देने पर जो लब्ध आवे वही घटी होती है । फिर शेषको ६० साठसे गुणा करना और २०० का भाग देना जो लब्ध आवे उसे पल जानना चाहिये । ऐसे क्रमसे जो वर्षमासादिक

१-राशिको ३० तीसगुणी करके अंश मिलाना फिर उसको ६० साठ गुणा करके कला मिलानेसे होती है ।



आवे वह ग्रहकी वर्ष मास दिन घटी पल विपलात्मक मध्यायु समझना ॥३४ ॥  
इसप्रकार लग्नसहित सूर्यादिग्रहोंकी मध्यायुसाधन करके स्पष्टायुसाधनके संस्कार  
आगे कहते हैं—

स्थिरारिभे हरेत्र्यंशं वक्रचारं विना ग्रहः ।

शुक्रार्कजान्यस्त्वस्तस्य ह्यर्द्धं नीचक्षणे दलम् ॥ ३५ ॥

वक्रगति ग्रहके विना जो ग्रह स्थिरमैत्रीमें ( नैसर्ग—मैत्रीमें ) शत्रु राशिका  
हो उस ग्रहकी आयु हुई वर्षादि आयुमेंसे तृतीयांश ( अपना तीसरा हिस्सा )  
हीन करना और शुक्र शनिके विना अन्य (दूसरा ) ग्रह अस्तका हो तो उसकी  
आयुको आधा करना; नीच राशिका ग्रह हो तो उसकी आयु हुई आयुका  
दल ( अर्द्ध ) करना ॥ ३५ ॥

वक्रोच्चगे तत्रिगुणं द्विनिघ्नं वर्गोत्तमस्वांशकभत्रिभागे ।

द्वित्रिघ्नतायां त्रिगुणं सकृद्द्वै द्वित्र्यंशकोने द्विलवोनमायुः ॥३६॥

वक्रगति ग्रह हो वा उच्चराशिका हो तो उस ग्रहकी वर्षादि आयुको त्रिगुण  
( ३ तीनगुणी ) करना और वर्गोत्तमी हो वा स्वनवांशका हो वा स्वराशिका  
हो वा स्वद्रेष्काणका ग्रह हो तो आयु हुई वर्षादि आयुको द्विगुण ( दोगुणी )  
करना और यदि जिस ग्रहकी वर्षादि आयुको द्विगुण करनेका और त्रिगुण  
करनेका दोनों योग आवे तो उस ग्रहकी आयुको पृक्कु पृथक् २ दोगुणी और  
३तीनगुणी नहीं करना केवल १ एक ही बार त्रिगुण (तीनगुणी) करना । एवं  
ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे द्वितीयांश और तृतीयांश दोनों घटानेके योग आवे  
तो वर्षादिक आयुमेंसे केवल एक ही बार द्वितीयांश ( अपना अर्धभाग )  
हीन करना ॥ ३६ ॥

वामं व्ययात् सर्वदलत्रिपादं पंचाङ्गभागानशुभा हरन्ति ।

संतोऽर्द्धमर्द्धं सबलम्बहूनामेकक्षगानामिति सत्यवाक्यम् ॥३७॥

लग्नसे बारहमें १२ स्थानको आदि छे सप्तम स्थानपर्यंत उल्टे

१-आगे श्लोक ३९ में कहा है कि—जिस राशिका ग्रह हो उसी राशिके नवांशमें आवे तो उसे वर्गोत्तमी जानना ।

( १२ । ११ । १० । ९ । ८ । ७ ) स्थानोंमें अशुभ (पाप)ग्रह स्थित हो तो यथा-  
क्रम आयी हुई आयुर्दायमेंसे १२ सर्व (पूरी आयु ) ११ आधी १० तृतीयांश ९  
चतुर्थांश ८ पंचमांश ७ षष्ठांश हीन करना । अर्थात् लग्नसे बारहमें स्थानमें जो  
अशुभ (पाप) ग्रह स्थित हो उसकी जो वर्षादिक आयु आयी है वह सर्व हीन  
करना ( उस ग्रहकी आयु ० । ० शून्य शून्य लिखाना ) और ११ एकादश स्थानमें  
जो पापग्रह स्थित हो उसकी आयु जो वर्षादिक आयी है उसको आधी करना,  
एवं दशम १० स्थानमें जो पापग्रह स्थित हो उस ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे तृतीयांश  
( अपना तीसरा भाग ) हीन करना और ९ नवम स्थानमें पापग्रह स्थित हो तो  
उसकी वर्षादि आयुमेंसे चतुर्थांश ( अपनी वर्षादि आयुको चारका भाग देके जो आवे  
वह ) हीन करना, एवं ८ अष्टम स्थानमें जो पापग्रह स्थित हो उस ग्रहकी वर्षादि  
आयुमेंसे पंचमांश ( अपनी वर्षादि आयुके पांचका भाग देनसे आया हुआ जो  
पांचवा हिस्सा वह ) हीन करना । इसी प्रकार ७ सप्तम स्थानमें जो पापग्रह स्थित  
हो उसकी आयुमेंसे षष्ठांश ( अपना छठा हिस्सा ) हीन करना और ६ इन्द्र  
व्ययादि १२ । ११ । १० । ९ । ८ । ७ । स्थानोंमें शुभ ग्रह स्थित हो तो  
जो जो भाग अशुभ ग्रहकी आयुमेंसे हीन करनेको कहा है उसका आधा  
आधा भाग हीन करना अर्थात् बारहमें स्थानमें शुभ ग्रह स्थित हो तो उसकी  
वर्षादि आयुको आधी करना और ११ ग्यारहमें स्थानमें स्थित हो तो उसकी  
वर्षादि आयुमेंसे चतुर्थांश ( चौथा हिस्सा ) हीन करना । एवं १० दशम स्थानमें  
स्थित हो तो उसकी आयुमेंसे षष्ठांश ( छठा हिस्सा ) हीन करना और ९ नवम  
स्थानमें स्थित हो तो उसकी आयुमेंसे अष्टमांश ( आठवा हिस्सा ) हीन करना ।  
इसी प्रकार ८ अष्टम स्थानमें जो शुभ ग्रह स्थित हो उसकी वर्षादि आयुमेंसे  
दशम भाग ( वर्षादि आयुके १० दशका भाग देके जो दशांश आवे वह ) हीन  
करना । एवं सप्तम स्थानमें जो स्थित हो उसकी वर्षादि आयुमेंसे द्वादशांश ( अपना  
बारहवां हिस्सा ) हीन करना और इन्हीं व्ययादिक उक्त स्थानोंमें यदि एक  
राशिमें दो ग्रह स्थित हों वा बहुत ग्रह स्थित हों तो उनमेंसे जो ग्रह अधिक  
बलवान् हो उसी एक ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे जिस स्थानमें स्थितका जो भाग  
हीन करनेको पूर्व कहा है वह हीन करना, शेष ग्रहोंकी आयुमेंसे उस स्थानका  
भाग हीन नहीं करना, ऐसा सत्याचार्यका वचन है ॥ ३७ ॥

लग्ने बलाढ्ये सहितं च वर्षेस्तुल्यैर्विलग्नस्य गृहैर्विधेयम् ।  
भागादिना भास्करसंगुणेन युक्तं दिनाद्यं भवति स्फुटं तत् ॥३८॥

लग्न बलवान् हो तो लग्नकी वर्षादि मध्यायुके वर्षके अंक्रमें लग्नकी राशिकी संख्याके समान ( लग्न ० राशिका हो तो ० शून्य ९ राशिका हो तो ९ नव ऐसे जिस राशिका हो उतने ही ) वर्ष युक्त करना और लग्नके अंशादिक ( अंश कला विकला ) को १२ बारहसे गुणा करके उसी वर्षादि मध्यायुके दिनादिकमें युक्त करना, वह लग्नकी स्पष्टायु होगी और लग्न बलवान् नहीं हो तो जो मध्यायु आवे वही स्पष्टायु समझना ॥ ३८ ॥

चरभवनेष्वाद्यशाःस्थिरेषु मध्या द्विस्वभावेष्वन्त्याः वर्गोत्तमाः ॥३९॥

अब वर्गोत्तमराशि कहते हैं—चर( १।४।७।१० )राशियोंमें आद्य ( प्रथम ३।२० ) नवांशके अंश स्थिर ( २।५।६।११ ) राशियोंमें मध्य ( पांचवां १६।४० ) नवांशके अंश द्विस्वभाव ( ३।६।९।१२ ) राशियोंमें अंत्य ( नववां ३०।० ) नवमांशके अंश वर्गोत्तमांश होते हैं, अर्थात् चरराशिका ग्रह प्रथम नवांशमें हो तो वर्गोत्तमी होता है। एवं स्थिर राशिका ग्रह पांचवे नवांश १६।४० में हो तो वर्गोत्तमांशमें होता है और द्विस्वभाव राशिका ग्रह अंत्य नवांशमें ( २६।४० के उपरान्त ३०।० पर्यंत नवम नवांशमें ) हो तो वह वर्गोत्तमांशमें होता है ॥ ३९ ॥

स्वर्लकेंद्रोत्तमांशस्थाः स्वांशमित्रांशकान्विताः ।

परिपूर्णबलैर्युक्ताः स्वोच्चमूलत्रिकोणगाः ॥ ४० ॥

अब ग्रहोंका बल कहते हैं—स्वराशियोंमें स्थित केंद्र ( १।४।७।१० ) स्थानमें स्थित, शुभग्रहोंके नवांशमें स्थित, स्वनवांशमें स्थित, मित्रनवांशयुक्त और अपनी उच्चराशि ( श्लोक ३१ में कही है ) स्थित और मूलत्रिकोणराशियोंमें स्थित ग्रह परिपूर्ण बलवान् होता है ॥ ४० ॥

१-आगे श्लोक ४१ में कहा है ।

२-भारवल्याम्—“विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य । उच्चं भागत्रितयं वृष इन्दोः स्यात्त्रिकोणमपरेऽंशाः ॥१॥ द्वादशभागा ऋषे त्रिकोणमपरे स्वमं तु भौमस्य । उच्चमथो कन्यायां बुधस्य-

स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता होरा बलोत्कटा भवति ॥ ४१ ॥

अब लग्नका बल कहते हैं—लग्न अपने स्वामीसे अथवा बुधगुरुसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो बलवन् होता है ॥ ४१ ॥ लोमशोक्त सप्तवर्गबलसारणी चक्र समाप्तिमें दिया है उसमें भी ग्रहोंका सप्तवर्गबल जानना ॥ इत्यायुर्दायः ॥

उदाहरण ।

सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ की कला १९०१३ । ३९ में २०० दो सौका भाग दिया लब्ध ९५ आये, इनमें १२ बारहका भाग दिया शेष ११ रहे ये वर्ष हुए कलाके २०० का भाग देनेसे शेष १३ । ३९ बचे इनको १२ बारहगुणे किये १६३ । ४८ हुए इनमें २०० का भाग दिया लब्धशून्य मास आये शेष १६३ । ४८ को तीसगुणे किये ४९१४ । ० फिर २०० का भाग दिया लब्ध २४ दिन आये शेष ११४ । ० बचे इनको ६० साठगुणे किये ५८४० । ० हुए इनमें २०० का भाग दिया लब्ध ३४ घटी आयी

र	ख	म	बु	गु	शु	श	
६	१	०	५	८	६	१०	राशयः
मू २० स्व १०	उ ३ मू २७	मू १३ स्व १८	उ. १५ मू. ५ स्व १०	मू १० स्व २०	मू १५ स्व १५	मू २० स्व १०	अंशः

—तुंगांशकैः सदा चिन्त्यम् ॥ २ ॥ परतत्रिकोणजातं पञ्चभिरंशैः स्वराशिजं परतः । दशभिर्मंगिर्जीवस्य त्रिकोणं धनुषि तत्परं स्वगृहम् ॥ ३ ॥ शुक्रस्य च तिथयोऽशात्रिकोणमपरं स्वमं तुलायां तु । कुम्भे त्रिकोणं स्वगृहे रविजस्य स्वैर्यथा सिंहे ॥ ४ ॥” अर्थात् सूर्य सिंहराशिके २० वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका २० अंशके उपरांत शेष १० अंशमें स्वमृही होता है। चन्द्र वृषभके तीन ३ अंश पर्यंत उच्चफा ३ तीन अंशके अनन्तर शेष अंशमें मूलत्रिकोणका होता है, मीम मेषराशिके १२ अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १२ के अनन्तर शेष अंशमें स्वराशिका होता है, बुध कन्याराशिके १५ पंद्रह अंशपर्यंत उच्चका १५ पंद्रह अंशके अनंतर ५ पांच अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका ५ पांच अंशके अनंतर शेष अंशमें (२० अंशके अनंतर) स्वराशिका होता है, गुरु धनराशिके १० अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १० दश अंशके अनंतर शेष अंशमें स्वराशिका होता है, एवं शुक्र तुला राशिके १५ अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १५ पंद्रह अंशके अनंतर शेष अंशमें स्वराशिका होता है, शनि कुम्भराशिके २० वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणराशिका २० अंशके अनन्तर शेष १० अंशमें स्वराशिका जानना । इति ॥

शेष ४० । ० बचे इनको फिर ६० गुणे किये २४०० । ० हुए, इनमें २०० का भाग दिया लब्ध १२ पल आये ऐसे क्रमसे ११ । ० । २४ । ३४ १२ वर्षादि सूर्यकी मध्यायु आयी। इसी प्रकार शेष चंद्रादि ग्रहकी और लग्नकी वर्षादि आयु जानना—अब इसमें श्लोक ३५के अनुसार सूर्य स्थिरमैत्रीमें शत्रुकी राशीका है इसकारण सूर्यकी वर्षादि ११ । ० । २४ । ३४ । १२ आयु-

मध्यायुचक्रम् ।								
र	जं	मं	बु	शु	शु	श	ल	
११	५	१०	९	३	०	७	४	म-
०	९	१०	२	२	८	५	०	ध्या-
२४	१७	१४	१९	१७	२३	९	१५	यु
३४	४०	५९	४४	२५	२	५	३७	
१२	१२	१२	२४	४८	२४	२४	०	
शु	०	०	अस्त-	०	०	०	०	संस्कार
रा.३			अर्ध					र श्लो
भा.								३५
०	वर्गोत्त	०	स्वद्रे-	वक्र	स्व-द्रे	०	०	श्लो
			ष्काण	वक्र	ष्काण			३५
				वर्गोत्त				
	१ शु		२ शु	३ शु	२ शु			
				३ शु	२ शु			
				३ शु	२ शु			
०	नवमे	०	०	नवमे	०	वारमे	०	श्लो.
	२ चतु			६षष्ठां		सर्वही		३७
				श				
७	१०	१०	९	८	१	०	१३	स्प
४	१	१०	२	१०	५	०	९	ष्टा-
१६	३३	१४	१९	२	१६	०	२७	यु.
२२	३५	४२	४४	५५	४	०	१०	
४८	२१	१९	२४	५७	४८	०	०	

मेंसे अपना तृतीयां (तीन-का भाग देके) ३ । ८ । ८ ११ । २४ । घटाया ७।४ १६ । २२ । ४८ सूर्यकी स्पष्टायु हुई। चंद्रमा वर्गोत्तमी है इसकारण श्लोक ३६ के अनुसार इसकी आयु ५ । ९ । १७ । ४० । १२ को द्विगुण की ११ । ७ ५। २० । २४ । हुए इनमेंसे श्लोक ३७ के अनुसार चंद्र ९ नवम स्थानमें स्थित है इसलिये ४ चतुर्थांश हीन करना परंतु ये शुभ

ग्रह हैं इस कारण वर्षादि आयुके आठका भाग देके १ । ५ । ११ । ५५ । ३ आये हुए अष्टमांशको हीन किया १० । १ । २३ । २५ । २१ ये वर्षादि चंद्रकी स्पष्टायु आयी। भौमके श्लोक ३५। ३६ । ३७ के अनुसार कोई संस्कारका योग नहीं है इसकारण जो मध्यायु १०।१०।१४।४९।१२ है यही स्पष्टायु जानना। बुध अस्तका है इसलिये बुधकी आयु ९। २ । १९ । ४४ । २४ को आधी करके श्लोक ३६ के अनुसार ये स्वद्रेष्काणका है इसवास्ते दोगुणी की ९ । २ । १९ । ४४ । २४ ये बुधकी स्पष्टायु आयी।

एवं गुरु वक्रगति है इसकी आयुको श्लोक ३६ के अनुसार ३ तीनगुणी करनेका और उच्चराशिका है इस कारण फिर ३ तीनगुणी करनेका और यही गुरु वर्गोत्तमांशका है इसलिये फिर २ गुणी करनेका योग ३ तीन प्राप्त हुए, हैं अतएव "द्वित्रिघ्नतायां त्रिगुणं सकृद्वै" इसके अनुसार गुरुकी वर्षादि आयु ३।२।१७ । २५। ४८ को एक ही बार ३ गुणी की ९। ७। २२। १७। २४ हुई परंतु गुरु शुभग्रह है और ७ सप्तम स्थानमें स्थित है इसकारण इसमेंसे अपना बारहवाँ हिस्सा ०।९। १९। २१। २७ हीन किया ८। १०। २। ५५। ५७ ये गुरुकी स्पष्टायु हुई और शुक्र स्वद्रेष्काणका है इसलिये शुक्रकी आयु ०। २३। २। २४ को श्लोक ३६ के अनुसार द्विगुण करनेसे १। ५। १६। ३। ४८ आये ये शुक्रकी स्पष्टायु हुई। एवं शनि बारहमें स्थानमें स्थित है और यह अशुभ ग्रह है इसलिये इसकी आयु ५। ९। ५। २४। मेंसे सर्व (पूरी) आयु हीन की शेष ०। ०। ०। ०। ० यह शनिकी स्पष्टायु हुई। वा लग्न बलवान् है इसलिये लग्नकी वर्षादि आयु ४। ०। १५। २७। ० के वर्षके ४ अंकमें लग्नकी राशिके समान वर्ष ९ युक्त किये १३ वर्ष हुए, शेषमासादिक ०। १५। २७। ० में लग्नके अंशादिक २३। २८। ३५। को बारह गुणाकरके आये हुए मासादि ९। ११। ४३। ० युक्त किये १३। ९। २७। १०। ० ये वर्षादिक लग्नकी स्पष्टायु हुई ॥ इत्यायुर्दायः ॥ स्पष्टायुयोग ६१। ९। ०। ३२। ३० ॥

अथ स्पष्टांशायुचक्रम् ।								
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	ए.
७	१०	१०	९	८	१	०	१३	६१
४	१	१०	२	१०	५	०	९	९
१६	२३	१४	१९	२	१६	०	२७	०
२२	२५	४९	४४	५५	४	०	१०	३२
४८	२१	१२	२४	५७	४८	०	०	३०

दशासाधनमाह-

तत्रादौ ६ विंशोत्तरी दशा ।  
 रवेः षड्विंशोत्तरी १० सप्त ७ भूभुवो  
 गजेन्दवो-१८ गोर्धिवणस्य षोडश १६ ॥

शनेर्नवाब्जा १९ नगभूमिता १७ विदो

नगा ७ स्तु केतोरनलाब्रखाः २० कवेः ॥ ४२ ॥

अब दशासाधन कहते हैं, जिसमें प्रथम विंशोत्तरी कहते हैं—कृत्तिका नक्षत्रको आदिले क्रमसे प्रथम सूर्यकी ६ छह वर्षकी दशा, फिर चंद्रकी १० वर्षकी, मंगलकी ७ वर्षकी, राहुकी १८ वर्षकी, गुरुकी १६ वर्षकी, शनिकी १९ वर्षकी, बुधकी १७ वर्षकी, केतुकी ७ वर्षकी, शुक्रकी, २० वर्षकी दशा जानना ॥ ४२ ॥

विंशोत्तरीदशाचक्रम् ।								
सू ५	चं १०	मं. ७	रा. १८	गु. १६	श. १९	बु. १७	के ७	शु. २०
कृ उत्तर व	रो ह श्र	मृ चि ध	आ स्वा श	पुन वि प	पुण्य अ उ	आ ज्ये रे	म मू. अ	पू पू भ.

अष्टोत्तरीदशा ।

रवेः ६ षड्भिन्दोस्तिथयो १५ ऽष्ट भूभुवो

नगेन्दवो १७ ज्ञस्य शनेर्दिशो १० गुरोः ।

नवेन्दवो १९ ऽगो रवयः १२ समाः सिते

धराश्विनो २१ वेदहुताशभे शिवात् ॥ ४३ ॥

अष्टोत्तरीदशाके वर्षादि मान कहते हैं—आर्द्रानक्षत्रको आदि ले क्रमसे प्रथम चार नक्षत्र ( आ० पु० पु० आ.)की, सूर्यकी ६ वर्षकी दशा, फिर तीन नक्षत्र ( म. पू. उ. )की चंद्रकी १५ वर्षकी, फिर चार नक्षत्र ( ह. चि. स्वा. वि. ) की भौमकी ८ वर्षकी, फिर तीन नक्षत्र ( अ. ज्ये. मू. ) बुधकी १७ वर्षकी, फिर चार नक्षत्र ( पू. उ. ऽभि. श्र. ) की शनिकी १० वर्षकी, फिर तीन नक्षत्र ( ध. रा. पू. ) की गुरुकी १६ वर्षकी, तदनंतर चार नक्षत्र ( उ. रे. अ. म. ) की राहुकी १८ वर्षकी, तदनंतर तीन नक्षत्र ( क. रो. मृ. ) की शुक्रकी १६ वर्षकी अष्टोत्तरी दशा जानना ॥ ४३ ॥

अष्टोत्तरीदशा.							
र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
आ.	म.	ह.	अ.	पू.	घ.	उ.	कृ.
पु.	पू.	त्रि.	ज्ये.	उ.	श.	रे.	रो.
पु.	उ.	स्वा.	मू.	मि.	पू.	अ.	मू.
आ.		वि.		श्र.		भ.	

अथ योगिनी दशा ।

जनुर्भे त्रियुक्तेऽष्टतष्टे दशा मंगला पिंगला धान्यका भ्रामरी च ।

ततोभद्रिकोल्का च सिद्धा क्रमात्संकटासन्निषिद्धाःसमैकैकवृद्धाः४४॥

अब योगिनी दशा कहते हैं—जन्म नक्षत्रकी संख्यामें तीन मिलाना आठका भाग देना एकको आदि छे शेष बचे सो क्रमसे १ मंगल २ पिंगला ३ धान्या ४ भ्रामरी ५ भद्रिका ६ उल्का ७ सिद्धा ८ संकटा दशा एक एक वर्ष बढ़ती हुई एक श्रेष्ठ एक नेष्ट इस क्रमसे जानना ॥ अर्थात् मंगला एक १ वर्षकी श्रेष्ठ, पिंगला २ वर्षकी नेष्ट, धान्या ३ वर्षकी श्रेष्ठ, भ्रामरी ४ वर्षकी नेष्ट, भद्रिका ५ वर्षकी श्रेष्ठ, उल्का ६ वर्षकी नेष्ट, सिद्धा ७ वर्षकी श्रेष्ठ, संकटा ८ वर्षकी नेष्ट जानना ॥ ४४ ॥

योगिनीदशा.							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
चं.	र.	गु.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.
१	२	३	४	५	६	७	८
आ.	पु.	पु.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मू.
वि.	स्वा.	वि.	ज्यु.	म.	पू.	उ.	ह.
श्र.	ध.	श.	पू.भा.	ज्ये.	मू.	पू.पा.	उ.पा.
				उ.भा.	रे.		

शुक्लेगेऽर्कस्य होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा ।

कृष्णे चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥ ४५ ॥



अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ।

अब दशाके योग कहते हैं—शुक्लपक्षका जन्म हो और लग्नमें सूर्यकी होरा दिनमें जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा करना, एवं कृष्णपक्षमें जन्म और लग्नमें चंद्रकी होरा हो रात्रिसमयमें जन्म हुआ हो तो अष्टोत्तरी दशा करना ॥ ४५ ॥ इन दोनों योगोंका संभव नहीं हो तो योगिनी दशा करना और महादशा सदा ( सर्वदा ) करना ॥

अथ दशाभुक्तभोग्यानयनमाह ।

चन्द्रस्य लिप्ताः खाभ्रैर् ८०० लब्धाः स्युर्गततारकाः ॥ ४६ ॥

शेषा हताः स्वपाकाब्दैर्हारेणाप्ताः समादिकाः ।

गता दशा सा पाकाब्दे ऊनिता भोग्यसंज्ञिता ॥ ४७ ॥

अब दशाके भुक्त भोग्य लानेकी रीति कहते हैं—चंद्रमाकी कला करना आठसौका ८०० भाग देना, जो लब्ध आवे वह गतनक्षत्र जानना, शेष रहे कला उसको अपनी दशाके वर्षसे ( विंशोत्तरीके भुक्त भोग्य करना हो तो श्लोक ४२ के अनुसार कृत्तिकाको आदि ले गिननेसे जन्मनक्षत्र जिस ग्रहकी दशामें आया हो उस दशामें जन्म हुआ ऐसा जानना, जिस ग्रहकी दशामें जन्म हुआ उसके दशाके वर्ष जितने हों उतने वर्षसे और योगिनीके भुक्त भोग्य करना हो तो श्लोक ४४ के अनुसार जिस दशामें जन्म हुआ हो उसके वर्षसे, अष्टोत्तरी करना हो तो श्लोक ४३ के अनुसार जिस ग्रहकी दशामें जन्म हो उसकी जितने वर्षकी दशा हो उतने वर्षसे ) गुणी करना, हार ८०० का भाग देना, जो लब्ध आवे वह वर्ष जानना, शेष बचे उनको १२ बारह गुणे करना और ८०० आठसौका भाग देना लब्ध मास आवे शेषको ३० तीस गुणे करना ८०० आठसौका भाग देना लब्ध दिन आवे, शेष बचे उनको ६० साठ गुणे करना फिर ८०० आठसौका भाग देना जो लब्ध आवे वह घटी जानना, शेष बचे उसको फिर ६० साठ गुणा करना ८०० का भाग देना लब्ध आवे वह दल जानना । ऐसे आवे जो वर्षादिक वह गतदशा ( भुक्तदशा ) हो उस भुक्तदशाको दशाके वर्षमेंसे हीन करना ( सोधना ) शेष बचे वह भोग्य दशा समझना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

१—विंशोत्तरी और योगिनीसे कुछ भिन्न रीति है इस कारण अष्टोत्तरीके भुक्तभोग्य लानेकी रीति अलग आगे लिखी है ।

विंशोत्तरी दशाका उदाहरण ।

स्फट चन्द्रमा ५।२९।१९।४९ इसकी कला १०७५९ । ४९ इसके ८०० आठसौका भाग दिया लब्धः १३ आये यह गतनक्षत्रहस्त हुआ शेषकला ३५९ । ४९ वची इसको श्लोक ४२ के अनुसार कृत्तिकाको आदि ले गिननेसे जन्मनक्षत्र चिन्ना भौमकी दशामें आया इसलिये भौमके दशाके वर्ष ७ सातसे गुणे किये २५१८ । ४३ हुए इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध ३ वर्ष आये, शेष ११८ । ४३ वचे इनको १२ वारह गुणे किये १४२४। ३६ हुए, इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध एक मास आया शेष ६२४।३६ को ३० तीसगुणे किये १८७३८ । ० हुए ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध २३ दिन आये शेष ३३८ । ० वचे इनको ६० साठगुणे किये २०२८० । ० हुए इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध २५ घटी आयी शेष २८०।० को ६० साठगुणे किये १६८००। ० हुए, फिर इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध २१ पल आयी शेष० शून्य वची । इसप्रकार वर्षादि ३।१।२३।२५।२१ भौमकी भुक्त दशा आयी, इसको दशाके वर्ष ७ मेंसे घटायी शेष ३।१०।६।३४। ३९ वची यह भौमकी भोग्य दशा हुई ॥

विंशोत्तरीदशायन्त्रम्.						
भौ. भु.	भौ. भो.	रा.	गु.	का.	दु.	
७	७	१८	१६	१९	१७	
३	३	२१	३७	५६		षयोग- तषर्षादि
१	१०	१०	१०	१०		
२३	६	६	६	६		
२५	३४	३४	३४	३४		
२१	३९	३९	३९	३९		
१९२८	१९३२	१९५०	१९६६	१९८५		संवत्
१७९३	१७९७	१८१५	१८३१	१८५०		ज्ञक.
१०	८	८	८	८		लत्तीर्णांक.
१६	२३	२३	२३	२३		
५३	२८	२८	२८	२८		
३९	१८	१८	१८	१८		

योगिनी दशाका उदाहरण ।

जन्म नक्षत्रकी संख्या १४ में तीन १ मिलाने १७ हुए आठका भाग दिया शेष १ बचा इसलिये १ पहली मंगला दशा वर्ष १ की में जन्म हुआ, इसके वर्ष १ एकसे चंद्रमाकी कला १०७५९ । ४९ के आठसौका भाग देनेसे शेष बचे ३५९ । ४९ इनको गुणे किये ३५९ । ४९ हुए, इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध ० शून्य वर्ष आया, शेष ३५९ । ४९ को क्रमसे १२ । ३० ६० । ६० गुणे करके ८०० का भाग देके विंशोत्तरीवत् मासादिक लाये यह योगिनी मंगलाकी भुक्त दशा हुई ० । ५१ ११ । ५५ । ३ इसको मंगलाके वर्ष १ मेंसे हीन किया शेष ० । ६१८ । ४ । ५७ यह भोग्य दशा हुई ।

## योगिनीदशाचक्रम्.

मं.भु.	मं.भो.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	
चं.	चं.	र	गु.	मं.	बु.	का.	शु.	रा.	
१	१	२	३	४	५	६	७	८	
०	०	२	५	९	१४	२०	२७	३५	
५	६	६	६	६	६	६	६	६	षयो.
११	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	गत-
५३	४	४	४	४	४	४	४	४	वर्षी.
३	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	
१९२८	१९२९	१९३१	१९३४	१९३८	१९४३	१९४९	१९५६	१९६४	संवत्
१७९३	१७९४	१७९६	१७९९	१८०३	१८०८	१८१४	१८२१	१८२९	शक.
१०	५	५	५	५	५	५	५	५	
१६	४	४	४	४	४	४	४	४	उत्ती-
५३	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	र्णांक.
३९	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	४.
	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	फलम्

अष्टोत्तरीदशा वनांकी रीति कहत हैं-

प्रथम चंद्रमाकी कला करना उसमें ८०० आठसौका भाग देना, जो लब्ध आवे वह गत नक्षत्र जानना, शेष कला बचे उसको श्लो० ४३ के अनुसार जिन ग्रहकी दशमें जन्म हुआ हो उस ग्रहके दशाके वर्षोंसे गुणन करके आठसौ ८०० का भाग देके विंशोत्तरी दशावत् वर्षादभुक्त दशा लाना । तदनंतर उस भुक्त दशामें जितने नक्षत्रकी दशा हो उतनेका ( चार नक्षत्रकी हो तो ४ चारका तीन ३ की हो तो ३ तीनका ) भाग देके वर्षादिक ५ फल लाना.

जो आवे वह एक नक्षत्रकी भुक्तदशा समझना फिर जितने नक्षत्रकी दशा हो उसमेंसे जितनी संख्याके नक्षत्र गत हों उतनी संख्यासे ( १ एकगत हो तो १ से दो हो तो २ दोसे ३ हो तो ३ तीनसे ) जितन वर्षकी दशा हो उन वर्षोंको गुणे करना और उसमें चार नक्षत्रकी दशा हो तो ४ का, तीनकी हो ३ तीनका भाग देना जो आवे वह वर्ष मास ऊपर आयी हुई एक नक्षत्रकी भुक्तदशाके वर्षमासमें मिलाना सो स्पष्ट भुक्त दशा होवे उस भुक्तदशाको दशाके वर्षमेंसे हीन करना भोग्य दशा होवे परंतु चन्द्रमाकी कला १५२०० पंदरा हजार दोसौसे अधिक हो तो चंद्रमाकी कलामेंसे १५२०० पंदरा हजार दोसौ घटादेना शेष कला बचे

। शनिदशानक्षत्रध्रुवखंडाचक्र.

पू. वा.	उ. पा.	अभि.	श्रव.	नक्षत्र.
८००	६००	२५३	७४६	ध्रुवखंड
०	०	२०	४०	लाका
२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	दशा. मा.

उसमेंसे क्रमसे नीचे लिखे हुए कोष्ठकमें जो नक्षत्रोंके ध्रुवके खंड हैं वे शोधना ( हीन करना ) जितने खंड निकले उतने निकालना, जो खंड नहीं निकले वह अशुद्ध खण्ड समझना। शेष बचे कला उसको ३० तीसगुणी करना और अशुद्ध खण्डका भाग देके मास

दिन घड़ी पलात्मक चारफल लाना । यदि मास १२ बारासे अधिक हो तो मासमें १२ बाराका भाग देना लब्ध आवे वह वर्ष शेष मासादि समझना। ऐसे आये हुए वर्षादिकमें जितनी संख्याके खण्ड निकले हो उतनी ही प्रत्येक संख्याके २ वर्ष ६ मास मिलाना ( अर्थात् एक खण्ड निकला हो तो २ वर्ष ६ मास, दो खण्ड निकला हो तो ५ वर्ष, तीन खण्ड निकले हों तो ७ वर्ष ६ मास ) आवे वह शनिकी भुक्तदशा समझना, उसको अपने दशाके वर्ष १० मेंसे घटानेसे भोग्यदशा होवेगी, यह रीति केवल चन्द्रमाकी कला १५२०० पंदरा हजार दोसौसे १७६०० सतरा हजार छः सौ पर्यंत हो वहांतक ही करना शेषमें नहीं करना, अष्टोत्तरीदशाके भुक्त भोग्य होंगे इति ।

अष्टोत्तरीदशा—उदाहरण.

स्पष्ट चंद्रमा ५। २९, १९ । ४९ इसकी कला १०७६९ । ४९ हुई इसमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध १३ गत नक्षत्र आया शेष ३५९।४९ बचे इनको श्लोक ४३ के अनुसार हस्तको आदि ले चार नक्षत्रकी भौमकी दशामें जन्म नक्षत्र चित्रा मिलता है इसलिये भौमकी दशाके वर्ष ८ आठसे गुणे किये २८।७८

३२ हुए। इनमें ८०० आठसौका भाग देके विंशोत्तरीदशावत् वर्षादि ३।७।५  
 २५।२४। लाये इनमें भौमदशा ४ नक्षत्रकी है इसलिये चारका भाग दिया लब्ध  
 वर्षादि०।१०।२३।५१।२१ आये यह एक नक्षत्रकी भुक्त दशा हुई, तदनंतर यह  
 चार नक्षत्रकी दशा है इसमेंसे १ हस्त नक्षत्र गत है इसकारण १ एकसे दशाके  
 वर्ष ८ को गुणे किये ८ हुए इनमें चारका भाग दिया लब्ध २ वर्ष आये ये  
 एक नक्षत्रकी ऊपरकी आयी हुई भुक्तदशा०।१०।२३।५१।२१के वर्ष०में युक्त  
 किया सो वर्षादिक २।१०।२३।५१।२१ भौमकी स्पष्ट भुक्त दशा हुई। इसको  
 भौमके दशाके वर्ष ८ मेंसे घटाये शेष ५।१।६।८।३९ भोग्यदशा हुई।

### शानिकी दशाका कल्पित उदाहरण.

शानिकी अष्टोत्तरीदशासाधन अभिजित्नक्षत्र होनेके कारण भिन्नरीतिसे किया  
 जाता है उसके बनानेकी युक्ति प्रथम कही ही है परंतु बालकोंके सुबोधार्थ उसका  
 एक कल्पित उदाहरण कहते हैं.--स्पष्टचन्द्र १।१६।४०।१० इसकी कला-  
 १७२०० सतरह हजार दोसौ है यह कला पन्द्रह हजार दोसौ १५२००।०  
 से अधिक है इसकारण चंद्रकी कला १७२०० मेंसे १५२००।० पन्द्रह हजार दोसौ  
 घटा दिये शेष २०००।० कला बची इसमेंसे पूर्वाषाढाके श्रुवके खंडके अंक ८००।०  
 आठसौ घटाये शेष १२०००।० बचे इसमेंसे फेर उत्तराषाढाके खंडके अंक ६००  
 छसौ घटाये शेष ६००।० बचे इसमेंसे फेर अभिजित्तके खंडके अंक २५३।२०  
 घटाये ३४६।४० शेष बचे इसमेंसे ४ चतुर्थ खंड श्रवणके अंक ७४६।४०  
 नहीं निकलते हैं, इसलिये ये अशुद्धखंड हुआ शेष कला ३४६।४० को ३० तीस  
 गुणा करनेसे १०४००।० हुए इनमें अशुद्ध खंड ७४६।४० का भाग देके मा-  
 सादि चार फल लाना है परंतु ये दोनू भाज्य भाजक है कलादिक है इसलिये  
 सर्वाणित किये भाज्य ६२४००० भाजक ४४८०० सर्वाणित हुए भाज्य  
 ६२४००० में भाजक ४४८०० का भाग देके मास दिन घटी पलात्मक  
 चार फल लाये १३।२७।५१।२५ आये-मास १३ बारासे  
 अधिक है इसकारण १३ में, बाराका भाग दिया लब्ध १ वर्ष शेष १ मास  
 हुआ। ऐसे वर्षादिक १।१।२७।५१।२५ आये इनमें पूर्वाषाढा उत्तराषाढा

और अभिजित् इन तीन नक्षत्रोंके ध्रुवखंड कलामेंसे सुधे हैं इसलिये ७ सातवर्ष  
दृष्टःमास मिलाये सो वर्षादि ८ । ७ । २७।५१।२५। शनिकी भुक्तदशा आयी  
इसको दशाके वर्ष १० मेंसे हीन की शेष १ । ४ । २ । ८ । ३५वर्षादि भोग्य  
दशा हुई ॥ इति अष्टोत्तरीदशोदाहरणम् ॥

अष्टोत्तरीदशाचक्रम्.						
मं. भु.	मं. भो.	बु.	ज्ञ.	गु.	रा.	
८	८	१७	१०	१९	१२	
२	५	३२	३२	५१	६३	वयोग- तर्षादि
१०	१	१	१	१	१	
२३	६	६	६	६	६	
५१	८	८	८	८	८	
२१	३९	३९	३९	३९	३९	
१९२८	१९३३	१९५०	१९६०	१९७९	१९९१	संवत्
१७९३	१७९८	१८१५	१८२५	१८४४	१८५६	शक.
१०	११	११	११	११	११	दत्तीर्णांक.
१६	२३	२३	२३	२३	२३	
५३	२	२	२	२	२	
३९	१८	१८	१८	१८	१८	

अथान्तर्दशासाधनमाह ।

दशा दशाहता कार्या स्वस्वमानेन भाजिता ।

लब्धमन्तर्दशा ज्ञेया वर्षाद्याः क्रमशो बुधैः ॥ ४८ ॥

अब अंतर्दशा बनानेकी युक्ति कहते हैं—दशाके वर्षको दशाके  
वर्षसे गुणन करना और अपनी अपनी दशाके मानका भाग देना  
लब्ध वर्षमासादिक आवे वह क्रमसे अपनी अपनी दशामें पंडित लोगोंने  
अंतर्दशा जानना. अर्थात् विंशोत्तरी महादशामें जिस ग्रहमें अंतर्दशाचक्र  
बनाना हो उस ग्रहके दशाके वर्षको विंशोत्तरीके ९ नव ही ग्रहोंके  
दशाके. वर्षसे क्रमसे गुणन करना और विंशोत्तरी महादशाके मानका ( १२०  
एकसौ बीसका ) भाग देना । एवं अष्टोत्तरीमें जिस ग्रहमें अन्तर्दशाचक्र बनाना  
हो उस ग्रहके दशाके वर्षको अष्टोत्तरीके आठ ही ग्रहोंके दशाके वर्षसे  
क्रमसे गुणन करना और अष्टोत्तरीके मानका ( १०८ एकसौ आठका ) भाग

देना । ऐसे ही योगिनी दशामें जिस दशामें अंतर्दशाचक्र बनाना हो उस दशाके वर्षको योगिनीके आठ ही दशाके वर्षके क्रमसे गुणन करना और योगिनी दशाके मानका ( ३६ छत्तीसका ) भाग देना । ऐसे जिस दशामें अंतर्दशा करना हो उसका जो मान हो उसीका भाग देके क्रमसे वर्ष मासादि छाना जो आवे वह अपनी अपनी दशामें अपनी अपनी अंतर्दशा जानना ॥ ४८ ॥

उदाहरण ।

जैसे विंशोत्तरी सूर्यमहादशामें अंतर्दशाचक्र बनाना है सूर्यमहादशाके वर्ष ६ है इस महादशाके वर्ष ६ को सूर्य दशाके वर्ष ६ से गुणन किये ३६ हुए, इनमें विंशोत्तरी दशाके मान १२० का भाग दिया लब्ध ० वर्ष शेष ३६ को १२ वारागुणे किये ४३२ हुए १२० का भाग दिया लब्ध ३ मास आये शेष ७२ वचे इनको ३० तीस गुणे किये २१६० हुए, इनमें फिर १२० का भाग दिया लब्ध १८ दिन आये शेष ० वची इसको ६० गुणा करके १२० का भाग दिया लब्ध ० । ० घटी पल आये, ऐसे वर्षादिक ० । ३ । १८ । ० । ० सूर्य महादशामें सूर्यकी अंतर्दशा आयी । फिर सूर्य दशाके वर्ष ६ को चंद्रमहादशाके वर्ष १० से गुणे किये ६० हुए इनमें १२० एकसौ बीसका भाग देके वर्षादिक क्रमसे लाये ० । ६ । ० । ० । ये सूर्य महादशामें चंद्रकी अंतर्दशा आयी—एवं दशाके वर्ष ६ को भौमदशाके वर्ष ७ सातसे गुणे किये ० २ हुए १२० एकसौ बीसका भाग देके वर्षादिक लाये ० । ४ । ६ । ० । ० सूर्यमें भौमकी अंतर्दशा आयी । ऐसे ही फिर सूर्य महादशाके वर्ष ६ को राहुदशाके वर्ष १८ अठरासे गुणन करनेसे १२८ आये इनमें दशाके मान १२० का भाग दिया लब्ध ० १० । २४ । ० । ० । सूर्य महादशामें राहुकी अंतर्दशामें आयी । इसीप्रकार दशाके वर्ष ६ को गुरुदशाके वर्ष १६ से गुणके १२० का भाग देनेसे ० । ९ । ० । ८ । ० । ० । वर्षादिक सूर्यमें गुरुकी तथा शनिके वर्ष १९ से दशाके वर्ष ६ को गुणन करके दशाके मान १२० का भाग देनेसे वर्षादि ० । ११ । १२ । ० । ० । शनिकी अंतर्दशा तथा बुधके वर्ष १७ से दशाके वर्ष ६ को गुणन करके १२० का भाग देनेसे ० । १० । ६ । ० । ० । सूर्यमें बुधकी अंतर्दशा तथा दशाके वर्ष ६ को केतुकी दशाके वर्ष ७ से गुणके १२० का भाग देनेसे ० । ४ । ६ । ० । ० । केतुकी ऐसे ही दशाके वर्ष ६ को शुक महादशाके वर्ष २० से गुणन करके





( ७६ )

पञ्जीमार्गप्रदीपिका ।

( अष्टोत्तरीमहादशामध्यंतर्दशाचक्राणि )

सूर्यमध्यंतर्दशा.								चंद्रमध्यंतर्दशा.							
र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
०	०	०	०	०	१	०	१	२	१	२	१	२	१	२	०
४	१०	५	११	६	०	८	२	१	१	४	४	७	८	११	१०
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	९	०	०	०
व. मा. दि. घ. प.															
भौममध्यंतर्दशा.								बुधमध्यंतर्दशा.							
मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
०	१	०	१	०	१	०	१	२	१	२	१	३	०	२	१
७	३	८	४	१०	६	५	१	८	६	११	१०	६	११	४	३
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	४०	४०	०	०	०	२०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
व. मा. दि. घ. प.															
शनिमध्यंतर्दशा.								गुरुमध्यंतर्दशा.							
श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
०	१	१	१	०	१	०	१	३	२	३	१	२	१	२	१
११	१	१	११	६	४	८	६	४	१	८	०	७	४	११	१
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०	०	०	०	४०	४०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
व. मा. दि. घ. प.															
राहुमध्यंतर्दशा.								शुक्रमध्यंतर्दशा.							
रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु	शु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
१	२	०	१	०	१	१	३	४	१	२	१	३	१	३	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१	१	११	६	३	११	८	४	४
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
व. मा. दि. घ. प.															
योगिनी महादशामध्यंतर्दशाचक्राणि.															
मंगलामध्यंतर्दशा.								पिंगलामध्यंतर्दशा.							
मं	पि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं	पि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं
०	०	१	१	१	२	२	२	१	२	२	३	४	४	५	०
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
व. मा. दि. घ. प.															
धान्यामध्यर्दशा.								भ्रामरीमध्यर्दशा.							
धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पि	धा	भ	उ	सि	सं	मं	पि	धा
३	४	५	६	७	८	१	२	५	६	८	९	१०	१	२	४
०	०	०	०	०	०	०	१०	२०	०	०	१०	२०	१०	२०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
व. मा. दि. घ. प.															

भद्रिकामध्यैतर्दशा.								उल्कामध्यैतर्दशा.							
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भा.	भ.
८	१०	११	१३	१	३	५	६	१२	१४	१६	२	४	६	८	१०
१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सिद्धामध्यैतर्दशा.								संकटामध्यैतर्दशा.							
सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पि.	धा.	भा.	भ.	उ.	सि.
१६	१८	२	४	७	९	११	१४	२१	२	५	८	१०	१३	१६	१८
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथांतर्दशामध्ये विदशानयनप्रकारमाह ।

अन्तर्दशाया दिवसाः स्वस्ववर्षैः क्रमाद्धताः ।

स्वमानाब्दैर्हताः प्राप्ता विदशा दिवसादिकाः ॥ ४९ ॥

अब विंशोत्तर्यादि दशाकी अंतर्दशामें दिदशा करनेका प्रकार कहते हैं । अंतर्दशाके दिनोंको अपने २ वर्षोंसे (विंशोत्तरीकी अंतर्दशाके दिनोंकी विंशोत्तरीके सूर्यादि ग्रहोंके वर्षसे अष्टोत्तरीकी अंतर्दशाके दिनोंको अष्टोत्तरीके सूर्यादिग्रहोंके वर्षसे योगिनीकी अंतर्दशाके दिनोंको योगिनीकी मंगलादिदशाके वर्षोंसे) क्रमसे गुणन करना और अपने अपने दशमानके वर्षोंका (विंशोत्तरीकी अंतर्दशामें विदशासाधनमें विंशोत्तरीके मानके १२० एकसौ बीसका, एवं अष्टोत्तरीमें १०८का योगिनीमें ३६ का) भाग देना, जो लब्ध आवे वह दिवसादिक (दिनादिक) विदशा जानना ॥ ४९ ॥















बुधमध्ये शुर्वतरं तन्मध्ये विदशा.										बुधमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									
सु	श	बु	के	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	वं	मं	रा	श	मा.	
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	मा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.	

केतुमध्ये केरवंतरं तन्मध्ये विदशा.										केतुमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									
के	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतुमध्ये रव्यंतरं तन्मध्ये विदशा.										केतुमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									
र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	वं	मं	मा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.	

केतुमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा.										केतुमध्ये राहंतरं तन्मध्ये विदशा.									
मं	रा	श	बु	के	शु	र	वं	मं	रा	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतुमध्ये शुर्वतरं तन्मध्ये विदशा.										केतुमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	श	बु	के	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	वं	मं	रा	श	मा.	
१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	१	०	१	०	१	१	मा.	
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	दि.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.	

केतुमध्ये वीर्यांतरं तन्मध्ये विदशा.										शुक्रमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	श	बु	के	मं	रा	श	बु	के	शु	शु	र	वं	मं	रा	श	बु	के	शु	मा.
१	०	१	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	मा.
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	दि.
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	घ.
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	प.

शुक्रमध्ये रज्यतरं तन्मध्ये विदशा ।										शुक्रमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा ।									
र	जं	मं	रा	शु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	शु	श	बु	के	शु	र	मा.
०	१	०	१	१	१	१	०	२	१	१	१	३	२	३	२	१	३	१	मा.
१८	०	२१	२४	१८	१७	२१	२१	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	व.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.
शुक्रमध्ये भौनांतरं तन्मध्ये विदशा ।										शुक्रमध्ये राहंतरं तन्मध्ये विदशा ।									
मं	रा	शु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	शु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	मा.
०	२	१	२	१	०	२	०	१	५	५	४	५	५	२	६	१	३	२	मा.
२८	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	१३	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	२	दि.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	व.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.
शुक्रमध्ये सुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।										शुक्रमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा ।									
शु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	मा.	
४	५	४	१	५	१	२	१	४	६	५	२	६	१	३	५	५	५	मा.	
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दि.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	व.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.	
शुक्रमध्ये सौम्यांतरं तन्मध्ये विदशा ।										शुक्रमध्ये क्रांतवतरं तन्मध्ये विदशा ।									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	शु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	शु	श	बु	मा.	
४	१	५	१	२	१	५	४	५	०	२	०	१	०	२	१	२	१	मा.	
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दि.	
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	व.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.	

इति विंशोत्तरीमध्ये सर्वेषां ग्रहाणामंतर्दशामध्ये विदशा-एवमष्टोत्तर्यादीनामपि ज्ञेया ।

ऊर्ध्वं स्थाप्यो जन्मशाकः शकाधो जन्मोत्पन्नः पद्मिनीप्राणनाथः ।  
तद्दर्पाद्यंतर्दशाब्दादियुक्तं तस्मिन्शाके स्पष्टसूर्यो दशांते ॥ ६० ॥

अब भुक्त भोग्यदशा अंतर्दशा विदशामें जन्मका शक और स्पष्टसूर्य जोड़नेकी रीति कहते हैं—ऊपर जन्मका शक लिखना और शकके नीचे जन्मसमयका स्पष्टसूर्य लिखना, उसमें वर्षादिक भोग्यदशा युक्त करनेसे भोग्यदशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होता है। ऐसे ही दशाके आरंभका शक और सूर्य

अंतर्दशामें युक्त करनेसे अंतर्दशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होता है और अन्तर्दशाके आरम्भका शक और सूर्य विदशामें युक्त करनेसे विदशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होता है ॥ ५० ॥

उदाहरण ।

स्पष्ट है, विशोचरी योगिनी अष्टोत्तरी दशाके चक्रमें शक और सूर्य युक्त किया है उन चक्रोंसे समझना ।

इति दशांतर्दशाविदशानयनप्रकारः ।

अथागाभ्यन्दसाधनम् ।

सौरवर्षदिनाद्येन हतेताब्दाः कतुल्यजः ।

जन्मोत्थद्युगणेनाढ्या इज्याद्वर्षमुखे गणः ॥ ५१ ॥

अब आगाभि वर्ष साधन कहते हैं—दिनादिक सौरवर्ष ३६५।१५।३१।३० से गतवर्षोंको गुणन करना और उसमें जन्मसमयका ब्रह्मतुल्यका सावयव अहर्गण युक्त करना, गुरुवारकां आदि छे वर्षके आरम्भसमयका सावयव(वर्षप्रवेशकी इष्टवटी पल विपल सहित ) अहर्गण होगा ॥

विश्वनाथः ।

गणोघस्त्रियुक् स्वाक्षिगोंगांशयुक्तस्त्रिषट्भक्त आत्तावमैर्युक्त-  
ऊर्ध्वः॥स्वराभैर्हता सैकशेषं तिथिः स्यात्फलं मासवृन्दं ततोऽधो  
द्विनिघात् ॥ ५२ ॥ रसागान्वितस्वेभनेत्रांक ९२८ लब्धा विही-  
नादगाङ्गा ६७ सभागोन ऊर्ध्वः ॥ हतो भाजुभिः १२ शेषकं  
यातमासा गताब्दाः फलं सेषुस्वेषः ११०५ शकः स्यात् ॥ ५३ ॥  
अहर्गणको नीचे लिखके उसमें ३ तीन लिखाना और २ दो जगे  
लिखना, एक जगे स्थापन किये उसमें ६९२ छः सौ बानवेका भाग देना, लब्ध

१ ब्रह्मतुल्यका अहर्गण बनानेकी युक्ति आगे श्लोक ५४ में कही है ।

२ जन्मसमयकी इष्टवटी पल विपल सहित ।

३ अहर्गणके सातका भाग देना शेष० बचे तो गुरुवार १ बचे तो शुक्रवार २ बचे तो शनिवार इसक्रमसे गुरुवारको आदिले शेष बचे उसपर्यंत गिननेसे वर्षप्रवेशका वार होता है ।

आवे वह दूसरी जगे लिखे हैं उसमें युक्त करना और उसके ६३ तिरस्रठका भाग देना लब्ध आवे वह ऊनाह जानना । ऊनाहको ऊपर लिखे हुए अहर्गणमें युक्त करना और ३० तीसका भाग देना शेष बचे उनमें १ एक मिलाना सो शुद्ध प्रतिपदाको आदि ले वर्षप्रवेशकी तिथि हो और लब्ध आवे वह मासगण जानना—फिर मासगणको नीचे लिखना । और उसको दोरगुणा करना, फिर उसमें ६६ छासठ मिलाके दो जगे लिखना एक जगे ९२८ चौसौ अट्ठाईसका भाग देना लब्ध आवे वह दूसरी जगे लिखे हुएमेंसे हीन करना शेष बचे उसमेंके ६७ सतसठका भाग देना लब्ध आवे वह ऊपर लिखे हुए मासगणमेंसे निकालना और उसमें १२ बारहका भाग देना शेष बचे वह चैत्र शुद्ध प्रतिपदाको आदि ले गतमास जानना और लब्ध आवे वह गताब्द समूह जानना । उन गताब्द समूहमें ११०५ ग्यारहसौ पांच मिलानेसे वर्ष प्रवेशका शाब्दिकवाहन शक होता है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

गणेशदैवज्ञः ।

विश्वेन्द्रगन्यरुणैर्युक्तो १२३११३ ग्रहलाघवजो गणः ।

चक्रसं नृपस्वाध्यात्मं ४०१६ ब्रह्मतुल्यो गणो भवेत् ॥ ५४ ॥

इत्यागाम्यब्दप्रवेशः ।

अब ग्रहलाघवके अहर्गणपर ब्रह्मतुल्यका अहर्गण साधन करनेकी युक्ति गणेशदैवज्ञ कहे हैं:—ग्रहलाघवके अहर्गणमें १२३११३ मिलाके फिर उसमें चक्रसे ४०१६ को गुणन करके मिलाना सो ब्रह्मतुल्यका अहर्गण होगा ॥ ५४ ॥

उदाहरण ।

ग्रहलाघवका अहर्गण ४०३९ में १२३११३ मिलाये १२७१५२ हुए, इनमें ४०१६ को चक्र ३१ से गुणन करनेसे १२४४९६ आये इनको युक्त किये २५१६४८ हुए यह ब्रह्मतुल्यका अहर्गण हुआ । इसके नीचे जन्मसमयकी इष्टघटी ५६ पल ४८ विपल १८ लिखनेसे २५१६४८।५६।४८।१८ सावयवब्रह्मतुल्यका अहर्गण हुआ। ऐसे प्रथम ब्रह्मतुल्यका अहर्गण साधन किया । अब आगामि वर्ष ३१मा साधन करना है उसका उदाहरण यह है त्रिना-

दिक सौर वर्ष ३६५।१५।३१।३० से गवाब्दसंख्या ३० को गुणन किये १०९५७।४५।४५।० हुए इनमें जन्मसमयका सावयव ब्रह्मसुल्यका अहर्गण २५१६४८।५६।४८।१८ युक्त किया २६२६०६।४२।३३।१६ ये वर्ष-रम्भसमयका सावयव अहर्गण हुआ। अहर्गण २६२६०६ में ७ सातका भाग दिया शेष १ एक बचा, गुरुवारको आदिछे गिननेसे शुक्रवार आया, इसलिये शुक्रवारके दिन इष्ट घटी ४२ पल ३३ विपल १८ से वर्ष ३१ इकतीसवां प्रवेश होगा परन्तु किस शकके कौनसे मासकी कौन तिथिमें प्रवेश होगा इसका निश्चय होनेके वास्ते आगे उदाहरण श्लोक ५२।५३ का लिखते हैं—

अहर्गण २६२६०६ को नीचे लिखा २६२६०६ इसमें ३ तीन मिलाये २६२६०९ हुए इनको दो जगे लिखे २६२६०९ इसमें ६९२ छःसौ ब्या-नवेका भाग दिया लब्ध ३७९ आये इनको दूसरी जगे लिखे हुए २६२६०९में युक्त किये २६२९८८ हुए इनमें ६३ तिरसठका भाग दिया लब्ध ४१।७४ ऊनाह आये । इनको अहर्गण २६२६०६में युक्त किये तो २६६७८० हुए इसमें ३० तीसका भाग दिया शेष २० बचे इनमें १ एक युक्त किया २१ हुए यह वर्षप्रवेशकी तिथी हुई अर्थात् २१ इकईसमी तिथिके दिन वर्षप्रवेश होगा २१ इकईसमी तिथि शुक्ल प्रतिपदाको आदिछे गिननेसे कृष्णपक्षकी ६ पष्ठीको आती है इसलिये कृष्णपक्षकी छठके दिन वर्षप्रवेश होगा । और ३० का भाग देनेसे लब्ध ८८९२ आये ये मासगण हुआ इस नीचे लिखा ८८९२को दो गुणा किया १७७८४ इसमें छालठ मिलाये १७८५० हुए इनको दो जगे लिखे १७८५० इसमें ९२८नौ सो अट्ठाईसका भाग दिया लब्ध १९आये ये दूसरी जगे लिखे १७८५० मेंसे हीन किये शेष १७८३१ बचे इनको ६७ सतसठका भाग दिया लब्ध २६६ आये इनको मासगण ८८९२ में से घटाये शेष ८६२६ बचे, इसमें १२ वारहका भाग दिया शेष १० बचे इसलिये चैत्र शुक्ल १ प्रतिपदाको आदिछे गिननेसे माघ शुक्ल प्रतिपदातक गत १० मास हुए और माघशुक्ल १ प्रतिपदाके आगे ११ माघमास वर्षप्रवेशका मास हुआ और लब्ध वारहका भाग देनेसे आये ७१८ उनमें ११०५ युक्त किये १८२३ यह वर्षप्रवेशका शालिवाहनशक हुआ—अर्थात् शक १८२३ में अक्षय माघ

कृष्ण ६ षष्ठी शुक्रवारको श्रीसूर्योदयसे इष्टघटबादि ४२ । ३३ । ३८ से ३९ इकतीसमा वर्षप्रवेश होगा, ऐसे ही अभीष्ट गताब्दके सर्व आगामिवर्ष साधन करना । इत्यागाम्यब्दप्रवेशः ॥

अथ लोमशोक्तं सप्तवर्गबलचक्रम्.						
स्व.	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	
२०	१८	१५	१०	७	५	
५	४	३	२	१	१	गृह.
०	३०	४५	३०	४५	१५	
२	१	१	१	०	०	होरा.
०	४८	३०	०	४२	३०	
३	२	२	२	१	०	द्रव्या.
०	४२	१५	३०	३	४५	
२	२	१	१	०	०	सप्त.
३०	१५	५२	१५	५२	३७	
		॥		॥	॥	
४	४	३	२	१	१	नशा.
३०	३	२२	१५	३४	७	
		॥		॥	॥	
२	१	३	१	०	०	द्वाद.
०	४८	३०	०	४२	३०	
१	०	०	०	०	०	त्रिंशत्.
०	५४	४५	३०	२१	१५	

दशवर्गसंज्ञा.								
२	३	४	५	६	७	८	९	१०
पाश्चिमात	उत्तम	गोपुर	सिंहावन	पारावर्ताश	देवलोकांश	देवलोकांश	पेरावत	वैशिषीक
चरकारकाः ।								
आरम	अमात्य	भ्राता	माता	पिता	पुत्र	ज्ञाते	स्त्री	

यस्य ग्रहोर्म अधिक अंशका हो कर्तुं आत्यन्तक उत्सवे अल्पअल्प अंशके कर्तव्ये जाहक मानना

विद्यालये मालवसंज्ञदेशे रत्नावतीरम्यनिवासवासी ॥  
 औदुम्बरः पाठकवंशजातः सुपूज्यविद्यान्वितनन्दरामः ॥ ५५ ॥  
 तत्पौत्रमन्त्रशास्त्रज्ञरेवाशंकरसूनुना ॥  
 महादेवेन रचिता पत्रीमार्गप्रदीपिका ॥ ५६ ॥  
 माघस्य शुक्लपञ्चम्यां शांके माझछकैर्मिते ॥  
 संपूर्णा भार्गवे वारे पत्रीमार्गप्रदीपिका ॥ ५७ ॥  
 इति श्रीमहादेवकृतपत्रीमार्गप्रदीपिका संपूर्णा ।

विद्याका स्थान ऐसे मालवसंज्ञक देशमें अतिरक्षणीय रत्नावती नगरी  
 ( रतलाम शहर)में निवास करनेवाले औदुम्बर ज्ञातीय पाठकवंशमें उत्पन्न  
 उत्तम विद्यायुक्त नन्दरामजी हुए ॥ ५५ ॥ उनके पौत्र मोतीरामजीके पुत्र मन्त्र-  
 शास्त्रके जाननेवाले रेवाशंकरजी हुए, उनके पुत्र महादेव ज्योतिर्विदने पत्रीमार्ग-  
 प्रदीपिका नाम ग्रन्थ बनाया ॥ ५६ ॥ वह पत्रीमार्गप्रदीपिका शालिवाहन शक  
 १७९५ सतरासौ पंचानवमें माघ शुक्ल पंचमी भृगुवारके दिन संपूर्ण हुई ॥ ५७ ॥

मार्गशीर्षसिते पक्षे द्वादश्यां गुरुवासरे ॥

कक्ष्यष्टभूमिते शांके कृतेऽयं विवृतिर्मया ॥ १ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतपत्रीमार्गप्रदीपिकायां तदात्मज-  
 श्रीनिवासज्योतिर्विद्विरचिता सोदाहरणभाषाटीका समाप्तिमयम् ॥

इति पत्रीमार्गप्रदीपिका समाप्ता ।

१ "कटपयवर्गमवैरिहपिण्डान्त्यैरक्षैररकाः ॥ नञि च ज्ञवं शून्यं तथा स्वरे केवले कथितम् ॥ १ ॥"  
 इस प्राचीन कारिकाके वचनानुसार म-के १ झ-के ९ छ-के ७ क-के १ ऐसे मा झ छ क के  
 अंकोंका अंकानां वामतो गतिः इस क्रमसे १७९५ सतरासौ पञ्चानवे होते हैं ।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीसन्महादेवद्वैवज्ञविरचितं

वर्षदीपकम्

भाषाटीकासहितम् ।

नत्वा गुरुपदाम्भोजं हेरम्बं शिवशारदाम् ॥

वर्षदीपकग्रन्थस्य नृभाषाविवृतिं लघुम् ॥ १ ॥

कुर्वे वै श्रीनिवासोऽहं बालानां सुखहेतवे ॥

यदत्रो नं ममाज्ञानाद्विबुधाश्च क्षमन्तु तत् ॥ २ ॥

भाषाकार विघ्नविनाशार्थं गुरु गणपतिको नमस्काररूप मंगलाचरण करके भाषारचनाके प्रयोजनपूर्वक क्षमापन मांगता है ।

श्रीगुरु ( महादेवजी ) के चरणकमलको, हेरम्ब ( गजानन ) को, शंकर और शारदा ( सरस्वती ) को नमस्कार करके मैं श्रीनिवासशर्मा वर्षदीपकग्रंथकी बालकोंको सुखसे बोध होनेके लिये लघु ( छोटीसी ) भाषाटीका करता हूँ, इसमें यदि मेरे अज्ञानसे जो कुछ क्षति रही हो उसे पंडितलोग वारंवार क्षमा करें यह प्रार्थना है ॥ १ ॥ २ ॥

प्रथम शिष्टाचारपरिपालनार्थं और निर्विघ्नतासे ग्रन्थपरिसमाप्त्यर्थं ग्रन्थकर्ता स्वष्टदेवको नमस्काररूप मंगलाचरण करते हैं ॥

श्रीगणेशं गुरुं नत्वा शुद्धां श्रीभुवनेश्वरीम् ॥

महादेवं महादेवः कुरुते वर्षदीपकम् ॥ १ ॥

श्रीगणेशजीको, गुरुजीको, शुद्धस्फटिकसदृश निर्मलस्वरूपा श्रीभुवनेश्वरी-जीको और शंकरको नमस्कार करके महादेव ज्योतिर्विन्द वर्षदीपक ( वर्षके गणितमार्गका प्रकाश करनेवाला दीपक ) नाम ग्रंथ करते हैं ॥ १ ॥

प्रतिवर्षं जन्मग्रहोदयात्पूर्वं जानीयात् ॥ २ ॥

वर्षवर्षमें जन्मके इष्ट वार ग्रह लयादि प्रथम जानना ( हरवर्ष बनानेके समय जन्माक्षरमें लिखे हुए जन्मका वार इष्टघटी स्पष्टसूर्य लग्न आदि पहले जानके वर्षके गणितका आरम्भ करना ) ॥ २ ॥



सौरवर्षारंभाच्छकप्रवृत्तिर्वेदितव्या ॥ ३ ॥

सौरवर्षके आरम्भसे ( मेषसंक्रांति जिस दिन प्रवेश हो उस दिनसे ) शककी प्रवृत्ति जानना ॥ तात्पर्य यह है कि चैत्रशुद्ध प्रतिपदासे “मघोः सितादेदिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः” इत्यादि वचनोंसे जो भी संवत् शककी प्रवृत्ति होती है तथापि “ वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात् ” इस वचनसे जबतक मेषसंक्रांति प्रवेश न हो तबतक शकप्रवेश नहीं होता, इस कारण मेषसंक्रांतिके प्रवेशके प्रथम और चैत्रशुद्ध १ प्रतिपदाके अनंतरका वर्ष करना ही तो पिछाड़ीके शकसे करना ॥ जैसे संवत् १९५५ में मेषसंक्रांति वैशाखकृष्ण ६ पष्ठी भौमवारके दिन प्रवेश हुई है उसी दिनसे १८२० का शक प्रवेश हुआ इसलिये वर्षसाधनमें वैशाखकृष्ण ६ पष्ठीके पहिले शक १८१९ ही मानके वर्ष करना ॥ ३ ॥

इष्टशके जनुः शकहीने गताब्दाः ॥ ४ ॥

अभीष्टशकमेंसे ( जिस शकका वर्ष करना हो उस शकमेंसे ) जन्म-समयका शक हीन करनेसे शेष बचे वह गताब्द ( गतवर्ष ) हो ॥ ४ ॥

जन्मार्कतुर्योऽर्को यत्समये वर्षप्रवेशस्तत्रैव ॥ ५ ॥

जन्मसमयके सूर्यके समान ( बराबर ) सूर्य जिस दिन जिस समय आवे उस दिन उस समय ही वर्षप्रवेश होता है ॥ ५ ॥

याताब्दाः सप्ताधिकसहस्रहताः खात्रेभासा जन्मवारादियुता  
वर्षप्रवेशवारादिबोधकाः ॥ ६ ॥

गताब्दोंको ( गतवर्षोंको ) १००७ एकहजार सातसे गुणे करना ८०० आठसौका भाग देना लब्ध आवे हुए वार घटी पल विपलात्मक चार फलमें जन्म समयके वारादिक ( वार इष्ट घटी पल विपल ) युक्त करना वर्षप्रवेशके वारादिक ( वार इष्ट घटी पल विपल ) का बोध हो अर्थात् ( गत वर्षोंको १००७ एकहजार सात गुणे करके ८०० आठसौका भाग देना लब्ध आवे वह वार जानना शेष बचे उनको ६० साठ गुणे करना और ८०० का भाग देना लब्ध घटी आवे शेष बचे उनको ६० साठ गुणे करना ८०० का भाग देना,

लब्ध फल आवें शेष बचे उसको ६० साठ गुणे करना और ८०० आठसौका भाग देना लब्ध विफल आवें ऐसे ८००का भाग देके वार घटी फलविफलात्मक चार फल लाना उनमें जन्मसमयके वार इष्टघटी फल विफलादिक युक्त करना वर्ष प्रवेशके वारादिक हों ) ॥ ६ ॥

शिवघ्ना गताब्दाः स्वखाद्गीन्दुलवाद्या जन्मतिथ्यन्वि-  
तास्तेषु खाग्रिशेषेऽब्दवेशतिथिः ॥ ७ ॥

ग्यारह गुणे क्रिये हुए गताब्दोंमें अपना १७० एकसौ सत्तरवां भाग युक्त करना और जन्मतिथि मिलाना तीस ३० का भाग देना शेष बचे वह वर्षप्रवेशकी तिथि जानना ( गताब्दोंको ११ गुणे करके २ जगे लिखना एक जगे १७० का भाग देना लब्ध आवें वह दूसरी जगे युक्त करना उसमें शुक्लप्रति-  
पदाको आदि ले जन्मतिथिकी संख्या मिलाना ३० तीसका भाग देना शेष बचे वह शुक्ल प्रतिपदाको आदि ले वर्ष प्रवेशकी तिथि हो ) ॥ ७ ॥

क्वचिद्धूने भूयुते वा ॥ ८ ॥

कोई समय गणितसे लायी हुई वर्षप्रवेशकी तिथिके दिन वर्ष प्रवेशका वार नहीं मिले तो आयी हुई तिथिमें एक घटा देना वा एक युक्त कर देना ( तिथिसे वर्षप्रवेशका वार पछि हो तो १ घटा देना आगे हो तो १ मिला देना ) ॥ ८ ॥

जन्मार्काशादियुग्वारतोऽब्दप्रवेशनिर्णयः ॥ ९ ॥

इत्यब्दप्रवेशाध्यायः ॥ २ ॥

जन्मसमयके स्पष्टसूर्यकी राशि अंशके समान राशि और अंश और वर्षप्रवेशके वारसे वर्षप्रवेशका निर्णय जानना ( जन्मके सूर्यके राशि अंश और वर्षप्रवेशका वार ये तीनों जिस दिन मिलें उस दिन वर्षप्रवेश होगा ) ॥ ९ ॥

उदाहरण ।

स्वस्तिश्रीसंवत् १९२८ शके १९७३ प्रवर्तमाने अर्मातमाषरूपमा ३  
तृतीया परं ४ चतुर्थ्या भौमवासरे चित्रानक्षत्रे श्रीसूर्योद्भ्यादिष्टघटादि ५६ ।  
४८ । १८ स्पष्टार्क १० । १६ । ५३ । ६९ । ल० ९ । २३ । २८ । २९ ।

अथ जन्माङ्गम्.	
रा११२	श१९
२३३	३७०
१	७
४२	४३
३३	५३

चंद्र ५ । २९ । १९ । ४९ । समये ज्योतिर्विच्छीनिवासशर्मणो जन्म । इस जन्मपत्रका वर्षपत्र अभीष्ट शक १८२१ का करना है इसलिये शके १८२१ मेंसे जन्मशुक १७९३ घटाया २८ शेष बचे गताब्द हुए इनको १००७ से गुणे किये २८१९६ हुए इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध ३५ वार आये शेष १९६ बचे इनको ६० साठ गुणे किये ११७६० हुए । फिर इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध १४ घटी आयी शेष ५५० बचे इनको फिर ६० साठ गुणे किये ३३६०० हुए ८०० का भाग दिया लब्ध पल ४२ आयी शेष ० बची इसको ६० गुणी करनेसे ० हुई ८०० का भाग दिया लब्ध ० शून्य विपल आयी । ऐसे आठसौका भाग देके लब्ध वार ३५ घटी १४ पल ४२ विपलात्मक चार फल आये इनमें जन्म समयके भौमवारके ३ इष्टघटी ५६ पल ४८ विपल १८ मिलाये ३९।११ । ३० । १८ हुए वार ७ सातसे अधिक है अतः वार ३९ में सातका भाग दिया शेष ४ । ११ । ३० । १८ ये वर्ष-प्रवेशके वार घटी पल विपल हुए ।

तिथिसाधन ।

गताब्द २८ को ११ गुणे किये ३०८ हुए इनको दो जगे लिखे ३०८ एक जगे १७० का भाग दिया लब्ध १ एक आया यह ३०८ में युक्त किया ३०९ हुए इनमें कृष्णपक्षकी ४ चतुर्थीका जन्म है इससे शुक्ल प्रतिपदासे ४ पर्यंत गिननेसे जन्मतिथि १९ हुई ये मिलाये ३२८ हुए इनमें ३० तीसका भाग दिया शेष २८ बचे यह वर्षप्रवेशकी तिथि हुई शुक्ल प्रतिपदाको आदि ले गिननेसे अहाइसर्वा कृष्णपक्षकी १ त्रयोदशके आयी परंतु त्रयोदशके दिन वर्षप्रवेशका वार बुध नहीं मिलता है इस कारण इसमें १ एक तिथि युक्त करनेसे १४ चतुर्दशी हुई । एवं तिथि निश्चय होनेके अनन्तर जन्म समयके स्पष्ट सूर्यकी १० राशि

१ रविवांशके वार गिने जाते हैं ।

१६ अंशके समान अंश और वर्ष प्रवेशका वार बुध, अर्थात् माघकृष्ण १४ के दिन मिलता है, इसलिये संवत् १९५६ शके १८२१ प्रवर्तमानमें अर्थात् माघकृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारके दिन सूर्योदयसे इष्ट घट्यादि ११ । ३० । १८ समयमें वर्ष २९ प्रवेश हुआ, गताब्द २८ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्वत्श्रीमन्महादेवकृतवर्षप्रदीपिकाख्यताजिकग्रंथे तदङ्गजश्रीनिवासविरचितायां सोदाहरणभाषाव्याख्यायामब्दप्रवेशाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

इष्टवारादिषु यातितगतपंक्तिवारादिषु शेषो दिनाव्यो धनम् ॥ १ ॥

अपने इष्ट वारादिकमेंसे पिछाड़ीकी गयी हुई सर्वापकी पंक्ति ( अवधि ) के वारादिक ( वार इष्ट घटी पल ) हीन करनेसे जो शेष बचे वह दिनादिक धन चालन होता है ॥ १ ॥

आगामिपंक्तिवारादिषु यातितेष्टवारादिषु शेषो दिनाव्यभृणम् ॥२॥

आगेकी पंक्तिके वारादिक (वार इष्ट घटी पल ) मेंसे पिछाड़ीके अपने इष्ट-वारादिक हीन करनेसे जो शेष बचे वह दिनादिक ऋण चालन होता है । अर्थात् अवधिके वारादिकमेंसे अपने वारादिक हीन करनेसे ऋण और अपने वारादिकमेंसे अवधिके वारादिक घटानेसे धन चालन होता है ॥ २ ॥

दिनाव्ये गतिश्रे षष्ट्याप्तेशादिस्तेन पंक्तिस्थग्रहे संस्कृते स्पष्टः

खगो वक्रे तु वैपरीत्यं संस्कृतौ ॥ ३ ॥

दिनादिक चालनको गतिसे गुणन करके ६० साठका भाग देना, जो अंशादिकफल ( अंश कला विकलात्मक ३ तीन फल ) आवे उनकी पंक्ति (अवधि) के ग्रहमें संस्कार करनेसे (चालक धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करनेसे ) स्पष्ट ग्रह होता है और ग्रह वक्रगति हो तो उन्हीं अंशादिक फलोंका विपरीत संस्कार करना अर्थात् चालक धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन करना ॥ ३ ॥

गतर्क्षनाडयः षष्टिशुद्धाः पृथक् स्थाप्याः ॥ ४ ॥

गत नक्षत्र(जिस नक्षत्रमें वर्षप्रवेश हो वह इष्ट नक्षत्र,उसके पहले बीते हुए नक्षत्र ) की घटी पलोंको साठमेंसे शोधकर दो जगे लिखना ॥ ४ ॥

१ साठका भाग देके अंशादिक फल लानेकी रीति उदाहरणमें स्पष्ट लिखी है ।

एकत्रेष्टघट्याढ्या भयातम् ॥ ५ ॥

एक जगह इष्ट घटी पल युक्त करनेसे भयात होता है ॥ ५ ॥

इतरत्रेष्टर्क्षघट्याढ्या भभोगः ॥ ६ ॥

दूसरी जगे इष्टनक्षत्र (इष्ट समयमें वर्तमान नक्षत्र) की घटी पल युक्त करनेसे भभोग होता है ॥ ६ ॥

षष्टिभ्रं भयातं भभोगेनाप्तं स्पष्टं भयातम् ॥ ७ ॥

भयातको साठ ६० से गुणा करना और भभोगका भाग देनेपर लब्ध घट्यादिक स्पष्ट भयात होता है । भयातको साठ गुणा करके भभोगका भाग देनेपर जो लब्ध घटी आवे, शेष बचे उसको ६० गुणा करके फिर भभोगका भाग देना जो लब्ध पल आवे शेष बचे उनको साठगुणे करना, फिर भभोगका भाग देना लब्ध विपल आवे ऐसे घट्यादिक फल तीन आता है उसे स्पष्ट भयात जानना चाहिये ७

गतर्क्षसंख्याषष्टिघ्ना भयातान्विता द्विघ्ना नवाप्तान्शदिर्दिदोः ॥ ८ ॥

साठगुणी की हुई गत नक्षत्रकी संख्यामें स्पष्ट भयात युक्त करके द्विगुण (दोगुणी) करना और नवका भाग देना, जो अंशादिक फल ३ लब्ध आवे वह अंशादिक स्पष्टचंद्र होता है । गत नक्षत्रकी संख्याको ६० गुणी करके उसमें स्पष्ट भयात मिलाना और उसको दोगुणी करना, उसमें नव ९ का भाग देना, लब्ध अंश आवे शेष बचे उनको साठगुणे करना और नीचेकी पल मिलाना, फिर ९ नवका भाग देना, लब्ध कला होती है और जो शेष बचे उनको फिर साठगुणे करना, नीचे लिखी विपल मिलाना और नवका भाग देना लब्ध आवे वह विकला जानना, ऐसे अंश कला विकलात्मक फल तीन लावे वह स्पष्ट अंशादि चंद्र हो अंशमें तीसका भाग देना लब्ध राशि शेष अंश समझना ॥ ८ ॥

खखाष्टभभोगेन भक्ता अंशात्मिका गतिः ॥ ९ ॥

आठसौ ८०० के भभोगका भाग देना जो लब्ध आवे फल तीन वह अंशादिक चन्द्रकी स्पष्ट गति होती है (अंशको ६० गुणे करके कला मिलानेसे कलादिक गति होती है) ॥ ९ ॥

जनुरुदयभादिषु भांकमात्रे गताब्दांकयोगेऽर्कभक्ते मुन्था ॥१०॥

राश्यादिक ( राशि अंश कला विकलात्मक ) जन्म लक्ष्मी केवल राशिके अंकमें ही गताब्दसंख्याका अंक युक्त करके १२ बरहंका भाग देना जो शेष बचे उसे मुन्था जानना ॥ १० ॥

सूर्यैकांशभोगकाले मुन्था पंचकला धुनक्ति ॥ ११ ॥

सूर्यके एक अंशके भोगसमयमें मुन्था पांच कला भोगती है, अर्थात् प्रतिदिन मुन्था पांच कला चलती है ॥ ११ ॥

उदाहरण ।

अमांत माघ कृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारके दिन इष्ट ११।३०।१८ से वर्षप्रवेश हुआ, इसके समीपकी पंक्ति (अवधि) पंचागमें उसी दिन इष्ट २२।१ की है। यह वर्षप्रवेश समयसे आगेकी है, इसलिये सूत्रके अनुसार अवधिके वारादिक ४।२२।१ मेंसे वर्षप्रवेशके इष्ट वारादिक ४।११।३०।बटाये शेष ०।१०।३१ बचे यह दिनादिक ऋण चालक हुआ—इस दिनादिक चालक ०।१०।३१को सूर्यकी गति

	६०	१९
६०।१९ से गोमूत्रिका लिखके गुणन किया तो ये अंक आये		
	नम्बर १-	० नं०-४
इनमें नम्बर ६ के अंकमें ६० साठका भाग देनेपर लब्ध ९ आये २-६००		१९०-५
उनको नंबर पांचके अंकोंमें युक्त करके नम्बर पांचके ३-१८६०		५८९-६
अंकोंको नम्बर ३तीनके अंकमें और नम्बर ४चारके अंकोंको नम्बर २दोके		

६०	१९
	अंकोंमें मिलाये तो इस प्रकार हुए, फिर नम्बर ३तीनके अंकमें ६०
१-नम्बर ०	साठका भाग दिया लब्ध ३४ आये, इनको नम्बर दोके अंकोंमें
२-६०	मिलाये तो ६३४ हुए इनमें साठका भाग दिया लब्ध १०
३-२०५९	कला आयी, शेष ३४ विकलारही, फिर कला १० में ६० साठ
	का भाग दिया लब्ध ० अंश आया, ऐसे साठका भाग देनेसे अंशादिक ०।१०।
	३४ फल आये । इनको अवधिमें स्थित सूर्य १०।१७।४।७ में ऋण
	किये १०।१६।५३।३३ शेष बचे यह स्पष्ट सूर्य हुआ । इसी प्रकार शेष

सर्वं ग्रह किये परन्तु राहु वक्रगति है इस कारण राहुकी गति ३। ११ से चालक  
०। १०। ३१ को उक्त रीतिसे गुणन करके ६० साठका भाग दके आये  
हुए ०। ०। ३४ अंशादिक फलोंकी अवधिमें स्थित राहु ७। २३। ४०।  
४०। में विपरीत संस्कार किया अर्थात् चालक ऋण है, इस कारण धन किया  
७। २३। ४१। १४। राहु स्पष्ट हुआ।

स्पष्ट चंद्र साधन ।

वर्षप्रवेशके दिन धनिष्ठा घट्यादिक ३७। ५६ है, वर्षप्रवेश धनिष्ठा नक्षत्र-  
में हुआ है अतएव धनिष्ठा इष्ट नक्षत्र और श्रवण गतनक्षत्र हुआ। गतनक्षत्र श्रवणकी  
घटी ४१ पल ५१ को सूत्र ४ के अनुसार ६० साठ घटीमेंसे हीन किया  
१८। ९ शेष बचे, इनको दो जगे लिखे १८। ९ एक जगे इष्टघटी ११। ३०

१८	११ इष्ट.	२९ भया-
९	३० घटी.	३९ व.
१८	३७ इष्टनक्षत्र.	५६ भभोग-
९	५६ घटी.	५ ग.

युक्त की २९। ३९। भयात हुआ, दूसरी जगे इष्ट  
नक्षत्र धनिष्ठाकी घटी ३७ पल ५६ मिलायी तो ५६।  
५ भभोग हुआ। भयातको ६० साठ गुणा करके

भभोगका भाग देना है, परंतु भयात भभोग दोनों घट्यादिक हैं, अतः प्रथम इनको  
सर्वणित किये भयात १७७९ भभोग ३३६५ हुए, तदनंतर भयात १७७९ को  
साठगुणा किया १०६७४० हुए। इनमें भभोग ३३६५ का भाग  
दिया लब्ध ३१ घटी आयी शेष २४२५ बचे, इनको साठ गुणे किये  
१४५५०० हुए, भभोग ३३६५ का भाग दिया, लब्ध ४३ पल हुए, शेष ८०५  
बचे उनको ६० गुणे किये तो ४८३०० हुए इनमें फिर ३३६५ का भाग  
दिया लब्ध १४ विपल आयी। ऐसे घट्यादिक ३१। ४३। १४ स्पष्ट भयात  
हुआ। तदनन्तर अश्विनीसे गत नक्षत्र श्रवण पर्यंत गिननेसे २२ संख्या आयी यह गत  
नक्षत्रकी संख्या हुई, इसको ६० साठगुणी की तो १३२० हुई, इसमें स्पष्ट भयात  
३१। ४३। १४ युक्त किया १३५१। ४३। १४ हुए। इनको २ द्विगुण  
किये २७०३। २६। २८ हुए, इनमें ९ नवका भाग दिया लब्ध ३०० अंश  
आये, शेष ३ बचे, इनको ६० गुणे किये १८० हुए इनमें नीचिके पलके  
अंक २६ मिलाये २०६ हुए इनमें नवका भाग दिया लब्ध २२ कला  
आयी शेष ८ बचे इनको ६० साठगुणे किये तो ४८० हुए, विपलके अंक २८

मिलाये तो ५०८ हुए, फिर ९ का भाग दिया ५६ विकला हुई, शेष ९ का भाग देकर उक्त रीतिसे अंशादिक फल मिलाये ३००।२२।५६ यह अंशादिक स्पष्ट चन्द्र हुआ। अंशमें ३० तीसका भाग दिया लब्ध १० राशि शेष अंश ० बचे इस प्रकार स्पष्ट-चन्द्र १०।०।२२।५६। राश्यादिक हुए।

गतिसाधन ।

आठसौ ८००।०में भोग ५६।५ का भाग दिया परन्तु दोनों घट्यादिक हैं, इस लिये दोनोंको प्रथम सर्णित किये भाज्य ४८००० भाजक ३३६ ५ हुए, भाज्यमें भाजकका भाग दिया लब्ध अंशादिक १४।१५।५२ चन्द्रकी स्पष्टगति हुई अंश १४को ६० साठगुणे करके १५ मिलानेसे ८५५।५२ कलादिक गति हुई।

मुन्थासाधन ।

जन्मलग्न ९।२३।२८।२९ की राशि ९ के अंकमें गताब्द संख्या २८ युक्त किये तो ३७।२३।२८।२९ हुए, फिर १२ वारहका भाग दिया शेष १।२३।२८।२९ मुन्था हुई, गति ५।०॥

अथ स्पष्टाः ग्रहाः सजवाः।										
चु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	मुं.	
१०	१०	१०	११	७	११	८	७	१	१	
१६	०	७	१	१८	२५	९	२३	२३	२३	
५३	२२	३१	३५	५६	२	५४	४९	४१	२८	
३९	५६	३६	८	५५	४८	५९	१३	१९	२९	
६०	८५५	४८	७५	५	७१	४	३५	३५	५	
१९	५२	५०	३२	३२	३२	९	११	११	०	

नागक्षार्गोऽङ्गदसास्त्रिदन्ताः क्रमोत्क्रमा मेषादीनां लंकोदयापलानि १२॥

नाग ८ ऋक्ष २७ लिखनेसे २७८ हुए फिर गो ९ अंक ९ दस २ लिखनेसे २९९ हुए, पुनः 'त्रि'तीन ३, दन्त ३२ मिलाकर ३२३ हुए। इसप्रकार क्रम और उत्क्रम ( उलटे ) करनेसे मेषादिक राशियोंके लंकोदय पल जानना ॥ १२॥



### स्वचरार्द्धेन युताः स्वदेशोदयाः ॥ १३ ॥

अपने गामके चरखंडा उक्त लंकोदय पलमें क्रमसे हीन और युक्त करनेसे

लंकोदयाः		चरखंडा		स्वदेशोदयाः	
मे.	२७८	मी.	५१	२२७	
वृ.	२९९	कुं.	४१	२५८	
मि	३०३	म.	१७	३०६	
क.	३३३	ध.	१७	३४०	
सिं.	२९९	वृ.	४१	३४०	
क.	२७८	तु.	५१	३२९	

स्वदेशोदय (अपने गामका उदय) होता है, जैसे रतलामके चरखंडा ५१ । ४१ । १७ है इनको लंकोदयपलमें क्रमसे प्रथम हीन किये, फिर युक्त किये तो नीचे कोष्ठकमें लिखे हुए स्वदेशोदय

हुए ऐसे ही प्रत्येक अभीष्ट गामके स्वदेशोदय जानना चाहिये ॥ १३ ॥

### उदयार्द्धिशुद्धता मेषादीनां पलाद्या गतयः ॥ १४ ॥

उदर्यो ( लंकोदय और स्वदेशोदय )की संख्यामें तीस ३०का भाग देनेपर जो आवे वह मेषादिक राशियोंकी पलादिक गति होती है, अर्थात् स्वदेशोदयकी संख्यामें ३० तीसका भाग देनेसे स्वदेशके लघोंकी पलादिक गति, एवं लंकोदयकी संख्यामें ३० तीसका भाग देनेसे लंकाके उदर्योकी पलादिक गति होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण ।

मेष राशिके स्वदेशोदय २२७ में ३० तीसका भाग दिया लब्ध ७, शेष १७ बचे, इनको ६० साठगुणे किये १०२० हुए फिर ३० का भाग दिया, लब्ध ३४ हुए । यह मेष राशिके स्वदेशोदयकी पलादिक गति ७।३४ हुई । ऐसे ही बारह राशियोंमें जानना चाहिये ॥

१ गणेशद्वैजः "मेषादिगो सायनभागसूर्ये दिनाद्धजा मा पलमा भवेत्सा । त्रिष्टा हताःस्युर्दशभिर्मुजंगौर्दि-  
मिश्वराद्धानि गुणोद्धतान्त्या ॥ १ ॥" अर्थात् सायन मेषार्कके आरम्भ दिनमें मध्याह्न समयमें शंकुकी जो छाया हो वह पलमा होती है । जिस गामके चरखंड करना हो उस गामकी पलमाको तीन जगे लिखना, एक जगे १० दशगुणी, दूसरी जगे आठगुणी, तीसरी जगे १० दशगुणी करना, फिर ३ तीसका भाग देनेपर उस गामका चरखण्ड होता है ।

लंकोदयोकी पलादिकगतिका चक्र.											
मे.०	वृ.१	मि.२	क.३	सि.४	क.५	तु.६	वृ.७	घ.८	म.९	कुं.१०	मी.११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	९	१०	१०	९	९	९	९	१	१०	९	९
१६	५८	४६	४६	५८	१६	१६	५८	४६	४६	५८	१६

रतलामशहरके स्वदेशोदयोकी पलादिगतिका चक्र.											
मे.०	वृ.१	मि.२	क.३	सि.४	क.५	तु.६	वृ.७	घ.८	म.९	कुं.१०	मी.११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
३४	३६	१२	२०	२०	५८	५८	२०	२०	१२	३६	३४

शके वेदवेदाब्ध्युनेऽयनांशकलाः ॥ १६ ॥

शकमेंसे ४४४ चारसौ चौवालिस हीन करनेपर जो शेष बचे वह अयनांशकला होती है (कलाके ६० साठका भाग देना लब्ध अंश शेष कला समझना) १५ उदाहरण.

जैसे शके १८२१ का अयनांश करना है अतः शके १८२१ मेंसे ४४४ चारसौ चौवालिस हीन किये तो १३७७ हुए ये अयनांश कला हुई । इसमें ६० का भाग दिया लब्ध २२ अंश शेष ५७ कला बची यह अंशादिक अयनांश हुआ ॥

अयनांशहीने चक्रांशेऽवशिष्टांशाधस्ताच्छून्यत्रयं लेख्यम् ॥ १६ ॥

अयनांशको चक्रांश ( ३६० अंशों ) मेंसे हीन करना, शेष बचे हुए अंशके नीचे तीन शून्य लिखना ॥ १६ ॥

ततस्त्रिंशत्त्रिंशदंशकोष्ठकेषु मेषादिगतियोगे भावाङ्गपत्रे ॥ १७ ॥

तदनन्तर तीस तीस अंशोंके कोष्ठकोंमें लंकोदय और स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंकी पलादिक गतिक्रमसे प्रथम मेषकी, तदनन्तर वृषभकी, फिर मिथुन, कर्क सिंह इस क्रमसे बारहों राशियोंकी पलादिकगति युक्त करना, भावपत्र और लग्नपत्र हो अर्थात् लंकोदयोंकी मेषादिक राशियोंकी पलादिक गति युक्त करनेसे भावपत्र और स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंकी गति क्रमसे युक्त करनेसे लग्नपत्र होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण ।

प्रथम तीन सौ साठ ३६० कोष्ठकके दो चक्र बनाना, उनके दक्षिण तरफ मेषादि १२ बारह राशि लिखना । ऊपर ० शून्यको आदि ले २९ उनतीसपर्यंत अंश लिखना, तदनन्तर अयनांश हीन करना ३६० तीनसौ साठ अंशमेंसे और जो शेष बचे उस कोष्ठकके अंशमें तीसका भाग देना, जो लब्धराशि

( १०४ )

वर्षमदोषकम् ।

शेष अंश दृष्टे तस्य राशिके अंशके नीचे तीन तीन शून्य लिखना, जैसे-अय-  
नांश २२ । ५७ है यह २३ तैईसके समीप है इससे ३६० मेंसे २३ हीन  
किये ३३७ शेष बचे, इसमें तीस ३० का भाग दिया लब्ध ११ राशि शेष  
७ अंश रहे । इससे दिना परिश्रम शीघ्र ज्ञात हो गया कि ११ मीनराशिके  
७ अंशके नीचे तीन शून्य लिखना ऐसे तीन शून्य लिखके फिर क्रमसे मेपा-  
दिक राशियोंकी पलादिक गति मिलायी वो भावपत्र और लघ्नपत्र हुए ।

भावपत्रसर्वत्र अयनांश २३।०।०												
अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
०	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
३	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
४	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
७	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
८	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
९	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१०	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
११	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१२	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

लग्नपत्रं रत्नपुरे पलभा ६ । अयनांश २३ । ० । ० चरखंड ६१ । ४१ । १७

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
मं.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०			
०	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९४	९९	१०४	१०९	११४	११९	१२४	१२९	१३४	१३९	१४४	१४९	१५४	१५९	१६४	१६९	१७४	१७९	१८४	१८९	१९४	१९९		
१	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०३	१०८	११३	११८	१२३	१२८	१३३	१३८	१४३	१४८	१५३	१५८	१६३	१६८	१७३	१७८	१८३	१८८	१९३	१९८	
२	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९४	९९	१०४	१०९	११४	११९	१२४	१२९	१३४	१३९	१४४	१४९	१५४	१५९	१६४	१६९	१७४	१७९	१८४	१८९	१९४	१९९	२०४	२०९	
३	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	११५	१२०	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०	१५५	१६०	१६५	१७०	१७५	१८०	१८५	१९०	१९५	२००	२०५	२१०	२१५	२२०	२२५
४	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	१११	११६	१२१	१२६	१३१	१३६	१४१	१४६	१५१	१५६	१६१	१६६	१७१	१७६	१८१	१८६	१९१	१९६	२०१	२०६	२११	२१६	२२१	२२६	२३१	२३६
५	९२	९७	१०२	१०७	११२	११७	१२२	१२७	१३२	१३७	१४२	१४७	१५२	१५७	१६२	१६७	१७२	१७७	१८२	१८७	१९२	१९७	२०२	२०७	२१२	२१७	२२२	२२७	२३२	२३७	२४२	२४७
६	१०३	१०८	११३	११८	१२३	१२८	१३३	१३८	१४३	१४८	१५३	१५८	१६३	१६८	१७३	१७८	१८३	१८८	१९३	१९८	२०३	२०८	२१३	२१८	२२३	२२८	२३३	२३८	२४३	२४८	२५३	२५८
७	११४	११९	१२४	१२९	१३४	१३९	१४४	१४९	१५४	१५९	१६४	१६९	१७४	१७९	१८४	१८९	१९४	१९९	२०४	२०९	२१४	२१९	२२४	२२९	२३४	२३९	२४४	२४९	२५४	२५९	२६४	२६९
८	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०	१५५	१६०	१६५	१७०	१७५	१८०	१८५	१९०	१९५	२००	२०५	२१०	२१५	२२०	२२५	२३०	२३५	२४०	२४५	२५०	२५५	२६०	२६५	२७०	२७५	२८०
९	१३६	१४१	१४६	१५१	१५६	१६१	१६६	१७१	१७६	१८१	१८६	१९१	१९६	२०१	२०६	२११	२१६	२२१	२२६	२३१	२३६	२४१	२४६	२५१	२५६	२६१	२६६	२७१	२७६	२८१	२८६	२९१
१०	१४७	१५२	१५७	१६२	१६७	१७२	१७७	१८२	१८७	१९२	१९७	२०२	२०७	२१२	२१७	२२२	२२७	२३२	२३७	२४२	२४७	२५२	२५७	२६२	२६७	२७२	२७७	२८२	२८७	२९२	२९७	३०२
११	१५८	१६३	१६८	१७३	१७८	१८३	१८८	१९३	१९८	२०३	२०८	२१३	२१८	२२३	२२८	२३३	२३८	२४३	२४८	२५३	२५८	२६३	२६८	२७३	२७८	२८३	२८८	२९३	२९८	३०३	३०८	३१३

अथ लग्नस्पष्टरीतिः ।

भानुभांशजं लग्नपत्रकोष्ठकमिष्टान्वितं तन्न्यूनकोष्ठजं भांशं  
 भानुकलाद्यन्वितं तत इष्टाल्पकोष्ठांतरेऽल्पैष्यकोष्ठांतरेणास-  
 मंशादिफलं पूर्वत्र योजितं लग्नं भवेत् ॥ १८ ॥

सूर्यकी राशि अंश प्रमाण लग्नपत्रके कोष्ठकमें इष्ट घटी. पल विपल युक्त करना, उस ( इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक ) से अल्पकोष्ठकके राशि-अंश लेना, अर्थात् जिस कोष्ठकमें इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठकसे किंचित् न्यून अंक मिले उसके सामने जो राशि और ऊपर जो अंश हो वह अंश लेना । राशि-अंशके नीचे स्पष्ट सूर्यकी कला विकला युक्त करना, तदनंतर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठकका अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्पकोष्ठक और उसके आगेका ऐष्य कोष्ठकका अन्तर करके भाग देना, जो अंशादिक फल ३ तीन लब्ध आवे वह प्रथम आवे हुए राश्यादिकमें युक्त करे तो लग्न स्पष्ट होता है ॥ १८ ॥

लग्नपत्रस्थभानुभांशजकोष्ठं स्वाधःस्थितसप्तमकोष्ठकाङ्गीनं  
दिनमानम् ॥ १९ ॥

सूर्यकी राशि अंशप्रमाण लग्नपत्रमें जो कोष्ठक है उसको अपने नीचेके सातवें कोष्ठकमेंसे हीन करे, जो शेष बचे वह दिनमान जाने ॥ १९ ॥

तच्च षष्टिशुद्धं रात्रिमानम् ॥ २० ॥

दिनमानको ६० साठमेंसे शोधनेपर रात्रिमान होता है ॥ २० ॥

सूर्योदयादिष्टे रात्र्यर्द्धयुते तुर्यभावेष्टम् ॥ २१ ॥

सूर्योदयसे षट्यादिक इष्ट समयमें रात्र्यर्द्ध ( रात्रिमानका अर्द्ध ) युक्त करे तो चतुर्थ भावका इष्ट होता है ॥ २१ ॥

एतदादाय भावपत्रतो लग्नवच्चतुर्थभावसाधनम् ॥ २२ ॥

इस प्रकार चतुर्थ भावका इष्ट ले करके भावपत्रपर लग्नसाधनकी रीतिके अनुसार ( जैसे लग्न लाये हैं उसी तरहसे ) चतुर्थ भावका साधन करना चाहिये ॥ २२ ॥

लग्नशोधिततुर्यषष्ठांशो लग्ने षञ्चवारं योज्यस्ततस्स षष्ठांशो रूपाच्छु-  
द्धस्तुर्ये पञ्चवारं योजितश्चेष्ट्यादयस्ससन्धयः षड्भावाः ॥२३ ॥

लग्न निकले हुए चतुर्थ भावके षष्ठांशको (चतुर्थ भावमेंसे लग्नको) हीन करना, जो राश्यादिक शेष बचे उसकी राशिके अंकमें ६ छःका भाग देना, जो लब्ध राशि आवे और शेष बचे उनको तीस ३० गुणे करके नीचेके अंश मिलाकर ६ छःका भाग दे, फिर जो लब्ध अंश आवे और शेष बचे उनको ६० साठ-

गुणे करके नीचकी कला मिलाना, फिर ६ छःका भाग देना, एवं जो लब्ध कला आवे और शेष बचे उनको ६० गुणे करके विकला मिलाना, फिर ६ छःका भाग देना, जो लब्ध विकला आवे तथा शेष बचे उनको फिर ६० गुणे करके ६ छःका भाग देनेपर जो लब्ध आवे वह प्रतिविकला जानना ऐसे ६ छःका भाग देनेमें जो राश्यादिक फल आवे वह षष्ठांश होता है, उस षष्ठांशको लग्नमें पांचवार युक्त करना, तदनंतर फिर उस षष्ठांशको एकराशिमेंसे (१।०।०।०।०) शोधके चतुर्थ भावमें पांच वार मिलावे तो लग्नको आदि ले संधिसहित ६ छठा भाव होता है ॥ २३ ॥

एते षड्भोनाः शेषाः षड्भावाः ॥ २४ ॥

इन छहों भावोंमेंसे छः छः राशि हीन करनेसे शेष रहे हुए छहों भाव होते हैं ॥ २४ ॥

ग्रहः स्वाधिष्ठितभावारम्भसंधितो न्यूनो गतभावोत्थं तादृग्विरामसंध्यधिक उत्तरभावोत्थं फलं प्रयच्छति ॥ २५ ॥

ग्रह जिस भावमें स्थित हो उस भावकी आरंभ ( पहलेकी ) संधिसे न्यून ( कमती ) हो तो गतभावजनित ( पीछेके भावका ) फल देता है। ऐसे ही विराम ( आगेकी ) सन्धिसे अधिक हो तो उत्तर ( आगेके ) भावजनित फलको देता है ॥ २५ ॥

ग्रहसंध्यंतरं नखघ्नं भावसंध्यंतरेणाप्तं फलं विशोपकाः ॥ २६ ॥

ग्रहसन्धिके अन्तरको ग्रह जिस भावमें स्थित हो उस भावसे कमती हो तो आरम्भसन्धिके साथ और भावसे ग्रह अधिक हो तो विराम ( आगेकी ) सन्धिके साथ अन्तर करके बीसगुणा करना और भावसन्धिके अन्तरका जिस सन्धिके ग्रहका अन्तर किया है उसी सन्धिके भावके साथ अन्तर करके भाग देना, जो फल आवे वह विशोपका जानना और यदि ग्रह आरम्भसन्धिसे न्यून हो वा विराम सन्धिसे अधिक हो तो जिस भाव और सन्धिके बीचमें ग्रह हो उस भाव और सन्धिका अन्तर करके ग्रह सन्धिके अन्तरमें भाग देना, अर्थात् आरम्भ सन्धिसे ग्रह न्यून हो तो पहलेके भाव और सन्धिसे अन्तर करना और ग्रह आगेकी सन्धिसे अधिक हो तो आगेके भावसे सन्धिका अन्तर करके बीसगुणे किये हुए ग्रह सन्धिके अन्तरमें भाग देनेपर जो फल आवे वह विशोपका होता है ॥ २६ ॥

( १०८ )

वर्षप्रदीपकम् ।

उदाहरण ।

स्पष्टसूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ है, इसकी राशि १० अंश १६ के प्रमाण लग्नपत्रमें कोष्ठक देखा ५७ । २१ । ६ है, इसमें इष्टवत्त्यादि ११ । ३० । १८ मिलाया तो ६८ । ५१ । २४ हुए । घटीका अंक ६० साठसे अधिक है; अतः साठका भाग दिया शेष ८ । ५१ । २४ रहे, यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नपत्रका कोष्ठक हुआ । इस इष्टयुक्त कोष्ठकसे अल्पकोष्ठक लग्नपत्रमें ८ । ४५ । ४८ एक १ राशि ११ ग्यारह अंशके कोष्ठकमें मिलता है, इसकारण १ वृषराशि ११ अंश लिये इसके नीचे सूर्यकी कला ५३ विकला ३९ युक्त किया तो १ । ११ । ५३ । ३९ हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक ८ । ६१ । २४ और अल्पकोष्ठक ८ । ४५ । ४८ का अन्तर्ग किया तो ० । ५ । ३६ हुआ, इसमें अल्प कोष्ठक ८ । ४५ । ४८ । और ऐष्य कोष्ठक ८ । ५६ । ० के अन्तर ० । १० । १२ का भाग दिया परन्तु भाज्य भाजक दोनों कलादिक हैं अतएव इनको सर्वाङ्गित किये तो भाज्य ३३६ भाजक ६१२ हुए, भाज्यमें भाजकका भाग दिया लब्ध ० शून्य अंश आया शेष बचे ३३६ को ६० साठगुणे किये २०१६० हुए । इनमें फिर ६१२ भाजकका भाग दिया लब्ध ३२ कला आयी, शेष ५७६ बचे उनको ६० साठगुणे किये तो ३४५६० हुए । इनमें भाजक ( ६१२ ) का भाग दिया लब्ध ५६ विकला आयी । ऐसे अंशादिक ० । ३२ । ५६ फल तीन आये इनको प्रथम आये हुए राश्यादिक १ । ११ । ५३ । ३९ में युक्त किये तो १ । १२ । २६ । ३५ । हुए यह राश्यादिक लग्न हुआ ।

दिनमानसाधन ।

सूर्यकी राशि १० अंश १६ प्रमाण लग्नपत्रका कोष्ठक ५७ । २१ । ६ को अपने नीचेके सातवें कोष्ठक २६ । ९ । ४२ मेंसे हीन किया तो २८ । ४८ । ३६ इतना दिनमान हुआ ।

रात्रिमानसाधन ।

दिनमान २८ । ४८ । ३६ को ६० साठसे शोधन किया तो ३१ । ११ । २४ रात्रिमान हुआ, इसको आधा किया तो १५ । ३५ । ४२ रात्र्यर्द्ध हुआ ।

चतुर्थभाष-इष्टसाधन ।

सूर्योदयसे इष्ट ११ । ३० । १८ । में रात्र्यर्द्ध १५ । ३५ । ४२ युक्त किया तो २७ । ६ । ० इतना चतुर्थ भावका इष्ट हुआ ।

चतुर्थभावसाधन ।

स्पष्टसूर्य १०।१६।५३।३९ की राशि १० अंश १६ प्रमाण भावपत्रका कोष्ठक ५६।४५।२४ में चतुर्थभावका इष्ट २७।६।० मिलाया ८३।५१।२४ हुए, घटी ६० साठसे अधिक है ६० साठका भाग दिया शेष २३।५१।२४ बचे, यह इष्टयुक्त कोष्ठक हुआ, इससे न्यून कोष्ठक भावपत्रमें २३।४२।२० तीन राशि २७ अंशमें मिलता है, इसलिये राशि ३ अंश १७ लिये इसके नीचे कला विकलाके स्थानमें सूर्यकी कला ५३ विकला ३९ युक्त की तो ३।२७।५३।३९ हुए, फिर इष्टयुक्त कोष्ठक २३।५१।२४। और अल्प कोष्ठक २३।४२।२० का अंतर किया ०।१।४ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक २३।४२।२० और उसके आगेका ऐष्य कोष्ठक २३।५२।१८ का अंतर ०।१।५८ का भाग दिया, परन्तु भाज्य भाजक दोनों कलादिक हैं अतएव दोनोंको प्रथम सर्वांगित किये भाज्य ५४४ भाजक ५९८ हुआ, भाज्य ५४४ में भाजक ५९८ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष ५४४ को ६० साठगुणे किये ३२५४० हुए । इनमें भाजक ५९८ का भाग दिया, लब्ध ५४ कला आयी, शेष ३४८ बचे इनको ६० साठगुणे किये तो २०८८० हुए, इनमें भाजक ५९८ का भाग दिया, लब्ध ३४ विकला आयी ऐसे अंशादिक ०।५४।३४ फल तीन आये इनको प्रथम आये हुए राश्यादिक ३।२७।५३।३९ में युक्त किये तो ३।२८।४८।१३ हुए इस प्रकार चतुर्थ भाव स्पष्ट हुआ ।

भावसाधनका-उदाहरण ।

लग्नस्पष्ट १।१२।२६।३५ को चतुर्थ भाव ३।२८।४८।१३ मेंसे शोधा तो २।१६।२१।३८ हुए, शेष बचे इसकी राशिके २ अंक्रमें ६ छःका भाग दिया लब्ध ० राशि शेष २ को ३० तीस गुणे किये ६० हुए । इनमें नीचेके १६ अंश मिलाये तो ७६ हुए । इनमें ६ छःका भाग दिया लब्ध १२ अंश आये, शेष ४ बचे । इनको ६० साठगुणे किये तो २४० हुए फिर कलाके अंक २१ युक्त किये तो २६१ हुए, फिर ६ का भाग दिया लब्ध ४३ कला आयी, शेष ३ बचे, उनको ६० साठगुणे किये तो १८० हुए । इनमें विकलाके अंक ३८ मिलाये २१८ हुए फिर ६ का छका भाग दिया लब्ध ३६ विकला आयी । शेष २ बचे, इनको फिर ६० साठगुणे किये तो १२० हुए



फिर ६ छःका भाग दिया लब्ध २० प्रतिविकला आयी । ऐसे छःका भाग देके ०।१२।४३।३६।२० फल पांच लाये तो षष्ठांश हुआ, इसको लग्न १।१२। २६।३५ में युक्त किये तो १।२५।१०।११।२० द्वितीय भावकी आरंभ संधि हुई । इसमें षष्ठांश ०।१२।४३।३६।२०। युक्त किया तो २।७।५३।४७।४० द्वितीय भाव हुआ । द्वितीय भावमें फिर षष्ठांश ०।१२।४३।३६।२० मिलाया तो २।२०।३७।२४।० तृतीय भावकी आरम्भ और द्वितीय भावकी विराम संधि हुई । इसमें फिर षष्ठांश युक्त किया तो ३।३।२१।०।२० तृतीय भाव हुआ । इसमें फिर षष्ठांश ०।१२।४३।३६।२० युक्त किया ३।१६।४।३६।४० तृतीय भावकी विराम और चतुर्थ भावकी आरम्भ संधि हुई, ऐसे लग्नमें षष्ठांश पांचवार युक्त किया, फिर षष्ठांश ०।१२।४३।३६।२०को एक राशि १।०।० । ०।० मेंसे शोधा ०।१७।१६।२३।४० शेष बचे इनको चतुर्थ भावमें पांचवार युक्त किया तो लग्नादिक संधिसहित ६ छः भाव हुए, इन छः भावोंमेंसे ६ छः छः राशि घटायी तो शेषके ६ भाव हुए ।

ससंधर्याद्वादशभावाः ।

१	सं.	२	सं.	३	सं.	४	सं.	५	सं.	६	सं.
१	१	२	२	३	३	३	४	५	५	६	६
१२	२५	७	२०	३	१६	२८	१६	३	२०	७	२५
२६	१०	५३	३७	२१	४	४८	४	२१	३७	५३	१०
३५	११	४७	२४	०	१६	१३	१६	०	२४	४७	११
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०
७	सं.	८	सं.	९	सं.	१०	सं.	११	सं.	१२	सं.
७	७	८	८	९	९	९	१०	११	११	०	०
१२	२५	७	२०	३	१६	२८	१६	३	२०	७	२५
२६	१०	५३	३७	२१	४	४८	४	२१	३७	५३	१०
३५	११	४७	२४	०	१६	१३	१६	०	२४	४७	११

वर्षाङ्गचक्रम्.

चलितचक्रम्.

भावमें जो जो राशि आवे वे चलितमें



लिखना फिर ग्रह लिखना । वहां सूर्य वर्षकुंडली-में १० दशम भावमें स्थित है । दशम भावकी विरामसंधिसे १०।१६।४ से सूर्य अधिक है इसलिये यह ११ ग्यारहवें भावका फल देगा । एवं

शुक्र ११ वें भावमें स्थित है, ११ ग्यारहमें भावकी विरामसंधि ११।२० से शुक्र ११।२५ अधिक है, अतएव शुक्र १२ वें भावका फल देगा, ऐसे सर्व-ग्रहोंको जानने ।

विंशोपकानयन-उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ और दशम भावकी विराम संधि १०।१६।४।३६ का अंतर किया तो ०।०।५९।३ हुआ, इसको बीस गुणा किया तो १६।२१।० हुए । इनमें सूर्य दशम भावकी विरामसंधि और ग्यारहवें भावके बीचमें है, इसलिये दशमभावकी विरामसंधि १०।१६।४।३६ और ग्यारहवां भाव ११।३।२१।० के अंतर १७।१६।२४ का भाग दिया--परंतु दोनों भाज्य भाजक अंशादिक हैं इसलिये इनको प्रथम सर्गित किये, भाज्य ५८८६० भाजक ६२१८४ हुए । भाज्य ५८८६० में भाजक ६२१८४ का भाग दिया लब्ध ० शून्य विश्वा आये, शेष ५८८६० को ६० साठगुणे किये तो ३५३१६० हुए, भाजक भावसंध्यंतर ६२१८४ का भाग दिया तो लब्ध ५७ प्रति-विश्वा आये। यह सूर्यके विंशोपका हुए, इसी प्रकार सब ग्रहोंके विंशोपका जानना।

विंशोपकाः ।									
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	मु.
०	१८	९	१७	९	७	१६	२	२	३
५७	१०	५४	५७	४६	७	४९	१९	१९	३९

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृततर्षदीपकाख्यताजिकग्रन्थे . तदात्मजश्रीनिवासविर चितायां सोदा-  
हरणभाषान्याख्यायां ग्रहभावसाधनाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

वक्राच्छन्नचन्द्रार्कज्ञसितारेज्यर्किमन्देज्या मेषाद्यधिपाः ॥ १ ॥  
वक्र ( मंगल ), अच्छ ( शुक्र ), ज्ञ ( बुध ), चंद्र, अर्क ( सूर्य ) ज्ञ ( बुध ),  
सित ( शुक्र ), आर ( मंगल ), इज्य ( गुरु ), आर्कि ( शनि ), मंद ( शनि ),  
इज्य ( गुरु ), मेषादिक राशियोंके क्रमसे स्वामी जानना ॥ १ ॥

मेषादिराशियोंके स्वामी.													
मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशी.	
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११		
मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	स्वामी	

मेषगोनक्रकन्याकर्कान्त्यतुला दिवाकराद्युच्चर्क्षा दशमतृतीयाष्टा-  
विंशपञ्चदशपञ्चमसप्तविंशविंशाः क्रमेण परमोच्चभागाः ॥ २ ॥

मेष, गो ( वृषभ ), नक्र ( मकर ), कन्या, कर्क, अन्त्य ( मीन ) और तुला ये सूर्यादिक ग्रहोंकी क्रमसे उच्चराशि होती हैं, अर्थात् मेषका सूर्य, वृषभका चन्द्र, मकरका मंगल, कन्याका बुध, कर्कका गुरु, मीनका शुक्र, तुलाका शनि उच्चका जानना और दशम, तृतीय, अष्टाविंश २८, पञ्चदश १५, पंचम ५, सप्तविंश २७, विंश २० क्रमसे परमउच्चके अंश जानना अर्थात् ऊपर कही हुई राशि और अंशोंके सूर्यादि ग्रह हों तो परम उच्चके जानना, जैसे-सूर्य मेषके दश अंशका है ये परम उच्चका हुआ । इसी प्रकार चंद्र वृषभके तीन अंशका परम उच्चका, मंगल मकरके २८ अट्ठाईस अंशका, बुध कन्याके १५ पंद्रह अंशका, गुरु कर्कके पांच ५ अंशका, शुक्र मीनके २७ सत्ताईस अंशका और शनि तुलाके २० बीस अंशका परम उच्चका जानना ॥ २ ॥

स्वोच्चसप्तमर्क्षास्तथांशाः क्रमशो नीचर्क्षाः परमनीचभागाः ॥ ३ ॥

सूर्यादिग्रहोंकी अपनी उच्चराशिसे सातवीं राशि और अंश क्रमसे नीच राशि और परमनीचके अंश होते हैं ॥ ३ ॥

उच्चनीचराशिचक्रम् ।							
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	ः
०	१	९	५	३	११	६	
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	उच्चराशयः
६	७	३	११	९	५	०	
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	नीचराशयः

मेषेऽङ्गाङ्गाष्टपंचेष्वो गुरुशुक्रज्ञारार्कजानां हद्दांशाः ॥ ४ ॥

मेषराशिमें अंग ६, अंग ६, अष्ट ८, पंच ५, इषु ५, इन अंशोंके क्रमसे गुरु, शुक्र, बुध, मंगल और शनि हद्दाके स्वामी जानना । अर्थात् मेषराशिके ६ छः अंशपर्यंत हद्दाका स्वामी गुरु होता है, उसके आगेके ६ छः अंशका स्वामी शुक्र, उसके आगेके ८ अंशका स्वामी बुध, उसके आगेके ५ पांच अंशका स्वामी मङ्गल, उसके आगेके ५ अंशका स्वामी शनि, इसी प्रकार बारहों राशियोंके हद्दांशके स्वामी समझना चाहिये ॥ ४ ॥

वृषेऽष्टांगेभशराग्रयः सितज्ञेज्यमन्दाराणाम् ॥ ६ ॥

वृषभराशिमें अष्ट ८ अंग ६ इभ ८ शर ५ अग्नि ३ इन अंशोंमें यथाक्रम  
शुक्र, बुध, गुरु, शनि, मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ ५ ॥

द्वंद्वेऽङ्गांशराद्रचङ्गांशा ज्ञशुकेज्यारमन्दानाम् ॥ ६ ॥

मिथुन राशिमें अंग ६ अंग ६ शर ५ अग्नि ७ अंग ६ इन अंशोंके क्रमसे  
बुध, शुक्र, गुरु, मंगल, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ६ ॥

कर्केऽद्रचंगानगाध्यंशा भौमाच्छज्ञेज्यार्कीणाम् ॥ ७ ॥

कर्कराशिमें अग्नि ७ अंग ६ अंग ६ नग ७ अग्नि ४ इन अंशोंके क्रमसे  
भौम, शुक्र, बुध, गुरु, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ७ ॥

सिंहेऽगेष्वद्रचंगानगांशा इज्यसितार्किज्ञाराणाम् ॥ ८ ॥

सिंहराशिमें अंग ६ इषु ५ अग्नि ७ अंग ६ अंग ६ इन अंशोंके क्रमसे  
गुरु, शुक्र, शनि, बुध, मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ ८ ॥

कन्यार्या नगाशाध्यंगक्ष्यंशा ज्ञाच्छेज्यारार्कीणाम् ॥ ९ ॥

कन्याराशिमें नग ७ आशा १० अग्नि ४ अंग ६ अक्षि २ इन अंशोंके  
क्रमसे बुध, शुक्र, गुरु, मंगल, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ९ ॥

तुलेऽगाष्टनगाद्रचक्ष्यंशा मन्दज्ञेज्यसिताराणाम् ॥ १० ॥

तुलाराशिमें अंग ६ अष्ट ८ नग ७ अग्नि ७ अक्षि २ इन अंशोंके क्रमसे  
शनि, बुध, गुरु, शुक्र, मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ १० ॥

कीटे सप्ताध्यष्टशरांगानांशा वक्राच्छज्ञेज्यार्कीणाम् ॥ ११ ॥

वृश्चिक राशिमें सप्त ७ अग्नि ४ अष्ट ८ शर ५ अंग ६ इन अंशोंमें  
यथाक्रम मंगल, शुक्र, बुध, गुरु, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ११ ॥

चापेऽकेष्वग्निशराध्यंशा इज्यसितज्ञारमन्दानाम् ॥ १२ ॥

धनराशिमें अर्क १२ इषु ५ अग्नि ४ शर ५ अग्नि ४ इन अंशोंके क्रमसे  
गुरु, शुक्र, बुध, मंगल, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १२ ॥

नक्रे नगनगाध्यष्टवेदांशा ज्ञेज्याच्छार्किवक्राणाम् ॥ १३ ॥

मकरराशिमें नग ७ नग ७ अग्नि ४ अष्ट ८ वेद ४ इन अंशोंके क्रमसे बुध,  
गुरु, शुक्र, शनि, मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ १३ ॥

घटे नगांगाद्रिपञ्चेषवः शुक्रज्ञेज्यारमन्दानाम् ॥ १४ ॥

कुम्भराशिमें नग ७ अंग ६ अद्रि ७ पंच ५ इपु ५ इन अंशोंमें वक्रक्रम  
शुक्र, बुध, गुरु, मंगल, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १४ ॥

शेषेऽर्काब्ध्यग्न्यंकाक्ष्यंशाः सितेज्यज्ञारार्कीणाम् ॥ १५ ॥

मीनराशिमें अर्क १२ अब्धि ४ अग्नि ३ अंक ९ अक्षि २ इन अंशोंके  
क्रमसे शुक्र, गुरु, बुध, मंगल, शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १५ ॥

**हद्दाचक्रम् ।**

अं.	१	नि.	३.	४.	५.	६.	७.	८.	९.	१०.	मी.	
६ ग	८ अ	६ व	७ मं	६ बु	७ वु	६ म	७ मं	१२ गु	७ वु	७ वु	१२ अ	अंशस्वामी.
६ अ	६ व	६ वु	६ अ	५ अ	१० अ	६ व	५ अ	५ अ	७ वु	६ व	४ ग	अंशस्वामी.
८ व	८ वु	५ वु	६ वु	७ अ	४ ग	५ वु	६ वु	८ वु	४ अ	४ वु	३ व	अंशस्वामी.
५ मं	५ अ	७ मं	७ ग	६ वु	७ मं	७ वु	५ वु	५ मं	८ अ	५ मं	९ मं	अंशस्वामी.
२५	२७	२४	२६	२४	२८	२८	२४	२६	२६	२५	२८	अंशस्वामी.
५ अ	५ मं	६ अ	४ अ	६ मं	२ अ	२ मं	६ अ	४ अ	४ मं	५ अ	२ अ	अंशस्वामी.
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंशस्वामी.

ग्रहे प्रथमद्रेष्काणगे तद्वाशौ वह्नियोगे मध्यद्रेष्काणगे तद्वाशौ सैको-  
ऽन्त्यद्रेष्काणगे रसयोगे तद्वाशौ मुनिभक्ते शेषेऽर्काद्याःपतयः ॥ १६ ॥

ग्रह प्रथमद्रेष्काणमें हो तो उसकी राशिके अंकमें ३ तीन मिलाना और  
मध्यद्रेष्काणमें हो तो उसकी राशिमें (१) एक युक्त करना, एवं अन्त्य (तीसरे)  
द्रेष्काणमें हो तो उसकी राशिमें ६ छः युक्त करना, अनन्तर उस राशिमें ७  
सातका भाग देना, शेष १ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्र, ३ तीन बचे तो  
मंगल, ४ बचे तो बुध, ५ बचे तो गुरु, ६ बचे तो शुक्र, ७ बचे तो शनि  
द्रेष्काणका स्वामी होता है ॥ १६ ॥

**द्रेष्काणचक्रम् ।**

अं.	१	२	३.	४.	५.	६.	७.	८.	९.	१०.	मी.	
मं.	वु.	गु.	अ.	श.	र.	वं.	मं.	वु.	गु.	श.	१०	अंश.
२.	वं.	मं.	वु.	गु.	श.	र.	वं.	मं.	वु.	गु.	२०	अंश.
३.	वं.	२.	वं.	वं.	वु.	गु.	श.	र.	वं.	मं.	३०	अंश.

१ द्रेष्काण १० अंशका होता है, १० अंशपर्यन्त प्रथम द्रेष्काण, १० से २० अंशपर्यन्त मध्य  
द्रेष्काण, २० से ३० अंशपर्यन्त अन्त्य द्रेष्काण होता है ।

मेषसिंहचापेषु मेषाद्या वृषकन्यानक्रेषु मृगाद्या बुधस्तुला-  
कुम्भेषु तुलाद्याः कर्कालिनीनेषु कर्काद्या नवांशाः ॥ १७ ॥

मेष १ सिंह ५ धन ९ राशिमें मेषराशिको आदि ले, वृष २ कन्या ६  
मकर १० राशिमें मकरराशिको आदि ले, मिथुन ३ तुला ७ कुम्भ ११ राशिमें  
तुला राशिको आदि ले और कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ राशिमें कर्कराशिको  
आदि ले नवांशविभागकी संख्यापर्यंत गिननेसे नवांश होता है, अर्थात्-जितनी  
संख्या नवांशविभागमें हो उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आवे उसका  
स्वामी नवांशका स्वामी होता है ॥ १७ ॥

नवांशविभागचक्रम् ।									
१	२	३	४	५	६	७	८	९	नवांश वि.
३	६	१०	१५	१९	२०	२३	२६	३०	अंश.
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	कला.

नवांशसारिणीचक्रम् ।													
मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश.	कला.
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११		
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	५	२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६	४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०	०
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३	२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६	४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०	०
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३	२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६	४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०	०

गृहोच्चहृद्द्रेष्काणनवांशाः पञ्चवर्गाः ॥ १८ ॥

१ एक राशिके ९ नव भागको नवांश कहते हैं, एक नवांशविभाग ३ तीन अंश २० कलाका  
होता है ।

गृह ( राशिकें ) स्वामी, उच्च, हृदा, द्रेष्काण और नवांश पंचवर्ग होते हैं। अर्थात् प्रथम ग्रहोंकी राशिके स्वामी, फिर उच्च, तदनन्तर हृदा, एवं द्रेष्काण नवांश लिखनेसे पंचवर्ग होता है ॥ १८ ॥

यो ग्रहो यस्य ज्यायत्रिकोणान्यतमगः स सुहृत् ॥ १९ ॥

जो ग्रह जिस ग्रहसे तीसरे ३ ग्यारहमें, ११ नवमें ९ पांचमें ५ स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें स्थित हो वह उस ग्रहके मित्र होता है ॥ १९ ॥

केंद्रगस्तथा शत्रुः ॥ २० ॥ शेषस्थानस्थः समः ॥ २१ ॥

और जो ग्रह जिस ग्रहसे केंद्र ( १ । ४ । ७ । १० ) स्थानोंमेंसे कोई भी स्थानमें स्थित हो वह उस ग्रहके शत्रु होता है ॥ २० ॥ शेष २ । ६ । ८ । १२ दूसरे छठे आठवें बारहवें स्थानोंमेंसे कोई भी स्थानमें जिस ग्रहसे जो ग्रह स्थित हो वह उसके सम होता है ॥ २१ ॥

स्वगृहे त्रिंशद्धवाः सुहृद्भे सार्द्धद्वाविंशतिः ।

समभे तिथयः शत्रुभे सार्द्धसप्तबलम् ॥ २२ ॥

इस प्रकार मैत्रीचक्र बनाके उस (मैत्रीचक्र) के अनुसार पंचवर्गमें आये हुए ग्रहोंके नीचे मित्र सम शत्रु लिखना, तदनन्तर बल लिखना, उसकी रीति कहते हैं। ग्रह स्वगृही ( स्वराशिका ) हो तो ३० तीस अंश, मित्र राशिका हो तो २२ । ३० साढेबाईस अंश, समराशिमें १५ पन्द्रह अंश, शत्रुराशिमें हो तो ७ । ३० साढेसात अंश बल जानना ॥ २२ ॥

यथा भवे षड्भालपं तथा नीचखेटांतरे द्रुतागाङ्गभागस्त्वोच्चबलम् २३

ग्रह और उसके नीचका अन्तर जैसे हो सके वैसे छः राशिसे अल्प करना ( ग्रहमें नीचको हीन करनेसे ६ छः राशिसे अल्प शेष बचे तो ग्रहमेंसे नीचको हीन करना और अधिक बचते हों तो नीचमेंसे ग्रहको हीन करना ) शेष यदि अन्तरके अंश करके राशिको ३० गुणी करके अंश मिलाके उसमें ९ नक्षका भाग देना, लब्ध उच्चबल होता है ॥ २३ ॥

स्वहृदायां तिथ्यंशा मित्रहृदायां सपादैकादश समहृदायां  
सार्द्धसप्त शत्रुहृदायां पादोनवेदांशा बलम् ॥ २४ ॥

ग्रह स्वराशिकी हद्दामें हो तो १५ पंदरह अंश, मित्र ग्रहकी हद्दामें ११। १५ सवाग्यारह अंश, समग्रहकी हद्दामें ७।३० साढ़ेसात अंश, शत्रु ग्रहकी हद्दामें हो तो ३।४५ ( पौनेचार अंश ) बल जानना ॥ २४ ॥

स्वद्रेष्काणे दश मित्रद्रेष्काणे सार्द्धनगाः समद्रेष्काणे ।

पञ्च शत्रुद्रेष्काणे सार्द्धयमा अंशाबलम् ॥ २५ ॥

ग्रह स्वराशिके द्रेष्काणमें हो तो १० अंश, मित्रग्रहके द्रेष्काणमें हो तो ७।३० साढ़ेसात अंश, समग्रहके द्रेष्काणमें ५ पांच अंश, शत्रुग्रहके द्रेष्काणमें हो तो २।३० अढ़ाई अंश बल जानना ॥ २५ ॥

स्वनवांशे पञ्च मित्रांशे पादोनवेदाः समांशे सार्द्धयमा

रिप्वंशे सपादैको बलम् ॥ २६ ॥

ग्रह—स्वराशिके नवांशमें हो तो ५ पांच अंश, मित्रनवांशमें ३।४५ पौने- चार अंश, समनवांशमें हो तो २।३० ढाई अंश, शत्रुनवांशमें हो तो १।१५ ( सवा ) अंश बल जानना ॥ २६ ॥

पंचवर्गबलकोष्टकम् ।					
	स्व.	मित्र	सम	शत्रु	
स्व.	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०	ग्रह
हद्दा.	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५	हद्दा
द्रेष्का.	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०	द्रेष्काण
नवां.	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५	नवांश

पंचवर्गबलैक्ये वेदोद्धृते लब्धं विशोपकात्मकं बलम् ॥ २७ ॥

पंचवर्गके बलके ऐक्ये (योग) में ४ चारका भाग देना जो लब्ध आवे उसे विश्वात्मक बल जानना चाहिये ॥ २७ ॥

षडल्पोऽल्पबली रव्यधिकः पूर्णबली ॥ २८ ॥



आया हुआ विश्वात्मक बल ६ छः से अल्प हो तो अल्पबली और बारहसे अधिक हो तो पूर्णबली, ६ छः से अधिक बारहसे न्यून हो तो मध्यबली होता है ॥ २८ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ कुम्भराशिका है, इसका स्वामी शनि है, सो गृहका स्वामी हुआ । एवं सूर्यका उच्च ०।१० हद्दा-सूर्य कुम्भ राशिके ३ हद्दा-शमें ( प्रथम ७ अंश फिर ६ अंश मिलानेसे १३ होते हैं इससे अधिक अंश सूर्य है, इसलिये दो अंश गये और तीसरे ७ अंशमें हुआ ) है इसका स्वामी गुरु है वह सूर्यकी हद्दाका स्वामी हुआ ।

द्रेष्काण--सूर्य मध्यद्रेष्काणमें है इसकी राशियें १० में १ एक युक्त किया ११ हुए, सातका भाग दिया ४ शेष बचे, तो सूर्यको आदि ले क्रमसे ४ बुध द्रेष्काणका स्वामी हुआ । नवांश--सूर्य कुम्भराशिके छठे नवांशविभागमें है (१६।४० से अधिक है अतएव तुलराशिसे नवांश विभागसंख्या ६ पर्यंत गिननेसे भीन राशि हुई, इसका स्वामी गुरु है सो सूर्यके नवांशका स्वामी हुआ, ऐसे ही सर्वग्रहके पंचवर्ग जानना ।

बृहत्पंचवर्गचक्रम्.							
स.	बं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
शु	शु	शु	शु	मं	गु	गु	स्वगृह.
मि	मि	मि	मि	श	मि	व	
०	१	९	५	३	११	६	उच्च.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	
शु	शु	बु	शु	बु	मं	गु	हद्दा.
श	व	व	श	मि	व	व	
बु	शु	शु	श	र	मं	बु	द्रेष्काण
व	व	व	श	श	व	श	
गु	शु	शु	बं	गु	श	बु	नवांश.
श	व	श	व	स्व	श	श	

मैत्रीचक्रम्.							
र.	पं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
म	म	म	म	म	म	म	मित्र.
म	म	म	म	म	म	म	
र	मं	मं	र	मं	मं	मं	सम.
मं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	
र	मं	मं	र	मं	मं	मं	शत्रु.
मं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	

मैत्रीसाधन--उदाहरण ।

सूर्यसे ११ स्थानमें शनि स्थित है वह सूर्यके मित्र हुआ, एवं सूर्यसे १ स्थानमें चन्द्र, मंगल १० स्थानमें गुरु स्थित है, ये सूर्यके शत्रु हुए और २ स्थानमें बुध,

शुक्र स्थित है, वे सम हुए । इसी प्रकार सर्वग्रहोंके मित्र शत्रु समझना ।

बलसाधन-उदाहरण ।

सूर्यके गृहका स्वामी शनि सूर्यका मित्र है, इसलिये गृहमें सूर्यके नीचे २२। ३० अंश बल लिखा. उच्चबल सूर्य १०। १६। ५३। ३९ नीचे ६। १०। ०। ० सूर्यमेंसे नीचे हीन किया ४। ६। ५३। ३९ शेष बचे इसके अंश किये १२६। ५३। ३९ हुए, नवका भाग दिया लब्ध १४ आये शेष शून्य बचा, इसको साठसे गुणा किया, इसमें ५३ कला मिलायी ५३ हुए और नवका भाग दिया, लब्ध ५ आये, सो सूर्यका उच्चबल १४, ५ हुआ। हद्दा-हद्दाका स्वामी गुरु सूर्यका शत्रु है, अतः हद्दाका शत्रु बल ३। ४५ सूर्यके नीचे हद्दामें लिखा- द्रेष्काण, सूर्यके द्रेष्काणका स्वामी बुध सूर्यके सम है इसलिये द्रेष्काणमें समका बल ५। ० प्राप्त हुआ।

नवांश सूर्यके नवांशका स्वामी गुरु सूर्यके शत्रु है, अतएव नवांशमें सूर्यके नीचे शत्रु नवांश बल १। १५ लिखा, यह पंचवर्ग बल हुआ। इन पांचोंका योग किया ४६। ३५ पंचवर्ग बलैक्य हुआ, इसमें ४ चारका भाग दिया, लब्ध ११। ३८। ४५ आये, यह सूर्यका विशोपकात्मक बल हुआ। ग्रहबल ६ से अधिक और १२ बारहसे न्यून है, अतः मध्यमबल जानना। एवं शेष चन्द्रादि सर्वग्रहोंका किया जाता है ॥

पंचवर्गबलचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	शु.	शु.
२२	२२	२२	२२	७	२२	१५	गृह.
३०	३०	३०	३०	३०	३०	०	
१४	९	१८	१	५	१९	१४	उच्च.
५	४२	५६	२९	७	४७	२७	
३	७	७	३	११	७	७	हद्दा.
४५	३०	३०	४५	१५	३०	३०	
५	५	५	२	२	५	२	द्रेष्का.
०	०	०	३०	३०	०	३०	
१	२	१	२	५	१	१	नवां.
१५	३०	१५	३०	०	१५	१५	
४६	४७	५५	३२	३१	५६	४०	योग.
३५	१२	११	३४	२२	२	४३	

विंशोपकात्मकबलम् ।						
र.	चं.	मं.	बु.	शु.	शु.	श.
११	११	१३	८	७	१४	१०
३८	४८	४७	११	५०	०	१०
४५	०	४५	०	३०	३०	३०
म.	म.	पु.	म.	पु.	पु.	म.

चन्द्रार्करेज्याः परस्परं मित्राणि शेषाश्च ॥ २९ ॥

अब अन्य आचार्यके मतकी स्थिरमैत्री लिखते हैं—चन्द्र, सूर्य, मङ्गल, गुरु ये परस्पर मित्र जानना और शेष रहे बुध, शुक, शनि, ये परस्पर मित्र जानना ॥ २९ ॥

इतरथा रिपवः ॥ ३० ॥

ऊपर कहे हुए मित्रग्रहसे जो शेष रहे वे शत्रु होते हैं ॥ ३० ॥

स्थिरमैत्रीचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	शु.	शु.	श.	
चं. मं.	र. मं.	र. चं.	शु.	र. चं.	बु.	शु.	मित्र.
गु.	गु.	गु.	श.	मं.	श.	बु.	
बु. शु.	बु. शु.	बु. शु.	र. चं.	बु. शु.	र. मं.	र. चं.	
श.	श.	श.	मं. गु.	श.	चं. गु.	मं. गु.	

स्वस्वाधिकारबलाद्ध मित्रक्षे बलं तदर्थं शत्रुमे शेषं प्राग्वदित्येके ३ ॥

इस स्थिरमैत्रीके मित्रशत्रुके अनुसार पञ्चवर्गबल लानेकी रीति कहते हैं—  
गृह ३० हद्दा १५ द्रेष्काण १० नवांश ५ के कहे हुए अपने अपने राशिके बलको स्वराशिगत ग्रहमें यथावस्थित ( गृहमें ३० हद्दामें १५ द्रेष्काणमें १० नवांशमें ५ ) ही जानना और अपने अपने स्वका आधा आधा बल मित्रराशिगत ग्रहमें और मित्रराशिगत ग्रहका आधा आधा बल शत्रुराशिगत ग्रहमें जानना, अर्थात् स्वमें पूरा, मित्रमें स्वका आधा, शत्रुमें मित्रका आधा लिखना, जैसे—गृहमें स्वराशिका ३० अंश बल है, उसका आधा १५, मित्र

राशिगतका बल और उसका आधा ७ । ३० शत्रुराशिगतका बल हुआ है शेष रीति प्रथम कहे समान करना । ऐसा अनेक आचार्योंका मत है ॥ ३१ ॥

बलचक्रम्.				
	ग्रह	हृदा	द्रेष्का	नवां.
स्व	३०	१५	१०	५
मित्र	१५	७	५	२
		३०	०	३०
शत्रु	७	३	२	१
	३०	४५	३०	१५

उदाहरण ।

गृहमें-सूर्यकी राशिका स्वामी शनि स्थिर मैत्रीमें सूर्यका शत्रु है इसकारण सूर्यके नीचे गृहमें स्वगृहके बल ३० के आधेका आधा लिखा ७।३० उच्चबल पूर्वानीत लिखा १४। ५. हृदामें-सूर्यकी हृदाका स्वामी गुरु स्थिर मैत्रीमें सूर्यके मित्र है, अतएव हृदाके

स्वराशिके बल १५ का आधा ७ । ३० लिखा । एवं सूर्यके द्रेष्काणका स्वामी

स्थिरमैत्रीमित्रशत्रुशेन पञ्चवर्गबलचक्रम्.									
सु.	चिं.	मं.	बु.	शु.	शु.	श.			
७	७	७	७	१५	७	७			ग्रह.
३०	३०	३०	३०	०	३०	३०			
१४	९	१८	१	५	१९	१४			उच्च.
५	४२	५६	२९	७	४७	२७			
७	३	३	७	३	३	३			हृदा.
३०	४५	४५	३०	४५	४५	४५			
२	२	२	५	५	२	५			द्रेष्का.
३०	३०	३०	०	०	३०	०			
२	१	२	१	५	२	२			नवां.
३०	१५	३०	१५	०	३०	३०			
३४	२४	३५	२२	३३	३६	३३			योग.
५	४२	११	४४	५२	२	१२			
८	६	८	५	८	९	८			विशोप.
३१	१०	४७	४१	२८	०	१८			कात्मक.
१५	३०	४५	०	०	३०	०			बलम्.
	म.	म.	म.	म.	म.	म.			बल.

बुध स्थिरमैत्रीमें सूर्यके शत्रु हैं इसलिये द्रेष्काणके स्वराशिके बल १० का आधेका आधा २ । ३० द्रेष्काणमें सूर्यके नीचे लिखा । नवांश--सूर्यके नवांशका स्वामी गुरु सूर्यके मित्र है, अतएव नवांशबल ५।० का आधा २ । ३० नवांशमें सूर्यके नीचे लिखा । इन पांचोंका योग किया ३४ । ५ आया यहां ४ चारका भाग दिया, लब्ध ८ । ३१ । १५ विशोपकात्मक बल हुआ, यह ६ छहसे अधिक है, इसवास्ते मध्यमबल हुआ । ऐसे ही शेष ग्रहोंका बल जानना ।

१ बलका योग करना उसको चारका भाग देना आदि रीति ।

भादयोऽर्काशांता द्वादश वर्गाः ॥ ३२ ॥

स्वगृहको आदिले द्वादशांशपर्यंत ( स्वगृह १ होरा २ द्रेष्काण ३ चतुर्थांश ४ पंचमांश ५ षष्ठांश ६ सप्तमांश ७ अष्टमांश ८ नवमांश ९ दशमांश १० एकादशांश ११ द्वादशांश १२ ) द्वादशवर्ग होता है ॥ ३२ ॥

भाद्यधिपाः प्राग्वत् ॥ ३३ ॥

राशियोंके स्वामी प्रथम कहे समान जानना ॥ ३३ ॥

विषमर्क्षे सूर्यशशिनोः समर्क्षे व्यत्ययेन होरा ॥ ३४ ॥

विषमराशिमें प्रथम सूर्य, दूसरे चन्द्रकी होरा होती है और समराशिमें विपरीत अर्थात् प्रथम चन्द्र द्वितीय सूर्यकी होरा होती है ॥ ३४ ॥

स्वेषु नवर्क्षेणा द्रेष्काणपाः ॥ ३५ ॥

प्रथम द्रेष्काणमें अपनी राशिका स्वामी, दूसरे ( मध्य ) द्रेष्काणमें अपनी राशिसे पांचमी राशिका स्वामी, तृतीय ( तीसरे ) द्रेष्काणमें अपनी राशिसे नवमी राशिका स्वामी, द्रेष्काणका स्वामी जानना ॥ ३५ ॥

केचित्प्राग्वत् ॥ ३६ ॥

कोई आचार्य जो पंचवर्गमें प्रथम द्रेष्काण कहा है वही करना ऐसा कहते हैं ॥ ३६ ॥

स्वर्क्षजकेन्द्रेशा वेदांशपाः ॥ ३७ ॥

अपनी राशिसे प्रथम चतुर्थांशमें अपनी राशिका स्वामी, दूसरेमें ४ चौथी राशिका स्वामी, तीसरेमें सातवीं राशिका स्वामी चौथेमें १० दशमी राशिका स्वामी चतुर्थांशका स्वामी होता है ॥ ३७ ॥

ओजर्क्षे भौमार्कीज्यज्ञसिताः समर्क्षे प्रतिलोमतः शरांशपाः ॥ ३८ ॥

विषम ( एक ) राशिमें प्रथम पंचमांशमें भौम दूसरेमें शनि तीसरेमें

१ पंद्रह १५ अंशकी एक १ होरा होती है ( ० अंशसे १५ अंशतक प्रथम होरा १ अंशसे ३० अंशपर्यंत दूसरी होरा हो ) ।

२ दशअंशका १ द्रेष्काण होता है ।

३ एकराशिके ४ चार भागको कहते हैं, एक चतुर्थांश विभाग ७ अंश ३० कलाका होता है ।

४ एकराशिके ९ पांचमें भागको कहते हैं— एक पंचमांश ६ छः अंशका होता है ।

चतुर्थांशविभाग ० ।				
१	२	३	४	
७	१५	२२	३०	अंश.
३०	०	३०	०	कला.

गुरु, चौथेमें बुध, पांचवेमें शुक्र, समराशिमें विपरीत ( १ शुक्र २ बुध, ३ गुरु, ४ शनि, ५ मंगल ) पंचांशके स्वामी होते हैं ॥ ३८ ॥

विषमक्षें मेषाद्याः समभे तुलाद्याः षष्ठांशाः ॥ ३९ ॥

विषमराशिमें मेषराशिको आदि ले, समराशिमें तुलाराशिको आदि ले गिननेसे षष्ठांशके स्वामी होते हैं ॥ ३९ ॥

ओजभे स्वभाद्या युग्मक्षें तत्सप्तमक्षाद्याः सप्तमांशाः ॥ ४० ॥

विषमराशिमें अपनी राशिको आदि ले, समराशिमें अपनी राशिसे जो सातवीं राशि हो उसको आदि ले सप्तयांश विभागकी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आवे उसके स्वामी सप्तमांशका स्वामी होता है ( ग्रह जितनी संख्याके सप्तमांशविभागमें ही उतनी संख्यापर्यन्त विषमराशिमें अपनी राशिसे, सममें सातवीं राशिसे गिननेसे सप्तमांश होता है ) ॥ ४० ॥

चरभेऽजाद्याः स्थिरभे चापाद्या उभयभे सिंहाद्या अष्टमांशाः ॥ ४१ ॥

चर ( १ । ४ । ७ । १० ) राशिमें मेषराशिको आदि ले, स्थिर ( २ । ५ । ८ । ११ ) राशिमें धनराशिको आदि ले, द्विस्वभाव ( ३ । ६ । ९ । १२ ) राशिमें सिंहराशिको आदि ले जितनी संख्याके अष्टमांशविभागमें ग्रह हो उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशि आती है उसका स्वामी अष्टमांशका स्वामी होता है ॥ ४१ ॥

१ एक राशिके ६ छठे भागको कहते हैं-एक षष्ठांश ५ पांच अंशका होता है ।

२ एक राशिके ७ हिस्सेको कहते हैं-एक सप्तमांश विभाग ४ अंश १७ कलाका होता है ।

३ एक राशिके ८ भागको कहते हैं-एक अष्टमांश विभाग ३ अंश ४५ कलाका होता है ।

अष्टमांशविभाग.							
१	२	३	४	५	६	७	८
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०
४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०
							अंश. कला।

सप्तमांशविभाग.						
१	२	३	४	५	६	७
४	८	१२	१७	२१	२५	३०
१७	३४	५१	६	२५	४२	०
८	१७	२५	३४	४२	५२	०



वर्गेशे स्वर्गेशे विंशतिर्मित्रक्षे तिथयः

समक्षे दश रिपुभे पंच बलम् ॥ ४६ ॥

द्वादशवर्गके वर्गका स्वामी स्वराशिका हो तो बीस २० अंश, मित्रराशिका हो तो १५ पन्द्रह अंश, समराशिका हो तो १० दश अंश, शत्रुराशिका हो तो ५ पांच अंश बल जानना ॥ ४६ ॥

स्व.	मि.	स.	श.
२०	१५	१०	५
०	०	०	०

द्वादशवर्गजबलैक्येऽर्कभक्ते विशोपकाः ॥ ४७ ॥

द्वादशवर्गके बलके योगमें बारह १२ का भाग देना जो लब्ध आवे वह विशोपकात्मक बल होता है ॥ ४७ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ । की राशि कुंभका स्वामी शनि सूर्यके गृहका स्वामी हुआ । होरा सूर्य विषमराशिकी दूसरी होरामें है, इसका स्वामी चन्द्र होराका स्वामी हुआ । द्रेष्काण—सूर्य मध्यद्रेष्काणमें है, इस कारण अपनी राशि ११ कुंभसे पांचवीं राशि मिथुनका स्वामी बुध द्रेष्काणका स्वामी आया । एवं सूर्य तृतीय चतुर्थांश विभागमें है, इसलिये अपनी राशि ११ से सातवीं राशि ५ सिंहका स्वामी सूर्य, सूर्यके चतुर्थांशका स्वामी हुआ । पंचमांश—विषम-राशिस्थित सूर्य तीसरे पंचमांशविभागमें है, अतएव विषमराशिमें तीसरे पंचमांशका स्वामी गुरु सूर्यके पंचमांशका स्वामी हुआ । एवं सूर्य ४ चौथे षष्ठांशमें है और विषमराशिका है, इसलिये मेषराशिसे षष्ठांशविभागकी संख्या ४ चार पर्यंत गिना तो कर्कराशि हुई, इसका स्वामी चन्द्र सूर्यके षष्ठांशका स्वामी हुआ, एवं सप्तमांशविभागमें सूर्य ४ चतुर्थ संख्याके विभागमें स्थित है यह विषम-राशिगत है इसवास्ते अपनी राशि ११ कुम्भसे ४ चार पर्यंत गिननेसे ४ चौथी वृषभ राशि हुई, इसका स्वामी शुक्र सूर्यके सप्तमांशका स्वामी हुआ, ऐसे ही अष्टमांश विभागमें सूर्य ५ पांचवे अष्टमांशमें स्थित है और स्थिर राशि ११ का है, अतः धनराशिको आदि ले ५ पांच संख्यापर्यन्त गिननेसे मेष राशि हुई, इसका स्वामी भौम सूर्यके अष्टमांशका स्वामी हुआ । नवांशके स्वामी लानेकी युक्ति प्रथम कही है, उसी रीतिके समान नवांश विभागमें ६ छठे नवांशमें सूर्य स्थित है, इस कारण तुलाराशि ( ३ । ७ । ११के नवांश ७ तुलासे गिनना )



से ६ संख्यापर्यन्त गिननेसे १२ मीनराशि हुई, इसका स्वामी गुरु सूर्यके नवांशका स्वामी हुआ, सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ को दशांश करना है, इस कारण १० दशगुणा किया १०० । १६० । ५३० । ३९० हुआ—विकला कला साठसे अधिक है इससे विकला ( ३९० ) में साठका भाग दिया लब्ध ६ कलामें मिलाके ( ५३६ ) साठका भाग दे लब्ध ८ अंशमें युक्त किये, अंश तीससे अधिक है इस लिये अंश ( १६८ ) में ३० तीसका भाग दिया लब्ध ५ पाँच राशिके अंक १०० में युक्त किया १०५ हुए राशि ( १०५ ) में १२ वारहका भाग दिया, शेष ९ । १८ । ५६ । ३० राश्यादिक बचा, यह सूर्यका दशांश हुआ । इसकी राशि १० का स्वामी शनि सूर्यके दशांशका स्वामी हुआ । एवं एकादशांशमें सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ को ११ ग्यारहसे गुणा किया ११० । १७६ । ५८३ । ४२९ हुआ । विकलाकलामें साठके अंशमें तीसकी राशिमें १२ वारहका क्रमसे भाग देनेसे शेष बचे ८ । ५ । ५० । १९ यह सूर्यका एकादशांश स्पष्ट हुआ । इसकी राशि ९ धनका स्वामी गुरु सूर्यके एकादशांशका स्वामी हुआ—एवं अपनी राशि ११ कुम्भसे सूर्य ७ सातवें द्वादशांशमें है, इसलिये ७ संख्यापर्यन्त गिननेसे ५ सिंह राशि हुई, इसका स्वामी सूर्य सूर्यके द्वादशांशका स्वामी हुआ । इस प्रकार सूर्यके द्वादशवर्ग हुए ऐसे ही शेष ग्रहोंके तथा भावोंके और सहमादिकोंके द्वादशवर्ग जानना । सूर्यके द्वादशवर्गमें स्वराशिके वर्ग २ मित्रके २ शुभग्रहके ७ वर्ग हैं इनका योग किया ११ ग्यारह हुए, इस कारण सूर्य शुभफल देगा । ऐसे ही सर्वग्रहोंके शुभाशुभफल समझना चाहिये ।

### द्वादशवर्गबलठदाहरण ।

सूर्यके—गृह ( राशि ) का स्वामी शनि सूर्यके मित्र है, इस कारण १५ । ० पन्द्रहका बल गृहमें प्राप्त हुआ । एवं होरामें सूर्यकी होराका स्वामी चन्द्रसूर्यका शत्रु है, अतः ५ । ० बल प्राप्त हुआ एवं द्रेष्काणमें द्रेष्काणपति बुधका समराशिका बल १० । ० चतुर्थांशमें चतुर्थांशपति सूर्यका स्वका २० । ० बल पंचमांशमें पंचमांशके स्वामी गुरुका शत्रुका ५ । ० बल षष्ठांशमें षष्ठांशके स्वामी चन्द्रका शत्रु राशिका बल ५ । ० सप्तमांशमें, सप्तमांशके स्वामी शुक्रका समराशिका १० । ०

बल अष्टमांशमें अष्टमांशपति भौमका शत्रुराशिका ५ । ० बल नवांशमें नवांशका स्वामी गुरुका शत्रुका ५ । ० बल--दशांशमें दशांशके स्वामी शनिका मित्र बल १५ । ० एकादशांशमें एकादशांशके स्वामी गुरुका शत्रुका बल ५।० द्वादशांशमें द्वादशांशका स्वामी सूर्य स्वराशिका है, इसलिये स्वका २० । ० बल प्राप्त हुआ, यह सूर्यके द्वादशवर्गका बल हुआ, इसका योग किया १२०।० आया इसमें १२ बारहका भाग दिया, लब्ध १० । ० सूर्यका विशेषकात्मक द्वादश वर्ग बल हुआ । ऐसे ही शेष ग्रहोंका जानना ॥

ग्रहाणांद्वादशवर्गचक्रम्.								द्वादशवर्गबलचक्रम्.							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
१०	अ	११	अ	११	अ	११	गु.	१५	१५	१५	१५	५	१५	१०	शु.
मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	गु.	०	०	०	०	०	०	०	शु.
४	वं	५	र	४	वं	५	र	५	५	५	१०	५	१०	१५	शु.
श	श	श	श	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
३	बु	११	अ	११	अ	११	गु.	१०	१५	१५	१५	२०	१०	१०	शु.
स	मि	मि	मि	मि	मि	मि	गु.	०	०	०	०	०	०	०	शु.
५	र	११	अ	२	शु	११	गु.	२०	१५	१०	१५	१५	११	१०	शु.
र	मि	स	मि	मि	मि	मि	गु.	०	०	०	०	०	०	०	शु.
९	गु	१	मं	११	अ	२	शु	५	५	१५	५	१०	१०	२०	शु.
घ	श	श	मि	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
४	वं	१	मं	२	शु	७	अ	५	५	१०	५	१०	१५	५	शु.
श	श	र	श	श	श	श	मि	०	०	०	०	०	०	०	शु.
२	शु	११	अ	२	शु	६	बु	१०	१५	५	२०	१५	५	२०	शु.
स	मि	श	श	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
१	मं	९	गु	११	अ	५	र	५	५	१५	१०	१५	५	५	शु.
अ	श	मि	स	मि	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
१२	गु	७	शु	९	गु	४	वं	५	१०	५	१०	२०	५	५	शु.
अ	स	श	श	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
१०	अ	५	र	७	शु	२	बु	१५	५	१०	२०	५	५	१०	शु.
मि	श	श	स	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
८	ग	२	बु	५	र	२	शु	५	१०	५	५	२०	५	१५	शु.
श	श	श	श	श	श	श	श	०	०	०	०	०	०	०	शु.
५	र	११	अ	२	शु	१२	गु	२०	१५	१०	१५	१५	५	१०	शु.
स्व	मि	स	मि	मि	मि	मि	मि	०	०	०	०	०	०	०	शु.
११	८	१०	११	७	३	११	शु.म.	१२०	१२०	१२०	१२५	१२५	१०५	१२५	शु.
								०	०	०	०	०	०	०	शु.
१	४	१	१	५	९	१	पाप.	१०	१०	१०	१२	१२	८	११	विशेषका- त्मक बल.
								०	०	०	५	५५	४५	१५	
शे.	शे.	शे.	शे.	शे.	शे.	शे.	फल.	म.	म.	म.	पू.	पू.	म.	म.	चक्र.

स्वमे शतं कलानां मित्रभे पंचाशत् शत्रुभे पञ्चविंशतिः ॥ ४८ ॥

स्वराशिमें १०० सौ कला, मित्रराशिमें ५० कला, शत्रुराशिमें २५ पच्चीस कला, स्थिर-मैत्रीके मित्र शत्रुवशासे द्वादशवर्ग बल जानना ॥ ४८ ॥

स्व.	मि.	श.	
१००	५०	२५	
०	०	०	कला.

तद्वैक्ये षष्टिभक्ते विशोपका इत्येके ॥ ४९ ॥

स्थिरमैत्रीके मित्रशत्रुवशासे लये हुए द्वादशवर्गके बलके ऐक्य ( योग ) में ६० साठका भाग देना, जो लब्ध आता है वह विशोपकात्मक बल होता है, ऐसा अनेक आचार्योंका मत है ॥ ४९ ॥

उदाहरण ।

द्वादशवर्गमें सूर्यकी राशिका स्वामी शनि स्थिर मैत्रीमें सूर्यका शत्रु है, इसलिये सूर्यके गृहमें नीचे २५।० कला बल लिखा, एवं होराका स्वामी चन्द्र मित्र है सूर्यके इस कारण ५० कला बल होरामें लिखा, द्रेष्काणका स्वामी बुध शत्रु है इससे शत्रुका २५ कला बल द्रेष्काणमें, चतुर्थांशमें सूर्य स्वराशिका है, अतः स्वका १०० कला बल, एवं पंचमांशमें-पंचमांशका स्वामी गुरु मित्र है, अतएव मित्रका ५० कला बल और षष्ठांशका स्वामी चन्द्र भी मित्र है, इसलिये षष्ठांशमें भी ५० कला बल लिखा और सप्तमांशका स्वामी शत्रु है अतः सप्तमांशमें शत्रुका भी २५ कला बल, अष्टमांशका स्वामी भौम मित्र है इसलिये अष्टमांशमें मित्रका ५० कला बल । नवांशका स्वामी गुरु मित्र है इससे नवांशमें मित्रका बल ५० कला और दशांशका स्वामी शनि सूर्यके शत्रु है इसवास्ते दशांशमें शत्रुका २५ कला बल लिखा और एकादशांशका स्वामी गुरु मित्र तथा द्वादशांशका स्वामी सूर्य स्वका है, इसलिये एकादशांशमें मित्रका ५० कला बल और द्वादशांशमें स्वका १०० कला बल लिखा । यह द्वादशवर्ग बल हुआ, इसका योग किया ६०० आये ६० साठका भाग दिया लब्ध १०।० विशोपकात्मक सूर्यका द्वादशवर्ग बल हुआ । ऐसे ही शेष चन्द्रादिग्रहोंका द्वादशवर्गबल जानना ॥

स्थिरमैत्रीवशात् द्वादशवर्गबलचक्रम्.								
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.		
२५	२५	२५	२५	५०	२५	२५	१	गृह.
५०	५०	५०	२५	५०	२५	२५	२	होरा.
२५	२५	२५	२५	१००	२५	२५	३	द्रेष्काण.
१००	२५	२५	२५	२५	२५	२५	४	चतुर्थांश.
५०	५०	२५	५०	२५	२५	१००	५	पंचमांश.
५०	५०	२५	५०	२५	२५	५०	६	षष्ठांश.
२५	२५	५०	१००	२५	५०	१००	७	सप्तमांश.
५०	५०	२५	२५	२५	५०	५०	८	अष्टमांश.
५०	२५	५०	२५	१००	५०	५०	९	नवमांश.
२५	५०	२५	१००	५०	५०	२५	१०	दशमांश.
५०	२५	५०	५०	१००	५०	२५	११	एकादशांश.
१००	२५	२५	२५	२५	५०	२५	१२	द्वादशांश.
६००	४२५	४००	५२५	६००	४५०	५२५		योग.
१०	७	६	८	१०	७	८		विंशोपका- त्मकवलम्.
म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	चल.

स्वभस्वोच्चक्षान्यतरस्थितौ ग्रहस्य प्रथमं हर्षपदम् ॥ ६० ॥

स्वराशि वा अपनी उच्चराशिमेंसे कोई भी राशिका जो ग्रह हो ( ग्रह स्वराशिका हो वा अपनी उच्चराशिका हो ) तो उस ग्रहका प्रथम हर्ष-पद होता है ॥ ५० ॥

गोत्रिषट्क्षवीशबाणांत्यगेषु सूर्यादिषु द्वितीयम् ॥ ६१ ॥

सूर्यको आदि ले गो ९, त्रि ३, षट् ६, कु ३, ईश ११, बाण ५, अन्त्य १२ बारहवें स्थानमें यथाक्रम ग्रह स्थित हो तो द्वितीय हर्षपद होता है,

अर्थात् सूर्य ९, चन्द्र ३, मङ्गल ६, बुध १, गुरु ११, शुक्र ५, शनि १२ में स्थानमें हो तो दूसरा हर्षपद होता है ॥ ५१ ॥

सूर्यारेज्या नराः शेषाः स्त्रियः ॥ ५२ ॥

सूर्य, मङ्गल, गुरु पुरुषग्रह, शेष ( चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ) स्त्रीग्रह जानना ॥ ५२ ॥

दिने पुमान् रात्रौ स्त्री तृतीयम् ॥ ५३ ॥

दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो पुरुषग्रह, रात्रिमें स्त्रीग्रह बलवान् जानना और तृतीय ( तीसरा ) हर्षपद होता है ॥ ५३ ॥

तुर्यभतस्त्रिषु त्रिषु वृस्त्रियौ तुर्यम् ॥ ५४ ॥

चतुर्थभावसे तीन तीन स्थानमें पुरुषग्रह और स्त्रीग्रह स्थित हो तो चतुर्थ हर्षपद होता है, अर्थात् ४ । ५ । ६ । पुरुषग्रह, ७ । ८ । ९ स्त्रीग्रह, १० । ११ । १२ पुरुषग्रह, १ । २ । ३ स्त्रीग्रह स्थित हो तो ४ हर्षपद जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

चतुर्ष्वेषु प्रत्येकं पंचविंशोपका बलम् ॥ ५५ ॥

इति बलाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

इन चार ही हर्षपदोंमें प्रत्येक ( एक एकके प्रति ) के पांच पांच विंशोपका बल जानना चाहिये ॥ ५५ ॥

हर्षपदचक्रम्.							
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
०	०	०	०	०	५	०	प्रथम.
०	०	०	०	०	०	०	द्वितीय.
५	०	५	०	५	०	०	तृतीय.
५	०	५	०	०	०	५	चतुर्थ.
१०	०	१०	०	५	५	५	योग.

उदाहरण ।

यहां शुक्र उच्चराशिका है, इसलिये प्रथम हर्षपदमें यह बलवान् हुआ । सूर्यको आदि ले कोई ग्रह द्वितीय हर्षपद स्थानोंमें नहीं है, अतः द्वितीय हर्षपद किसीका नहीं आया । दिनमें वर्षप्रवेश हुआ है इससे पुरुषग्रह ( सूर्य मंगल गुरु ) तृतीयहर्ष बलदाता हुए । एवं चतुर्थस्थानसे तीन तीनमें पुरुष स्त्री ग्रह देखनेसे ८ आठमें शनि स्त्री ग्रह और १० । ११ में सूर्य मंगल पुरुषग्रह स्थित हैं, ये चतुर्थ हर्षपदमें बली हुए ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्वद्ग्रीष्महादेवकृतवर्षप्रदीपिकाख्यताजिकग्रन्थे तदङ्गजश्रीनिवासविरचितायां

सोदाहरणभाषाव्याख्यायां बलसाधनाव्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अथ दृष्टिसाधनमाह ।

पश्योनदृश्ये द्विदिग्भशेषे तद्विनांशा अर्धास्तिथिशुद्धा-  
स्तथा त्र्यंशशेषे भोग्यांशा एव वेदाष्टशेषे च सार्द्धा  
अंशाः पञ्च वेदतः शुद्धास्तथैव तर्काभ्रशेषेऽशा द्विघ्नाः  
षष्टिशुद्धाः कलाद्या दृष्टिरन्यक्षे तदभावः ॥ १ ॥

पश्यग्रहको हीन करना, दृश्यग्रहमेंसे दो २ राशि १० दशराशि शेष बचे  
तो राशिके विना अंशोंको आधे करना और १५ पंद्रहमेंसे शोधना । ऐसे ही  
तीन ३ राशि, ९ नवराशि शेष बचे तो अंशोंको तीसमेंसे शोधना, एवं ४ राशि,  
८ आठराशि शेष बचे तो राशि विना अंशोंको ड्योढ़ा ( अंशोंको आधे करके  
उन्हीं अंशोंमें मिलाना ) करना और ४५ पैंतालीसमेंसे शोधना । इसी प्रकार  
६ छः राशि अथवा शून्यराशि शेष बचे तो राशि विना अंशोंको दोगुणे कर  
६० साठमेंसे शोधनेसे कलादिक दृष्टि होती है और इन उक्त राशियोंसे अन्य  
राशि शेष बचे तो दृष्टिका अभाव ( दृष्टि नहीं ) जानना ॥ १ ॥

दृष्टिचक्रम् ।							
२	१०	३	९	४	८	०	६
अंशा- ऽर्द्धा १५ शु.	अंशा- ऽर्द्धा १५ शु.	अंशा- ३० शु.	अंशा- ३० शु.	अंशा- डेढा ४५ शु.	अंशा- डेढा ४५ शु.	अंशा- द्विगुणा ६० शु.	अंशा- द्विगुणा ६० शु.

१ जिस ग्रहपर दृि करना हो वह दृश्य, जो देखता हो वह पश्य कहलाता है ।

उदाहरण ।

ग्रहोपरिग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

दृश्य सूर्य १० । १६ । ५३ ।  
 ३९ मैसे पश्य चन्द्र १० । ० ।  
 २२ । ५६ को हीन किया, शेष  
 ० । १६ । ३० । ४३ वचे,  
 इसके राशि विना अंशादिक १६ ।  
 ३० । ४३ को द्विगुण किये तो  
 ३३ । १ । २६ हुए, इनको ६०  
 मैसे सोवे तो २६ । ५९ कलादिक  
 सूर्यपर चन्द्रकी दृष्टि हुई । इसी  
 तरह क्रमसे सर्व ग्रहोंपर ग्रहोंकी  
 दृष्टि जानना और भावपर दृष्टि  
 करना हो तो भावदृश्य ग्रहपश्य  
 समझके दृष्टि करे तो भावोंपर  
 ग्रहोंकी दृष्टि होती है ।

र	च	मं	बु	गु	शु	ज	
०	०	०	०	०	०	०	
०	२६	४१	०	१	४	११	र.
०	५९	१६	०	२	५	३६	
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	९	१२	०	बं.
०	०	०	३६	२७	३०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
०	४५	०	०	५	८	०	मं.
०	४४	०	०	४३	४६	०	
०	०	०	०	०	०	०	
३०	०	११	०	१७	०	४	मु.
३८	०	५४	०	२२	०	१०	
०	०	०	०	०	०	०	
२७	११	१८	१८	०	०	०	गु.
५७	३७	३५	५९	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	१३	३५	०	१४	शु.
०	०	०	६	५१	०	५३	
०	०	०	०	०	०	०	
६	१०	१३	२१	३८	२२	०	श.
५९	१४	४८	४१	४	४२	०	

इति दृष्टिसाधनाव्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथ सहमाध्यायः ।

सर्वत्र सहमसाधने शुद्ध्याश्रयतः शोध्यहीने

क्षेपकयुक्ते सहमसिद्धिः ॥ १ ॥

सर्व सहमसाधनेमें शुद्ध्याश्रयमेंसे शोध्यको हीन करके क्षेपक युक्त करे तो सहम सिद्ध होता है ॥ १ ॥

शोध्यभादेरारभ्य शुद्ध्याश्रयभादितोऽर्वाक्

क्षेपाभावे सिद्धसहमभं सैकं कार्यम् ॥ २ ॥

शोध्यकी राशि अंशको आदि ले शुद्ध्याश्रयकी राशि-अंशके पहले क्षेपककी

१ जिसमेंसे हीन करना कहा हो वह शुद्ध्याश्रय और जिसको हीन करनेका कहा है वह शोध्य ।

राशि नहीं आवे तो सिद्धसहमकी राशिमें एक युक्त करना, अर्थात् शुद्ध्याश्रय और शोध्यके बीचमें क्षेपक नहीं आवे तो एक मिलाना ॥ २ ॥

क्षेपकानुक्तौ लग्नं योज्यम् ॥ ३ ॥

जिस सहमसाधनमें क्षेपक नहीं कहा हो उसमें लग्न युक्त करना ( लग्नको क्षेपक समझना ) ॥ ३ ॥

समयानुक्तौ रात्रौ शोध्यशोधकौ व्यस्तौ कार्यौ ॥ ४ ॥

जिस सहमसाधनमें समय नहीं कहा हो उस सहमके साधनमें रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो शोध्यशोधकको व्यस्त ( उलटे ) करना अर्थात् शोध्यको शुद्ध्याश्रय और शुद्ध्याश्रयको शोध्य मानके सहम करना ॥ ४ ॥

सूर्योने चन्द्रे पुण्यसहमः ॥ ५ ॥

चन्द्रमेंसे सूर्यको हीन करनेसे पुण्यसहम होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रोनाके गुरुज्ञानज्ञातिसहमानि ॥ ६ ॥

चंद्रमाको सूर्यमेंसे हीन करनेसे गुरु, ज्ञान, ज्ञाति सहम होते हैं ॥ ६ ॥

पुण्योनेज्ये यशोदेहसैन्यघातम् ॥ ७ ॥

गुरुमेंसे पुण्यसहमको हीन करनेसे यश, देह, सैन्य और घातसहम होते हैं ॥ ७ ॥

पुण्योनज्ञाने शुक्रान्विते मित्रम् ॥ ८ ॥

पुण्यसहमको ज्ञानसहममेंसे हीन करके शुक्र मिलानेसे मित्र सहम होता है ॥ ८ ॥

कुजोनपुण्ये माहात्म्यधैर्यशौर्यम् ॥ ९ ॥

पुण्यसहममेंसे कुजको हीन करनेसे माहात्म्य, धैर्य, शौर्य सहम होते हैं ॥ ९ ॥

शुक्रोनमन्दे इच्छा ॥ १० ॥

शुक्रको शनिमेंसे हीन करनेसे इच्छा सहम होता है ॥ १० ॥

लग्नशोनारे सामर्थ्य चेदंगेशो भौमस्तदा जीवाच्छोधनीयः ॥ ११ ॥

लग्नके स्वामीको भौममेंसे हीन करनेसे सामर्थ्य सहम होता है, यदि लग्नेश्वर भौम ही हो तो गुरुमेंसे लग्नेश्वरको हीन करना चाहिये ॥ ११ ॥



सदा मंद्बोनेजीवे भ्राता ॥ १२ ॥

सदा अर्थात् दिनरात्रिमें गुरुमेंसे शनिको हीन करना भ्राता सहम होता है ॥ १२ ॥

दिने चन्द्रोनेज्ये साके रात्रावकोनजीवे सेन्दौ गौरवम् ॥ १३ ॥

दिनका इष्ट हो तो गुरुमेंसे चन्द्रको हीन करना और सूर्ययुक्त करना, रात्रिका इष्ट हो तो गुरुमेंसे सूर्यको हीन करना और चन्द्र युक्त करनेसे गौरव-सहम होता है ॥ १३ ॥

भातूनार्कजे राजतातौ ॥ १४ ॥

शनिमेंसे सूर्यको हीन करने ( निकालने ) से राज और तात ( पिता ) सहम होते हैं ॥ १४ ॥

शुक्रोनेन्दौ माता कान्तिश्च ॥ १५ ॥

चन्द्रमेंसे शुक्रको निकालनेसे माता और कान्ति सहम होते हैं ॥ १५ ॥

इज्योनमन्दे जीवितोपायौ ॥ १६ ॥

शनिमेंसे गुरुको हीन करनेसे जीवित और उपाय सहम होते हैं ॥ १६ ॥

ज्ञोनारे कर्म ॥ १७ ॥

भौममेंसे बुधको घटानेसे कर्मसहम होता है ॥ १७ ॥

सदा चन्द्रोनांगे रोगः ॥ १८ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा ही लग्नमेंसे चन्द्रको हीन करनेसे रोग-सहम होता है ॥ १८ ॥

लग्नेपोनेन्दौ कामः कर्कागे तु सदा लग्नेशोनाके ॥ १९ ॥

चन्द्रमेंसे लग्नके स्वामीको हीन करनेसे कामसहम होता है और कर्क लग्न हो तो सदा ( दिन रात्रिमें ) सूर्यमेंसे लग्नेशको हीन करनेसे कामसहम होता है ॥ १९ ॥

वक्रोनेज्ये कलिक्षमे ॥ २० ॥

गुरुमेंसे मंगलको हीन करनेसे कृत्ति और क्षया सहम होते हैं ॥ २० ॥

मन्दोनेज्ये ज्ञान्विते शास्त्रम् ॥ २१ ॥

गुरुमेंसे शनिको हीन करना बुध मिलानेसे शास्त्रसहम होता है ॥ २१ ॥

सदा चन्द्रोन्नते बंधुः ॥ २२ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा ही बुधमेंसे चन्द्रको हीन करे तो बन्धु सहम होता है ॥ २२ ॥

ज्ञोनेन्दौ पराश्रयः ॥ २३ ॥

चन्द्रमेंसे बुधको हीन करनेपर पराश्रय सहम होता है ॥ २३ ॥

सदा चन्द्रोनाष्टमे मन्दान्विते मृतिः ॥ २४ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा चन्द्रको हीन करना और अष्टम भावमेंसे शनियुक्त करनेपर मृत्यु सहम होता है ॥ २४ ॥

सदा धर्मेशोनधर्मे धनेशोनधने लाभेशोनलाभे देशान्तरधनलाभाः २५

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा ही नवम भावमेंसे नवम भावके स्वामीको हीन करना, धनभावमेंसे धन भावके स्वामीको हीन करना, लाभभावमेंसे लाभभावके स्वामीको हीन करना देशान्तर १ धन २ लाभ ३ सहम होते हैं ॥ २५ ॥

सदा सूर्योनभृगौ परांगना ॥ २६ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा ही शुक्रमेंसे सूर्यको हीन करनेसे परांगना ( परस्त्री ) सहम होता है ॥ २६ ॥

मन्दोनेन्दौ दास्यम् ॥ २७ ॥

चन्द्रमेंसे शनिको हीन करना दास्य सहम होता है ॥ २७ ॥

सदा बुधोनचन्द्रे वाणिज्यम् ॥ २८ ॥

सदा ( दिनरात्रमें) चन्द्रमेंसे बुधको हीन करना वाणिज्यसहम होता है ॥ २८ ॥

दिवाकोनमन्दे सूर्यभपयोगे रात्रौ चन्द्रोन्नमन्दे चन्द्रक्षेशयोगे कार्य-  
सिद्धिः ॥ २९ ॥

दिनका इष्ट हो तो शनिमेंसे सूर्यको हीन करना और उत्तमें सूर्यकी राशिका स्वामी मिलाना, रात्रिसमयका इष्ट हो तो शनिमेंसे चन्द्रको हीन करना और उत्तमें चन्द्रकी राशिका स्वामी मिलानेपर कार्यसिद्धि सहम होता है ॥ २९ ॥

कोणोनशुक्रे विवाहभार्ये ॥ ३० ॥

शुक्रमेंसे शनिको हीन करनेपर विवाह और भार्या ( स्त्री ) सहम होते हैं ॥ ३० ॥

ज्ञानेज्य आधानम् ॥ ३१ ॥

गुरुमेंसे बुधको हीन करनेसे आधान ( गर्भ ) सहम होता है ॥ ३१ ॥

सदा चन्द्रोनमन्दे षष्ठान्विते सन्तापः ॥ ३२ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा शनिमेंसे चन्द्रको हीन करना और उनमें ६ छठा भाव मिलानेसे सन्ताप सहम होता है ॥ ३२ ॥

सदा भौमोनसिते श्रद्धा ॥ ३३ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा शुक्रमेंसे भौमको हीन करनेसे श्रद्धासहम होता है ॥ ३३ ॥

सदा पुण्योनज्ञाने श्रीतिः ॥ ३४ ॥

सदा दिनका इष्ट हो वा रात्रिका ज्ञान सहमोंमेंसे पुण्य सहमको हीन करना श्रीति सहम होता है ॥ ३४ ॥

सन्दोनारे ज्ञान्विते जाड्यम् ॥ ३५ ॥

मंगलमेंसे शनिको हीन करना और उसमें बुध युक्त करे तो जाड्य सहम होता है ॥ ३५ ॥

शश्वज्ज्ञोनारे व्यापारः ॥ ३६ ॥

सदा ( दिनरात्रिके इष्टमें ) भौममेंसे बुधको हीन करे तो व्यापार सहम होता है ॥ ३६ ॥

चन्द्रोनार्कजे जलपातः ॥ ३७ ॥

शनिमेंसे चन्द्रको हीन करे तो जलपात सहम होता है ॥ ३७ ॥

अर्कजोनभौमे शत्रुः ॥ ३८ ॥

भौममेंसे शनिको हीन करे तो शत्रु सहम होता है ॥ ३८ ॥

बुधोनपुण्ये ज्ञान्विते दारिद्र्यम् ॥ ३९ ॥

पुण्य सहममेंसे बुधको निकालने और उसमें बुध युक्त करनेपर दारिद्र्य सहम होता है ॥ ३९ ॥

शश्वच्चन्द्रोनजीवशुक्रयोः पुत्रौ ॥ ४० ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा चन्द्रको हीन करना, गुरु और शुक्रमेंसे पुत्र पुत्री सहम होते हैं अर्थात् गुरुमेंसे चन्द्रको हीन करे तो पुत्रसहम और शुक्रमेंसे चन्द्रको घटावे तो पुत्रीसहम होता है ॥ ४० ॥

दिनेऽर्कोनस्वोच्चे रात्रौ चन्द्रोनस्वोच्चे मंडलेशः ॥ ४१ ॥

दिनका इष्ट हो तो सूर्यको हीन करना अपने उच्च ( ० रा० १० अं० ) में से रात्रिसमयका इष्ट हो तो चन्द्रको हीन करना अपने उच्च ( १ रा० ३ अं० ) मेंसे मंडलेशसहम होता है ॥ ४१ ॥

मन्दोनसार्द्धत्रिभे जलपथः ॥ ४२ ॥

शानिको हीन करना साढे तीन राशि ( ३ राशि १५ अंश ) मेंसे जलपथसहम होता है ॥ ४२ ॥

मन्दोनपुण्ये बन्धनम् ॥ ४३ ॥

पुण्यसहममेंसे शानिको हीन करे तो बन्धन सहम होता है ॥ ४३ ॥

अर्कोनपुण्ये लाभान्वितेश्वः ॥ ४४ ॥

पुण्यसहममेंसे सूर्यको हीन करने और उसमें लाभ ११ वां भाव मिलाना अश्वसहम होगा ॥ ४४ ॥

सदा जीवोनेन्दौ गजः ॥ ४५ ॥

सदा ( दिनका इष्ट हो वा रात्रिका ) चन्द्रमेंसे गुरुको हीन करे तो गजसहम होता है ॥ ४५ ॥

रिपुसहमोनांत्ये पशुः ॥ ४६ ॥

१२ बारहवें भावमेंसे शत्रुसहमको हीन करे तो पशुसहम होता है ॥ ४६ ॥

शश्वत्कोणोनाङ्गरयोर्व्यसनकृषी ॥ ४७ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा शानिको लग्न और मंगलमेंसे हीन करनेसे व्यसन और कृषिसहम होता है अर्थात् लग्नमेंसे शानि हीन करनेसे व्यसन और भौममेंसे शानि हीन करनेसे कृषिसहम होता है ॥ ४७ ॥

सदा पुण्योनार्कजे मद्द्युते बन्धमोक्षः ॥ ४८ ॥

सदा ( दिनरात्रिमें ) पुण्य सहमको शानिमेंसे हीन करना और उसमें शानि युक्त करनेसे बन्ध और मोक्ष सहम होता है ॥ ४८ ॥

सदेज्योनपुण्ये सारे दुःखम् ॥ ४९ ॥

सदा ( दिनरात्रिके इष्टमें ) पुण्यसहममेंसे गुरुको हीन करने और भौम मिलानेसे दुःख सहम होता है ॥ ४९ ॥

कुजोनमंदे उष्ट्रः ॥ ५० ॥

शनिमेंसे मंगलको निकालनेसे उष्ट्रसहम होता है ॥ ५० ॥

मंडोनाके पितृव्यः ॥ ५१ ॥

सूर्यमेंसे शनिको हीन करनेसे पितृव्यसहम होता है ॥ ५१ ॥

षष्ठेशोनषष्ठे सान्त्ये आखेटः ॥ ५२ ॥

छठे भावमेंसे छठे भावके स्वामीको हीन करके बारहवां भाव मिलानेसे आखेट ( शिकार ) सहम होता है ॥ ५२ ॥

ज्ञानेन्दौ भृत्यः ॥ ५३ ॥

बुधको चन्द्रमेंसे हीन करनेसे भृत्य सहम होता है ॥ ५३ ॥

अर्कोनेज्ये बुद्धिः ॥ ५४ ॥

सूर्यको गुरुमेंसे हीन करनेसे बुद्धिसहम होता है ॥ ५४ ॥

सदा तुर्येशोनलग्ने निधिः ॥ ५५ ॥

दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा चतुर्थ भावके स्वामीको लग्नमेंसे हीन करनेसे निधि सहम होता है ॥ ५५ ॥

सदा शुक्रोनकोणे ऋणम् ॥ ५६ ॥

सदा दिनरातके इष्टमें शनीमेंसे शुक्रको हीन करनेसे ऋणसहम होता है ॥ ५६ ॥

सदा बुधोनेन्दौ सत्यम् ॥ ५७ ॥

सदा (दिनरात्रिमें) बुधको चन्द्रमेंसे हीन करनेसे सत्यसहम होता है ॥ ५७ ॥

स्वेशेन शुभेन वाऽब्देशेन वा युतं दृष्टं वा सहमं

स्वेशपाके वृद्धिमन्यथा विपरीतम् ॥ ५८ ॥

जो सहम अपने स्वामीसे अथवा शुभग्रहसे वा वर्षेश्वरसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो वह अपने स्वामीकी दशामें फलवृद्धि करता है और विपरीत हो तो विपरीत फलकी वृद्धि करता है, अर्थात् अपने स्वामीसे शुभग्रहसे वा वर्षेश्वरसे युक्तका दृष्ट नहीं हो तो वह विपरीत ( उलटा ) फलकी वृद्धि अपने स्वामीकी दशामें करता है ॥ ५८ ॥

प्रथमं जन्मकालिकं सन्नबलाबलं जानीयात् ॥ ६९ ॥

प्रथम जन्मसमयमें सहर्षोका बल निर्बल जानना ( जन्मसमयमें सब सहम करना, अनंतर जन्मकुंडलीमें देखना जो सहम अपने स्वामीसे, लघेश्वरसे और शुभग्रहसे युक्त हो वा दृष्ट हो ६। ८। १२ वां आदि दुष्टस्थानके सिवाय शुभस्थानमें स्थित हो वह बलवान् जानना और इससे विपरीत हो वह निर्बल जानना ) ॥ ५९ ॥

तत्र यानि बलीयांसि तेषामेव संभवाः ॥ ६० ॥

जन्मसमयमें जो जो सहम बलवान् हों उन्हीं सहर्षोका संभव जानना ॥ ६० ॥  
प्रतिवर्षं सम्भवतापन्नान्येव कार्याणि नेतराणि, नैष्फलयात् ॥ ६१ ॥  
प्रतिवर्ष ( हरवर्ष ) जिन जिन सहमका जन्म समयमें सम्भव आया हो वे ही सहम करना, जिनका सम्भव नहीं है वे सहम निष्फलदाता हैं इसलिये नहीं करना ॥ ६१ ॥

प्रश्ने प्रच्छेदकेष्टकार्यसहमं कार्यम् ॥ ६२ ॥

इति सहमाऽध्यायः पंचमः ॥ ९ ॥

प्रश्नसमयमें पूछनेवालेका जो अभीष्टकार्य हो वह सहम करना ॥ ६२ ॥  
उदाहरण ।

यहां दिनमें वर्षप्रवेश हुआ है इस कारण सूत्रमें कहे हुए शोध्य सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ को शुद्ध्याश्रय चन्द्र १० । ० । २२ । ५६ मेंसे घटाया तो ११ । १३ । २९ । १७ शेष बचे, इसमें क्षेपक नहीं कहा है इसलिये लग्न १ । १२।२६ । ३५ युक्त किया तो ० । २५ । ५५ । ५२ यह पुण्य सहम सिद्ध हुआ । शोध्य सूर्यकी राशि १० अंश १६ को आदि ले शुद्ध्याश्रय चन्द्रकी राशि १० अंश ० पर्यंत गिननेसे क्षेपक ( लग्न ) की राशि १ वृषभ बीचमें आ गयी है इसलिये सिद्ध सहमकी राशिमें १ एक युक्त नहीं किया, इसी प्रकार शेष सहम जानना.

अथ कतिचित्सहमाः									
पुण्य	शुरु ज्ञान	इच्छा	पुत्र	राज्य	धन	लाभ	ब्रह्म	रोग	जीवि
०	२	९	११	०	४	५	४	४	३
२५	२८	२७	१	५	१८	२७	१०	२४	३
५५	५७	१८	०	२७	४५	५०	३	३०	२४
५२	१८	४६	३४	५५	१४	४०	१२	१४	३९



अथ सहस्रसारणीकोष्टकाः															
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	संख्या
अश्व	गज	पशु	व्यस	कृषि	बंध	दुःख	उष्ट्र	पितृ	आले	मृत्यु	बुद्धि	निधि	कृष्ण	सत्य	सहस्रनाम
सू.	सु.	सुसु	श.	श.	पुष्य	गु.	मं.	श.	षष्ठे	वु.	सू.	मा	शु.	वु.	शोष्य
पुष्य	चं.	१२मा	ल.	मं.	श.	पुष्य	रु.	सू.	६मा.	चं.	गु.	ल.	श.	चं.	शुद्ध्याश्रय
पुष्य	वु.	१२मा	घ.	घ.	पुष्य	गु.	श.	सू.	६मा.	चं.	गु.	च.श.	शु.	वु.	शोष्य
सू.	चं.	सुसु	ल.	मं.	श.	पुष्य	मं.	श.	षष्ठे	वु.	सू.	ल.	श.	चं.	शुद्ध्याश्रय
११मा	ल.	ल.	ल.	ल.	श.	मं.	ल.	ल.	१२मा	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	क्षेपक

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपिकाख्यताजिकग्रन्थे .तदात्मजश्रीनिवासविरचितायां सोदा-  
हरणभाषाव्याख्यायां सहस्रसाधनाध्यायः पञ्चमः ॥ ९ ॥

अथाब्देशनिर्णयः ।

दिनेऽर्कशुक्रार्किसितेज्यचन्द्रज्ञारार्कभौमेज्यचन्द्रा रात्रौ जीवेन्दु-  
ज्ञारार्कसितार्कशुक्रमन्दारेज्यचन्द्रा मेषादित्रिराशिपाः ॥ १ ॥

अब वर्षेश्वरका निर्णय कहते हैं—दिनमें सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र, गुरु, चन्द्र,  
बुध, मंगल, शनि, मंगल, गुरु, चन्द्र, रात्रिमें गुरु, चन्द्र, बुध, मंगल, सूर्य,  
शुक्र, शनि, शुक्र, शनि, मंगल, गुरु, चन्द्र, मेषराशिको आदि ले क्रमसे  
त्रिराशिपति जानना ॥ १ ॥

अथ त्रिराशिपतिव्यञ्जकः												
मं.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
र	शु	श	शु	गु	चं	पु	मं	श	मं	वृ	चं	
गु	चं	वु	मं	सू	श	श	शु	श	लं	गु	चं	
											दिवा.	
												रात्रि.

जन्मगेशो वर्षगेशस्तत्रिराशिपो मुन्थेशो दिनेऽर्कमेशो निशीन्दु-  
मेशश्चेति पंचाधिकारिणः ॥ २ ॥

जन्मलग्नका स्वामी १, वर्षलग्नका स्वामी २, वर्षलग्नका त्रिराशिपति ३,  
मुंथाका स्वामी ४, दिनमें सूर्यकी राशिका स्वामी और रात्रिमें चन्द्रकी राशिका  
स्वामी ५ ये पांच अधिकारी जानना ॥ २ ॥

१ वर्षलग्न जिस राशिका हो उसका दिनमें वर्ष-प्रवेश हो तो दिनका, रात्रिमें रात्रिका त्रिराशिपति  
देखना ।



एषां बलाधिकोऽङ्गद्रष्टा वर्षेशः ॥ ३ ॥

इन पञ्चाधिकारियोंमें जो ग्रह अधिक बलवान् होके वर्षलग्नको देखता हो वह वर्षेश्वर होता है ॥ ३ ॥

बलसाम्ये तु दृष्ट्याधिकः ॥ ४ ॥

अनेक ग्रहका बल समान ( बरोबर ) हो तो जिसकी लग्नपर दृष्टि अधिक हो वही वर्षेश्वर होगा ॥ ४ ॥

लुभयसाम्येऽधिकाधिकारी ॥ ५ ॥

अनेक ग्रहोंका बल और लग्नपर दृष्टि दोनों समान ( बरोबर ) हों तो जिस ग्रहका अधिकार ज्यादा आया हो वह वर्षेश्वर होगा ॥ ५ ॥

त्रितयसाम्ये मुन्थेशः ॥ ६ ॥

बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा ॥ ६ ॥

पञ्चानामपि मध्ये कोऽपि नांगं पश्येत्तदा मुन्थेशवर्षलग्नेशौ

यश्चोक्ताधिकार्यतःपाती तदितरोऽपि जनुस्समये

वर्षागराशिद्रष्टा भवेत्तदैतेषां योऽधिकबलः स वर्षेशः ॥ ७ ॥

पाँचों अधिकारियोंमेंसे कोई भी वर्षलग्नको नहीं देखते हों तो मुन्थेश, वर्षलग्नेश और दोनोंसे अन्यग्रह जो वर्षमें अधिकारी होकर जन्मकुंडलीमें वर्षलग्नकी राशिको देखता हो तो इन तीनोंमेंसे जो अधिक बली हो वही वर्षेश होगा ॥ ७ ॥

त्रयाणां बलसाम्ये मुन्थेशः ॥ ८ ॥

तीनों अधिकारियोंका बल समान ( बरोबर ) हो तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा ॥ ८ ॥

उत्तरीत्या चन्द्रस्याब्दपतित्वप्राप्तौ तदित्थशालिनोऽब्दपत्वमन्यथा तद्देशस्येत्येके ॥ ९ ॥

उक्त रीतिसे चन्द्रको वर्षेशत्व प्राप्त हो तो ( चन्द्र वर्षेश होता हो तो ) चन्द्रसे जो ग्रह इत्थशाल करता हो तो वही वर्षेश होगा, और कोई ग्रह इत्थशाल नहीं करता हो तो चन्द्रकी राशिका स्वामी वर्षेश होगा, यह किन्हीं भाषायोंका मत है ॥ ९ ॥

वर्षांगेशो राजा समयेशः सेनापतिर्मुन्थेशो मन्त्री जन्मांगेशः पुरेश-  
त्रिराशिपो रससस्यधात्वधिप इत्येके ॥ १० ॥

इत्यब्देशनिर्णयाऽध्यायः ॥ ६ ॥

वर्षलघेश राजा समयपति सेनाधिप मुन्थेश मन्त्री जन्मलघेश पुराधिप  
त्रिराशिपति रस धान्य धातु इनका अधिपति होता है यह किन्हीं आचार्योंका  
मत है ॥ १० ॥

उदाहरण ।

इन पांचों अधिकारियोंमें शुक्र अधिक  
बली है और वर्षलग्नको मित्रदृष्टिसे देखता है,  
इसलिये वर्षेश्वर शुक्र पूर्ण बली हुआ.

इति श्रीज्योतिर्विद्वर-श्रीमन्महादेववृत्तवर्षदीपके तदंगज-  
श्रीनिवासविरचितायां सोदाहरणमाषाव्याख्याया-  
मब्देशनिर्णयाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

पंचाधिकारी.				
जन्मल.	रा.प.	श.	८	म.
वर्षल.	रा.प.	शु.	११	पू.
त्रि.	रा.प.	शु.	११	पू.
जुन्था.	रा.प.	शु.	११	पू.
सूर्य	रा.प.	श.	८	पू.

अथ दशाविचारः ।

सलग्नखेटानां मध्ये यो न्यूनांशो भवेत्तस्यांशादयः प्रथमं लेख्याः १  
अब दशाविचार कहते हैं:-लग्नसहित सूर्यादि सात ही ग्रहोंमें जो ग्रह न्यून  
(अल्प) अंशका हो उसके अंशादि (अंश कला विकला) प्रथम लिखना ॥ १ ॥

ततस्तदधिकांशानामंशादयः क्रमशो लेख्याः ॥ २ ॥

फिर उस ( अल्प अंश ) के ग्रहसे अधिक अधिक अंशके ग्रहोंके अंशा-  
दिक क्रमसे लिखना ( अल्प अंशके ग्रहसे अधिक अंशके ग्रहोंके अंशादिक  
लिखना, तदनंतर उससे अधिक अंशके ग्रहके अंशादिक, फिर उससे अधिकके  
अंशादिक लिखना, इस क्रमसे सबसे अधिक अंशके ग्रहके अंशपर्यंत लिखना  
चाहिये ) ॥ २ ॥

इमे हीनांशसंज्ञकाः ॥ ३ ॥

उक्त प्रकार लिखे हुए ग्रहोंके जो अंशादिक हैं उनको हीनांशसंज्ञक जानना  
चाहिये ॥ ३ ॥

द्वयोरंशादिसाम्ये बलाधिकस्य पूर्वा दशा ॥ ४ ॥

दो ग्रहोंके अंशादिक ( अंश कला विकला ) समान ( बरोबर ) हो तो उनमेंसे जो अधिक बलवान् हो उसकी प्रथम दशा जाननी चाहिये ( प्रथम उसके अंशादिक लिखना ) ॥ ४ ॥

बलसाम्येऽल्पगतिकस्य ॥ ५ ॥

दो ग्रहोंका बल समान हो तो जो अल्पगतिवाला ग्रह हो उसकी प्रथम दशा जानना ॥ ५ ॥

उदाहरण ।

यहां लग्नसहित सूर्यादि ग्रहोंमें सर्वसे न्यून अंश चन्द्रके हैं, अतएव चन्द्रके अंश० कला २२ विकला ५६ पहले लिखे । चन्द्रसे अधिक अंशका बुध है इसलिये चन्द्रके अनंतर बुधके अंशादिक १।३५।८ लिखे, एवं बुधसे अधिक भौम, भौमसे अधिक अंशादि शनिके इस क्रमसे अधिक अधिक अंशके ग्रह क्रमसे सर्वाधिकांश ग्रहपर्यंत लिखनेसे इस प्रकार हीनांश हुए ।

हीनांशाः ।							
चं.बु.	मं.श.	ल.र.	गु.शु.	गु.शु.	गु.शु.	गु.शु.	
०	१	७	९	१२	१६	१८	२५
२२	३५	३१	५४	२६	५३	५६	२
५६	८	३६	५९	३५	३९	५५	४८

पात्यकृतौ प्रथमखेटस्य यथास्थितांशाः ॥ ६ ॥

पात्यांश करनेके समय प्रथम ग्रहके ( जो सर्व ग्रहसे अल्प अंशादिकका ग्रह हीनांशमें प्रथम लिखा है उसके ) अंशादिक यथा स्थित ( जो अंशादिक हो वे ही प्रथम ) लिखना ॥ ६ ॥

ततः प्रथमं द्वितीयाद् द्वितीयं च तृतीयादित्यादि क्रमेण शोधयेत् ॥ ७ ॥ इमे पात्याः ॥ ८ ॥

तदनंतर प्रथम लिखे ग्रहके अंशादिकको दूसरे ग्रहके अंशादिकमेंसे, दूसरेके अंशादिकको तीसरेमेंसे, तीसरेके अंशादिकको चौथेमेंसे इस क्रमसे शोधते जाना ॥ ७ ॥ ये पात्यांश कहलाते हैं ॥ ८ ॥

उदाहरण ।

हीनांशमें सबसे न्यून अंशका चन्द्र प्रथम लिखा है उसके अंशादि प्रथम वे ही ० । २२ । ५६ लिखे इनको आगे जो दूसरा ग्रह बुधके अंशादिक १ । ३५ । ८ हैं उनमेंसे हीन किये तो १ । १२ । १२ शेष बचे, यह बुधके अंशादि हुए । तदनन्तर बुधके अंशादिक १ । ३५ । ८ को तीसरे भौमके अंशादिक ७ । ३१ । ३६ मेंसे घटाये तो ५ । ५६ । २८ शेष बचे, ये मंगलके हुए; फिर भौमके अंशादिकको चौथे शनिके अंशादिकमेंसे घटाये, ऐसे क्रमसे घटानेसे ये पात्यांश हुए, पात्यांशका ऐक्य सबसे अधिक अंशके ग्रहके अंशके समान आता है ।

पात्यांशाः ।									
चं.	बु.	मं.	श.	ल.	र.	गु.	बु.	यो.	
०	१	५	२	२	४	२	६	२५	
२५	१२	५६	०३	३१	२७	३	५	२	
५६	१२	०८	२३	३६	४	१६	५३	४८	

वर्षदिनानि पात्यैक्येन भजेलब्धं दिनाद्यं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

वर्षके दिनोंको ( ३६० को वा ३६५ । १५ । ३१ । ३० को ) पात्यांशके ऐक्य (योग)का भाग देना जो लब्ध आवे वह दिनादिक भव जानना ॥ ९ ॥

उदाहरण ।

वर्षदिनादि ३६० । ० । ० के पात्यांशयोग २५ । २ । ४८ का भाग दिया परन्तु भाज्य भाजक दोनों दिनादिक हैं, इस कारण इनको सर्वाणित किये भाज्य १२९६००० में भाजक पात्यांश योग ९०१६८ का भाग दिया लब्ध १४ दिन आये, शेष ३३६४८ बचे, इनको ६० साठ गुणे किये तो २०१८ ८८० हुए । इनमें ९०१६८ का भाग दिया लब्ध २२ घटी हुई, शेष ३५ २०४ बचे, इनको ६० साठ गुणे किये तो २११२२४० हुए, इनमें भाग ९०१६८ का दिया लब्ध २३ पल आये शेष ३८३७६ बचे, इनको ६० साठ गुणे किये तो २३०२५६० हुए इनमें ९०१६८ का भाग दिया लब्ध २५ विपल आया, इस प्रकार पात्यैक्यका भाग देनेसे दिनादिक १४ । २२ २३ । २५ ध्रुव आया ।

ध्रुवेण स्वस्वपात्यांशा हता दिनाद्या दशा ॥ १० ॥

दिनादिक ध्रुवसे अपने अपने पात्यांशको गुणन करनेसे दिनादिक दशा होती है ॥ १० ॥

उदाहरण ।

जैसे—दिनादिका ध्रुव १४ । २२ । २३ । २५ से चन्द्रकी पात्यांश ० । २२ । ५६ को गुणन किये तो ५ । २९ । ३७ । हुए, यह दिनादिक चन्द्रकी दशा हुई । इसी प्रकार सब ग्रहोंके पात्यांशको गुणन करके लानेपर नीचे चक्रके अनुसार दिनादिक दशा आयीं । इसका योग वर्षदिनके समान ( वरोवर ) ३६० । ० । ० आया है, इसलिये दशा शुद्ध समझना ।

दिनादिदशाःस्पष्टाः ।									
	चं.	बु.	भं.	श.	ल.	र.	गु.	शु.	
	०	०	२	१	१	२	०	२	मास
	५	१७	२५	४	६	३	२९	२७	दिन
	२९	१७	२३	२०	१८	५८	३१	३८	घटी
	३७	६५	३३	५२	५८	३६	४४	५४	पल
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	संवत्
१०	१०	११	२	३	४	६	७	१०	उत्ती- र्णांक
१६	२२	९	५	९	१५	१९	१९	१६	
५३	२३	४१	४	२५	४४	४३	१४	५३	
३९	१६	१	३४	२६	२४	०	४४	३८	

यस्य दशामानं पात्यांशैक्येन भक्तं तल्लब्धदिनाद्येन स्वस्व-  
यात्यांशा हताः पाकेशतोऽन्तर्दशा दिनाद्याः ॥ ११ ॥

जिस ग्रहमें अन्तर्दशा करना हो उसके दशामानमें ( जितने दिनकी दशा हो उतने दिनकी संख्याको दशामान कहते हैं ) पात्यांशके ऐक्यका भाग देना, जो दिनादिक ध्रुव लब्ध आवे उससे अपने अपने पात्यांशको गुणन करना । दशाके स्वामीको आदि ले ( जिसमें अन्तर्दशा करना हो उस ग्रहकी प्रथम दशा उसके आगे जो ग्रह हो उसकी दूसरी दशा इस रीतिसे क्रमसे ) दिनादिक अन्तर्दशा जाननी चाहिये ॥ ११ ॥

१ मूल स्पष्ट करनेके उदाहरणमें जो गोम्बिका युगकी रीति लिखी है उस रीतिसे ।

उदाहरण ।

यहां मंगलकी दशामें अन्तर्दशा करना है—मंगलकी दशा ८५दिन २३घटी ३३ पलकी है यह दशाका मान है, इसमें पात्यांशके ऐक्य २५।२।४८ का भाग दिया, भाज्य भाजक सर्वाणित क्रियं और भाज्य ३०७४१३ में भाजक ९०१६८ का भाग देनेसे लब्ध दिनादिक ३।२४।३३ भ्रुव हुआ, इससे प्रथम मंगलका पात्यांशगुणन किया तो २०।१५।१५ आये, यह मंगलमें मंगलकी दिनादिक अन्तर्दशा हुई । इसी प्रकार फिर क्रमसे शनि लघ्न रवि गुरु आदिकरके पात्यांश गुणे किये भौममें अन्तर्दशा हुई ।

भौममध्येऽन्तर्दशा ।									
	मं.	श.	ल.	र.	गु.	शु.	बं.	बु.	
	२०	८	८	१५	७	२०	१	४	दिन
	१५	८	३६	१०	०	४७	१८	६	घाटि
	१७	५१	५०	३०	१५	२६	११	८	पल
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	संवत्
११	११	०	०	१	१	१	२	२	उत्ती-
९	२९	८	१६	१	८	२९	०	५	घाटि-
४१	५६	५	४१	५२	५३	४०	५८	४	पल
१	१८	९	५९	२९	४४	१०	२२	३२	७

अथ मुग्धादशामाह ।

जन्मभसंख्यायां गताब्दान्योजयेत् द्वयना नवोद्धृताः शेषे सूर्येन्द्रारराह्विज्यमन्दज्ञकेतुशुक्राणामेकादिक्रमतो दशाद्याः ॥ १२ ॥

अब मुग्धा दशा कहते हैं—जन्मनक्षत्रकी संख्यामें गताब्द संख्या मिलाना और उसमें २ दो घटाकर नवका भाग देना, जो शेष बचे सो क्रमसे १ सूर्य २ चन्द्र ३ भौम ४ राहु ५ गुरु ६ शनि ७ बुध ८ केतु ९ शुक्रकी आद्य दशा जानना, अर्थात् एक बचे तो सूर्यकी, २ बचे तो चन्द्रकी, ३ तीन बचे तो भौमकी, इत्यादि क्रमसे आद्य दशा जानना ॥ १२ ॥

धृतित्रिंशदेकविंशतिचतुःपञ्चाशदष्टचत्वारिंशत्त्रय्यूनषष्ट्येकपंचा-  
शदेकविंशतिषष्टिसंख्यातानि सूर्यादीनां मुग्धादशादिनानि ॥ १३ ॥

धृति कहिये १८, त्रिंशत् ३०, एकविंशति २१, चतुःपञ्चाशत् ५४, अष्ट-  
चत्वारिंशत् ४८, त्रय्यूनषष्टि ५७, एकपंचाशत् ५१, एकविंशति २१, षष्टि  
६० संख्यादिन सूर्यादिग्रहोंके मुग्धादशाके दिन जानना अर्थात् सूर्यके १८,  
चन्द्रके ३०, मंगलके २१, राहुके ५४, गुरुके ४८, शनिके ५७, बुधके ५१,  
केतुके २१, शुक्रके ६० दिन मुग्धा दशाके दिन जानना ॥ १३ ॥

उदाहरण ।

जन्मनक्षत्र चित्राकी संख्या १४ में गताब्दसंख्या २८ युक्त किये तो ४२  
हुए, इनमेंसे २ दो हीन किये शेष ४० बचे इनमें ९ नवका भाग दिया शेष  
४ बचे एकको आदि ले क्रमसे गिननेसे ४ चौथी राहुकी ५४ दिनकी आय  
दशा हुई, अर्थात् राहुदशामें वर्षप्रवेश हुआ ॥

भगणोनजन्मेन्दुलिप्ताः स्वखाष्टशेषिता आयदशादिनहताः  
स्वाभ्रे भासा दिनादिभोग्यदशा ॥ १४ ॥

बारह १२ राशिमें से हीन किये हुए जन्मके चन्द्रकी कलाको ८०० आठ-  
सौका भाग देना, शेष बचे कलाको आय दशा ( सूत्र १२ के अनुसार  
आयी हुई दशा ) के दिनोंसे गुणन करना और ८०० आठसौका भाग देना  
लब्ध फल ४ आवे वह दिनादिक भोग्यदशा जानना ॥ १४ ॥

दशा दशाहताः षष्ट्यधिकत्रिंशत्तेनाप्ता अन्तर्दशा दिनाद्या  
मुग्धायाम् ॥ १५ ॥

इति दशाध्यायः ।

दशाके दिनको दशाके दिनसे गुणन करना और तीनसौ साठ ३६० का  
भाग देना, जो लब्ध आवे वह मुग्धादशामें दिनादिक अन्तर्दशा होती है ॥ १५ ॥

उदाहरण ।

जन्म समयका चन्द्रस्पष्ट ५ । २९ । १९ । ४९ इसको बारह राशि-

१ राशिको ३० गुणों करके अंश मिलानेसे अंश होता है और अंशको साठ गुणों करके  
मिलानेसे कला होती है ।

मेंसे हीन किया तो ६ । ० । ४० । ११ हुए इसको कला १०८४० । ११ की, फिर इसमें ८०० आठसौका भाग दिया, शेष ४४० । ११ बचे । इससे आद्य दशा राहुकी आयी । उसके दिन ५४ से गुणे किये तो २३७६९।५४ हुए इनमें ८०० आठसौका भाग दिया लब्ध २९ दिन आये । शेष ५६९ । ५४ को ६० साठ गुणे किये तो ३४२९४ हुए फिर ८०० का भाग दिया, लब्ध घटी ४२ आयी, शेष ५९४ को फिर साठ ६० गुणे किये तो ३५६४० हुए ८०० का भाग दिया, लब्ध ४४ पल आया । शेष ४४० को फिर ६० साठ गुणे किये तो २६४०० हुए, ८०० का भाग दिया, लब्ध ३३ विपल आयी । ऐसे फल चार २९ । ४२ । ४४ । ३३ आये ये दिनादेक राहुकी स्पष्ट भोग्य दशा हुई ।

अथ सुखादशाचक्रम् ।										
	रा.भो.	गु.	जा.	वृ.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.भु.
मास	०	१	१	१	०	२	०	१	०	०
दिन	२९	१८	२७	२१	२१	०	१८	०	२१	२४
घटि.	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	१७
पल.	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	१५
विपल	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	२७
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७
१०	११	१	३	५	५	७	८	९	९	१०
१६	१६	४	१	२२	१३	१३	१	१	३२	१६
५३	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	५३
३९	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	३९
०	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	०

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपकाख्यताजिकग्रन्थे तदात्मजश्रीनिवासविरचितायां सोदा-  
हरणभाषान्याख्यायां दशासाधनाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अथ मासादिः ।

गतमाससंमितराशियुक्तजन्मार्केतुल्याके मासप्रवेशः ॥ १ ॥

अब मासादिसाधन लिखते हैं:—गतमासकी संख्याके समान राशियुक्त किय



हुए जन्मसमयके सूर्यके समान (बराबर) सूर्य जिस दिन आवे उस दिन मास-प्रवेश होता है ॥ १ ॥

गतदिनसम्मितांशा मासार्के युतास्तत्सदृशेऽर्के दिनप्रवेशः ॥ २ ॥

गतदिनकी संख्याके समान ( बराबर ) अंशमासके सूर्यमें युक्त करनेसे जो सूर्य हो उसके समान सूर्य जिस दिन आवे उस दिन दिनप्रवेश होता है, अर्थात् जिस मासमें जितनी संख्याका दिन प्रवेश करना हो उसके गत दिनकी जो संख्या हो उतने ही अंश उस मासके सूर्यमें मिलाना, उसके समान सूर्य जिस दिन आवे उस दिन दिनप्रवेश होगा ॥ २ ॥

उदाहरण ।

जैसे--दूसरा मासप्रवेश करना है इसके पिछाड़ी गत मास १ एक हुआ । इस लिये जन्मके १० । १६ । ५३ । ३९ सूर्यकी राशिके अंशमें १ एक किया ११ । १६ । ५३ । ३९ यह २ द्वितीयमासप्रवेशका सूर्य हुआ ।

इस सूर्यके बराबर सूर्यके दिन दूसरा मासप्रवेश होगा । इसी प्रकार जितने गतमास हों उतनी ही राशि जन्मार्कमें मिलाते जाना और १२ ही मासके सूर्य लाना ।

दिनप्रवेश ।

दूसरे मासका ११ ग्यारहवां दिन प्रवेश करना है, ग्यारह दिनप्रवेशमें १० दश दिन गत हुए हैं, इसलिये १० दश अंश मासके ११ । १६ । ५३ । ३९ सूर्यमें मिलाये ११ । २६ । ५३ । ३९ यह दिन ११ के प्रवेशका सूर्य हुआ, इस सूर्यके समान सूर्य आवेगा उस दिन ११ ग्यारहवां दिन प्रवेश होगा ॥

मासार्कासन्नपंचयर्कयोरंतरस्य कलाः कृत्वार्कभुक्तिभक्तात्तदिना-दिपंक्तिवारादिमध्ये पञ्चयर्कादधिकेऽर्के युक्तेऽन्यथा हीने मास-प्रवेशकालः ॥ ३ ॥

मासप्रवेश सूर्य और उसके समीपकी पंक्तिका ( अवधि ) सूर्य इन दोनोंके अन्तरकी कला करना, सूर्यकी गतिका ( पंक्तिके सूर्यकी गतिका ) भाग देना, जो लब्ध आवे दिन घटी पलात्क तीन फल, उनको पंक्तिके बारादिक

( वार इष्ट घटी पल ) में पंक्ति ( अवाधि ) के सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य अधिक हो तो युक्त करना और अवाधिके सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य न्यून हो तो आये हुए दिनादि फलपंक्तिके वारादिकमेंसे हीन करनेपर सो मासप्रवेशका वारादिक समय होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण ।

द्वितीय मासप्रवेशका सूर्य ११ । १६ । ५३ । ३९ इसके समीपकी पंक्ति ( अवाधि ) का सूर्य ११ । १४ । ५९ । ३० इनका अन्तर किया १ । ५४ ९ हुए इसकी कला ११४ । ९ के अवाधिके सूर्यकी गति ५९ । २३ का भाग दिया—भाज्यभाजक कलादिक हैं, अतः इनको सर्वाणित किये भाज्यपिंड ६८४९ भाजकपिंड ३५६३ हुआ । भाज्यमें भाजकका भाग दिया लब्ध १ दिन आया—शेष ३२८६ बचे इनको ६० साठ गुणे किये १९७१६० हुए, इनमें ३५६३ का भाग दिया लब्ध ५५ घटी आयी शेष ११९५ को ६० साठगुणे किये ७१७०० हुए, इनमें फिर ३५६३ का भाग दिया लब्ध २० पल आये । ऐसे दिन, घटी, पलादिक फल १ । ५५ । २० लब्ध आये, इनको पंक्तिके सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य अधिक है इसलिये अवाधिके वार इष्टघटी पल ४ । २२ । १ में युक्त किये तो ६ । १७ । २१ हुए, यह द्वितीय मासप्रवेशका इष्टसमय हुआ—अर्थात् पूर्णिमांत चैत्रकृष्ण ३० अमावास्या शुक्रवारके दिन इष्टघटी १७ पल २१ से मास द्वितीय प्रवेश होगा । ऐसे ही दिनप्रवेशका उदाहरण समझना ।

एवं दिनप्रवेशकालः ॥ ४ ॥

मासप्रवेशकालकी जो रीति कही है उसी प्रकार दिनप्रवेशकाल लाना अर्थात् दिनप्रवेशका सूर्य और उसकी समीपकी पंक्तिका सूर्य इन दोनोंके अन्तरकी कला करना पंक्तिके सूर्यकी गतिके भाग देके दिनादिक फल ३ लाना उनको पंक्तिके वारादिकमें पंक्तिके सूर्यसे दिनप्रवेशका सूर्य अधिक हो तो मिलाना, न्यून हो तो हीन करना, तब दिनप्रवेशकाल होगा ॥ ४ ॥

उभयत्र रूप्याः स्वगा भावाद्दयश्च कार्याः ॥ ६ ॥

मासप्रवेशसमयमें और दिनप्रवेशसमयमें स्पष्टग्रह भाव, आदि शब्दसे चंलित पंचवर्गाबल द्वादश षडेशां सप्तशा आदिक करना ॥ ५ ॥

पात्यैक्येन मासदिनानि भजेच्छब्धेन स्वस्वपात्यांशा  
हता दिनाद्या मासदशाः ॥ ६ ॥

पात्यांशके ऐक्यका मासके दिन ३० में भाग देना, जो लब्ध आवे ध्रुव, उससे अपने अपने पात्यांश गुणे करे तो दिनादिक मासदशा होती है ॥ ६ ॥

मासप्रवेशार्थे सप्तयुतेऽङ्गहते एकादिशेषे भाचंभौराजीशत्रुके-  
शुनामाद्या दशा ॥ ७ ॥

मासप्रवेशनक्षत्र ( जिस नक्षत्रमें मासप्रवेश हो उसकी ) संख्यामें सात मिलाकर ९ नदका भाग देना, एकको आदि ले जो शेष बचे सो क्रमसे आ ( सूर्य ), चं ( चंद्र ), भौ ( भौम ), रा ( राहु ), जी ( गुरु ), श ( शनि ) बु ( बुध ), के ( केतु ), शु ( शुक्र ) की आद्य ( प्रथम ) दशा जानना ॥७॥

मुग्धादशार्थमादिता दिनाद्या मासदशा ॥ ८ ॥

मुग्धा दशाके १२ बारहवें भागके समान दिनादिक मासदशा जानना— अर्थात् मुग्धादशाके दिनमें १२ का भाग देनेसे जो दिनादिक आवें उन्हें मास-दशाके दिनादिक जानना चाहिये ॥ ८ ॥

उदाहरण ।

जैसे—सूर्यकी मुग्धादशाके दिन १८ हैं, इसमें १२ का भाग देनेसे लब्ध दिन १ घटी ३० आयी, यह मासदशामें सूर्यके दिन हुए । इसी प्रकार सर्वग्रहके समझना चाहिये ।

१ मासप्रवेशमें षडशा-जन्म लग्नपति १, वर्षलग्नपति २, मासलग्नपति ३, मुंथापति ४, त्रिराशिपति ५, समयपति ६ ।

२ दिनप्रवेशमें सप्तशा-जन्मपति १, वर्षपति २, मासलग्नपति ३, दिनलग्नपति ४, मुंथा-पति ५, त्रिराशिपति ६, समयपति ७ ।

३ मासमें भी प्रथम कही रीतिके अनुसार हीनांश पात्यांश करके ऐक्य करना चाहिये ।

दिनादिक मुग्धा मासदशा.								
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
१	२	३	४	५	६	७	८	९
३०	३०	४५	३०	०	४५	४५	४५	०

उदाहरण ।

जैसे—द्वितीय मासप्रवेश उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रमें हुआ है, इसकी संख्या २६ में ७ मिलाये तो ३३ हुए, ९ नवका भाग दिया शेष ६ बचे, १ एको आदि ले क्रमसे आचंभौराजी आदि दशा गिननेसे ६ छठी शनि दशामें मासप्रवेश हुआ । यह आद्य ( प्रथमदशा ) हुई । इसके आगे क्रमसे ग्रहोंकी मासदशा आती है ।

मासदशा.								
घ.	गु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.
४	४	१	५	१	२	१	४	४
४५	१५	२५	०	३०	३०	१५	३०	०

दिनप्रवेशस्पष्टलग्ननक्षत्रे सप्तद्युतेऽङ्कहते एकादिशेषे

प्रागुक्तानामाद्या दिनदशा ॥ ९ ॥

दिनप्रवेशसमयके स्पष्टलग्न और नक्षत्रकी संख्यामें ७ सात मिलाना ९ नवका भाग देना, एको आदि ले शेष बचे वह प्रथम कहे हुए नाम र, १, चं. २, मं. ३, रा. ४, गु. ५, श. ६, बु. ७, के. ८, शु. ९ की आद्य दिन दशा होती है ॥ ९ ॥

मुग्धांगभागमिता घट्यादयः ॥ १० ॥

मुग्धा दशाके दिनके ६ छठे भागके समान ( बराबर ) घट्यादिक मुग्धा दिनदशा जानना—जैसे सूर्यकी दिन १८ की दशा है इसमें ६ का भाग दिया लब्ध ३ घटी आयी, यह सूर्यकी दिनदशा हुई । ऐसे ही सर्व ग्रहोंकी जाननी चाहिये ॥ १० ॥

सुग्धा दिनदशा घट्यादि.									
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	ष.	दु.	के.	शु.	
१	५	३	९	८	९	८	३	१०	घ.
०	०	३०	०	०	२०	३०	३०	०	प.

प्रश्नांगस्य भं विना लिप्ताः कृत्वा खतिथ्युद्धृता लब्धो भादि-  
मध्येऽङ्गक्षयुता मुंथार्थे स्पष्टं लग्नम् ॥ ११ ॥

प्रश्नलग्नकी राशि विना अंशादिककी कला करना ख ( ० ) तिथि ( १५ )  
ऐसे १५० डेढ़सौका भाग देना, लब्ध राश्यादिफल ( राशि-अंश-कला-  
विकला ) चार आवे उसकी राशिके अंकमें प्रश्नलग्नकी राशि अंक मिलानेसे  
मुंथाके वास्ते स्पष्ट लग्न होती है ॥ ११ ॥

प्रश्नांगात्तुर्येशो जन्मेशो ज्ञेयः ॥ १२ ॥

प्रश्नलग्नसे चतुर्थराशिका स्वामी जन्मेश जानना-अर्थात् पंचाधिकारीमें  
जन्मलग्नपातिके स्थानमें प्रश्नलग्नसे चतुर्थराशिका स्वामी जो हो वह लिखना १२

प्रश्नपत्रतो वर्षकरणे इयान्विशेषः ॥ १३ ॥

प्रश्नपत्रपर वर्ष बनानेमें इतना ही विशेष जानना ( और सर्व रीतिमें कुछ  
न्यूनाधिक नहीं है ) ॥ १३ ॥

पाराशरकुलोत्पन्नो महादेव उदुंबरः ।

पाठकाख्याचणो रत्नललामपुटभेदने ॥ १ ॥

रेवाशंकरसंभूतिः कृतवान्वर्षदीपकम् ।

त्र्यङ्गाद्रीन्दुमिते शाके कन्यार्कप्रथमे दिने ॥ २ ॥

इति मासाद्यध्यायः ॥ ८ ॥

इति महादेवकृतवर्षप्रदीपकं समाप्तम् ॥

रतलाम शहरमें पाठक ऐसे उपनामसे प्रसिद्ध पाराशर कुलमें उत्पन्न ( पारा-  
शरगोत्र ) उदुंबरजातीय रेवाशंकरजीके पुत्र महादेव ज्योतिर्विदने शालिवाहन  
१७९३ सत्रहसौ तिरानवेके शकमें कन्यासंक्रांतिके प्रवेशके प्रथम दिनमें वर्षदी-  
पक बनाया ॥ १ ॥ २ ॥



स्थिरवलयकाणि ।

मिथुन. २

वृषभ. १

शेष. ०

अंशः	र.	वं.	मं.	बु.	शु.	भा.	रा.	र.	वं.	मं.	बु.	शु.	शु.	रा.	र.	चं.	मं.	बु.	शु.	रा.
३२०	१२॥११॥	१६॥	१६॥	४॥११॥	८॥	४॥	७॥	३२०	८॥	६॥	१०	७	१७	८॥	३२०	८॥	६॥	१४॥	८॥	११॥
६०	१२	११॥	१५॥	४॥	१०॥	४॥	७॥	६५०	८॥	६॥	११॥	८	१७	८॥	६०	८॥	६॥	१४॥	७॥	१०॥
६४०	११	१०॥	१४॥	५॥	८॥	५॥	८॥	६४०	८॥	६॥	९॥	८	१६॥	८॥	६४०	८॥	६॥	१२॥	७॥	११॥
१००	११॥	१०॥	१४॥	६॥	९	५॥	८॥	१००	८॥	६॥	१०॥	८॥	१४॥	७॥	१००	८॥	६॥	१२॥	७॥	११॥
१२०	१२॥	११॥	१५॥	५॥	९॥	४॥	८॥	१२०	८॥	७॥	१०	८॥	१४	७	१२०	७॥	७	१३	८॥	११॥
१६२०	११॥	११	१३॥	७॥	९॥	४॥	८॥	१६२०	८॥	६॥	१०॥	८	१५	७॥	१६२०	८॥	७॥	१२॥	७॥	१०॥
१६४०	११॥	११	१३	७॥	९॥	५॥	८॥	१६४०	९॥	७॥	१०॥	१०॥	१४	८॥	१६४०	८॥	७॥	१२॥	७॥	१०॥
२००	१२॥	११	१२॥	८॥	९॥	५॥	८॥	२००	९॥	७॥	११	११	१४	८॥	२००	९॥	७॥	१२॥	७॥	१०॥
२३२०	११॥	११॥	१४॥	५॥	९॥	४॥	८॥	२३२०	८॥	६॥	९	१०॥	१३॥	८॥	२३२०	८॥	९॥	१२	७॥	१०-
२५०	११॥	११॥	१५॥	५॥	९॥	४॥	८॥	२५०	७॥	६॥	९	८॥	१४	८॥	२५०	९॥	९	१२	७॥	१०॥
२६४०	१०॥	१०॥	१२॥	५॥	९	७॥	८॥	२६४०	८॥	६॥	९॥	८॥	१४	८॥	२६४०	९॥	८	१६॥	९॥	१०॥
३००	१०॥	११	१२॥	६॥	९॥	७॥	९	३००	७॥	५॥	१०॥	७॥	१४॥	८॥	३००	८॥	५॥	१३॥	९॥	१०॥
								३००	८॥	६	९	८॥	१३॥	९	३००	८॥	५॥	१४॥	९॥	१०॥

बृहत्पंचवर्गी बलयग्रहकी राशि अंशके समान कोष्टकम जो हो वह लिखना पांचसे अल्प हीनबली होता है.

कर्क. ३

सिंह. ४

कन्या. ५

रा.	श.	सु.	कु.	मं.	चं.	र.	रा.	श.	सु.	कु.	मं.	चं.	र.	रा.	श.	सु.	कु.	मं.	चं.	र.	रा.	श.	सु.	कु.	मं.	चं.	र.	रा.	श.	सु.	कु.	मं.	चं.	र.																
३२०	९॥	११॥॥	८	६॥	८	६॥	६॥	६॥	८	२१॥॥	७॥	९॥	३२०	७॥	८॥	५॥	७॥	५॥	६॥	३२०	७॥	८॥	७॥	७॥	५॥	६॥	३२०	७॥	८॥	७॥	७॥	७॥	७॥	२१॥	९॥	३२०	७॥	८॥	७॥											
६४०	११॥॥	११॥॥	७॥	१३॥॥	९	६॥	८॥	६॥	१२॥॥	८॥	६॥	९	६१०	९॥	६॥	६॥	८॥	६॥	१२॥॥	९२	१२॥॥	६॥	९	९	६॥	६१०	९॥	६॥	६॥	६॥	८॥	६॥	९	६॥	६१०	९॥	६॥	६॥	९	६॥	६१०	९॥	६॥	६॥	९					
७०	९॥	११॥	८	९॥	८	६॥	८॥	६॥	९॥	२१॥	८	६	६४०	९॥	६॥	६॥	८	६॥	९॥	२१॥	९॥	८	६	९	६॥	७०	९॥	६॥	६॥	६॥	८	६॥	९	६॥	७०	९॥	६॥	६॥	९	६॥	७०	९॥	६॥	६॥	९					
२००	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९॥	७	९	१०॥	८	६	१००	९॥	८	९	१०॥	८	९	१००	९॥	८	९	९	१०॥	९॥	२००	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
३२०	८	१२॥	६	१०॥	८	९॥	९॥	७	११॥॥	८	७	९	१२०	९॥	८	९	१०॥	८	९	१२०	९॥	८	७	९	९	१२०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
५२५०	८	१२॥	६	१२॥	८	९॥	९॥	७	११॥॥	८	७	९	५२५०	९॥	८	९	१०॥	८	९	५२५०	९॥	८	७	९	९	५२५०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
१६४०	८	१२॥	६	१२॥	८	९॥	९॥	७	११॥॥	८	७	९	१६४०	९॥	८	९	१०॥	८	९	१६४०	९॥	८	७	९	९	१६४०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
१७१०	८	१२॥	६	१२॥	८	९॥	९॥	७	१२॥	८	७	९	१७१०	९॥	८	९	१०॥	८	९	१७१०	९॥	८	७	९	९	१७१०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
२०८	९	१३॥	७	१३॥	८	९॥	९॥	७	१३॥	८	७	९	२०८	९॥	८	९	१०॥	८	९	२०८	९॥	८	७	९	९	२०८	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
२३०	९	१५	७	१४	८	९॥	९॥	७	१४	८	७	९	२३०	९॥	८	९	१०॥	८	९	२३०	९॥	८	७	९	९	२३०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
२६४०	८	१४	७	१४	८	९॥	९॥	७	१४	८	७	९	२६४०	९॥	८	९	१०॥	८	९	२६४०	९॥	८	७	९	९	२६४०	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९
३००	८	१५	६	१५	८	९॥	९॥	७	१५	८	७	९	३००	९॥	८	९	१०॥	८	९	३००	९॥	८	७	९	९	३००	९॥	८	९॥	६	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९	१०॥	८	९॥	९



पाँचसे अधिक मध्यमवली. दशसे अधिक पूर्णवली होता है-

वृश्चिक. ७										मन. ८										
र.	चं.	मं.	कु.	शु.	श.	रा.	र.	चं.	मं.	कु.	शु.	श.	रा.	र.	चं.	मं.	कु.	शु.	श.	रा.
३१२०	४॥	६॥	११	६॥	१२॥	८॥	३१२०	८॥	१७	७॥	९॥	८॥	४॥	३१२०	८॥	११	८॥	१३॥	८॥	४
६१०	४॥	७॥	११	७॥	१३॥	८॥	६१४०	७॥	१७	७॥	९	८॥	४॥	६१४०	७॥	१०॥	७॥	१३॥	८॥	४॥
६१४०	४॥	६॥	११	७॥	११	८	७१०	७॥	१६॥	८॥	८॥	४॥	४॥	१०१०	७॥	१०॥	७	७॥	७॥	४॥
१०१०	४॥	६॥	११	७॥	११	८	१०१०	७॥	१४	७॥	७॥	४॥	४॥	१२१०	७॥	११	६॥	११	७॥	४॥
१३१२०	३॥	४॥	१४	६	१४॥	८॥	१११०	८॥	१६॥	७॥	७॥	४॥	४॥	१३१२०	८॥	१०॥	७	७॥	८॥	४॥
१४१०	३॥	४॥	१४	६	१४	८॥	१३१२०	८॥	१३	७॥	७॥	४॥	४॥	१६१४०	९॥	१०॥	७	७॥	७॥	४॥
१६१२०	४॥	५॥	१४	६	१४	७॥	१६१४०	८॥	१२॥	७॥	६॥	४॥	४॥	१७१०	८	१०॥	८	६॥	६॥	४॥
२०१०	५॥	५॥	११	६॥	१२॥	७॥	१९१०	९	१३॥	८॥	६॥	४॥	४॥	२०१०	८॥	१०॥	८	६॥	७॥	४॥
२११०	५॥	६	१०॥	६॥	१०॥	६॥	२०१०	९	१४	९	११॥	६	४	२११०	७॥	९॥	७	६॥	१०॥	६॥
२३१२०	५॥	४॥	१०॥	८	१३	६॥	२३१०	७॥	१३	११	६॥	६॥	४॥	२३१२०	८	१२॥	७	७॥	१०॥	५॥
२६१४०	४॥	४॥	१०॥	७॥	१४	६॥	२६१४०	७॥	१३॥	७॥	६॥	५॥	५॥	२६१४०	८॥	१२॥	६॥	७॥	११	५॥
२८१०	४॥	४॥	१०॥	७॥	१४	६॥	२८१४०	७	१२॥	८॥	६॥	७	४	३०१०	७॥	१०॥	७	७॥	११	६
३०१०	४॥	४॥	१०॥	८	१३	७॥	३०१०	७॥	१३॥	८	७॥	७	५	३०१०	७॥	१०॥	७	७॥	११	६

स्थिरसंज्ञितः पंचवर्णविलचक्रम् ।

मकर ९०

कुंभ १००

मीन ११०

र.	वृ.	मं.	सु.	श.	रा.	र.	चं.	मं.	सु.	श.	रा.	र.	चं.	मं.	सु.	श.	रा.
३२०	६॥॥	९॥	८	५॥॥	९॥	३२०	७	६॥	२०॥	५॥	१५	३२०	९	९॥	१२॥	७॥॥	६
३३०	६॥॥	९॥॥	७॥॥	५॥॥	१५	३३०	७	६॥॥	२०	५॥	१५	३३०	९	९॥॥	१२	७॥॥	६
३४०	६॥॥	१०॥	७॥॥	६॥	१३	३४०	७	६॥॥	२०	५॥	१३	३४०	९	१०॥॥	१२	६	६
३५०	६॥॥	१०॥	७॥॥	६॥	१३	३५०	७	६॥॥	२०	५॥	१३	३५०	९	१०॥॥	१२	६	६
३६०	६॥॥	१०॥	७॥॥	६॥	१३	३६०	७	६॥॥	२०	५॥	१३	३६०	९	१०॥॥	१२	६	६
३७०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	३७०	७	६॥	२०	५॥	१२	३७०	९	१०॥॥	१२	६	६
३८०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	३८०	७	६॥	२०	५॥	१२	३८०	९	१०॥॥	१२	६	६
३९०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	३९०	७	६॥	२०	५॥	१२	३९०	९	१०॥॥	१२	६	६
४००	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४००	७	६॥	२०	५॥	१२	४००	९	१०॥॥	१२	६	६
४१०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४१०	७	६॥	२०	५॥	१२	४१०	९	१०॥॥	१२	६	६
४२०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४२०	७	६॥	२०	५॥	१२	४२०	९	१०॥॥	१२	६	६
४३०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४३०	७	६॥	२०	५॥	१२	४३०	९	१०॥॥	१२	६	६
४४०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४४०	७	६॥	२०	५॥	१२	४४०	९	१०॥॥	१२	६	६
४५०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४५०	७	६॥	२०	५॥	१२	४५०	९	१०॥॥	१२	६	६
४६०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४६०	७	६॥	२०	५॥	१२	४६०	९	१०॥॥	१२	६	६
४७०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४७०	७	६॥	२०	५॥	१२	४७०	९	१०॥॥	१२	६	६
४८०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४८०	७	६॥	२०	५॥	१२	४८०	९	१०॥॥	१२	६	६
४९०	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	४९०	७	६॥	२०	५॥	१२	४९०	९	१०॥॥	१२	६	६
५००	६॥॥	११॥	७	७॥॥	१२	५००	७	६॥	२०	५॥	१२	५००	९	१०॥॥	१२	६	६

**उच्चदलसंज्ञिका**

शा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बृह वीचके अंतरकि राशि अंशके कोटिकर्ये उच्चदल स्पष्ट जानना.

आसीद्वत्नपुरे पराशरकुलोत्पन्नो द्विजोदुम्बरः  
ख्यातःपाठकनामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः ।  
तत्सनुर्गणितागभङ्गातिलकः श्रीमोतिरामाह्वयो  
रेवाशंकर आगमेषु निपुणस्वस्मादभूद्धार्मिकः ॥ १ ॥  
तदात्मज उदारधीर्गणकमौलिचूडामणि-  
रभूद्धरणिमण्डले गुणनिधिर्महादेववित् ।  
तदंगजनुषा त्विदं विवरणं सतां प्रीतये  
सहस्रशुचिपक्षतौ कठजटोन्मितोऽगाच्छके ॥ २ ॥

श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षप्रदीपकाख्यताजिकग्रंथे तदंगजश्रीनिवासविरचिता  
सोदाहरणभाषाव्याख्या समाप्ता ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,  
"भीवेङ्कटेश्वर" स्टीम-प्रेस,  
बंबई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेस-कल्याण,  
बंबई.

